44वां 44th
राष्ट्रीय फ़िल्म National Film
समारोह Festival
1997

संपादन
सरला जगमोहन

Editor
Sarala Jag Mohan

समन्वय
जी. गणेशन
एस. टिवक्ले
हरविन्दर सिंह

Co-ordination
G. Ganeshan
S. Twickly
Harvinder Singh

सहयोग
मंजु खन्ना

Assistance
Manju Khanna

उत्पादन
जी.पी. धुसिया
वी.के. मीणा
ए.के. सिन्हा

Production
G.P. Dhusia
V.K. Meena
A.K. Sinha

फ़िल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित।
मुद्रक : तारा आर्ट प्रिंटर्स, नई दिल्ली-110 002

Designed and produced by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, for the Directorate of Film Festivals. Printed at Tara Art Printers, New Delhi-110 002

Job No. 2/4/97 PP-III | 2,500 Copies | July '97

विषय सूची

CONTENTS

	Page No.	
निर्णायक मण्डल	(vii)	**JURY MEMBERS**
दादा साहेब फाल्के पुरस्कार	1	**DADA SAHEB PHALKE AWARD**
कथाचित्र पुरस्कार	5	**AWARDS FOR FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार	6	Best Feature Film
निर्देशक को सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार	8	Indira Gandhi Award for Best First Film of a Director
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए पुरस्कार	10	Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार	12	Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम फ़िल्म	14	Best Film on Family Welfare
अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	16	Best Film on other Social Issues
सर्वोत्तम बाल फ़िल्म	18	Best Children's Film
सर्वोत्तम निर्देशक	20	Best Director
सर्वोत्तम अभिनेता	22	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	24	Best Actress
सर्वोत्तम सह-अभिनेता	26	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री	28	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल-कलाकार	30	Best Child Artiste
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	32	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	34	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम छायांकन	36	Best Cinematography
सर्वोत्तम पटकथा	38	Best Screenplay
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	40	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	42	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	44	Best Art Direction
सर्वोत्तम वेशभूषाकार	46	Best Costume Designer
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	48	Best Music Direction
सर्वोत्तम गीत	50	Best Lyrics

निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार	52	Special Jury Award
सर्वोत्तम विशेष प्रभाव	54	Best Special Effects
सर्वोत्तम नृत्य संयोजन	56	Best Choreography
सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र	58	Best Feature Film in Assamese
सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र	60	Best Feature Film in Bengali
सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र	62	Best Feature Film in Hindi
सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र	64	Best Feature Film in Kannada
सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र	66	Best Feature Film in Malayalam
सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र	68	Best Feature Film in Marathi
सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र	70	Best Feature Film in Oriya
सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र	72	Best Feature Film in Tamil
सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र	74	Best Feature Film in Telugu
सर्वोत्तम उर्दू कथाचित्र	76	Best Feature Film in Urdu
विशेष उल्लेख	78	Special Mention
पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम पुरस्कार नहीं दिया गया है	80	Award not given for the Best Feature Film on Environment/Conservation/Preservation Film
ग़ैर कथाचित्र पुरस्कार	81	**AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम ग़ैर कथाचित्र पुरस्कार	82	Best Non-Feature Film
निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैर कथाचित्र पुरस्कार	84	Best First Non-Feature Film of a Director
सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म	86	Best Biographical Film
सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म	88	Best Arts/Cultural Film
सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	90	Best Film on Social Issues
सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फ़िल्म	92	Best Educational/Motivational/Instructional Film
सर्वोत्तम खोजी फ़िल्म	94	Best Investigative Film
सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म	96	Best Animation Film
विशेष निर्णायक मण्डल पुरस्कार	98	Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म	100	Best Short Fiction Film
सर्वोत्तम परिवार कल्याण फ़िल्म	102	Best Film on Family Welfare
सर्वोत्तम छायांकन	104	Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	106	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	108	Best Editor
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	110	Awards Not Given

सिनेमा लेखन के लिए पुरस्कार	111	**AWARDS FOR WRITING ON CINEMA**
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक (1996)	112	Best Book on Cinema (1996)
सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक (1996)	114	Best Film Critic (1996)
कथासार : कथाचित्र	117	**SYNOPSES : FEATURE FILMS**
अदाज्या	118	Adajya
अग्निसाक्षी	119	Agni Sakshi
अमेरिका! अमेरिका!	120	America ! America !
दामु	121	Damu
दायरा	122	Dayraa
देशाडनम्	123	Desadanam
गुड़िया	124	Gudia
इंडियन	125	Indian
कानाकिनावु	126	Kanakkinavu
कथाल कोट्टाई	127	Kathal Kottai
कुलम्	128	Kulam
लाल दरजा	129	Lal Darja
लाठी	130	Latthi
लिटिल सोल्जर्स	131	Little Soldiers
माचिस	132	Maachis
मिनसारा कानावु	133	Minsara Kanavu
निन्ने पेल्लादाथा	134	Ninne Pelladatha
राग-बिराग	135	Rag-Birag
राव साहेब	136	Rao Saheb
साज़	137	Saaz
संघात	138	Sanghat
सरदारी बेगम	139	Sardari Begum
शून्य स्वरूप	140	Shunya Swaroopa
तमन्ना	141	Tamanna

कथासार : ग़ैर कथाचित्र	143	**SYNOPSES : NON-FEATURE FILMS**
आत्मीयम्	144	Athmeeyam
भीत	144	Bhit
(एन.एम.नं. 309) भिवांडी ट्रेजेडी	145	(N.M.No. 309) Bhiwandi Tragedy
धातुझर '96	145	Dhatujhar '96
हस्तिर कन्या	146	Hastir Kanya
नौका चरित्रमु	146	Nauka Charitramu
राबिया चालिकुनो	147	Rabia Chalikkunno
शाम्स विज़न	147	Shams Vision
साइलेन्ट स्क्रीम्स	148	Silent Screams
तत् त्वम् असि	148	Tat Tvam Asi
द लोस्ट होराइजन	149	The Lost Horizon
विडियालई नोकी	149	Vidiyalai Nokki
ये वो शहर तो नहीं	150	Yeh Woh Sahar To Nahin

निर्णायक मण्डल   Jury Members

कथाचित्र निर्णायक मण्डल

JURY FOR FEATURE FILMS

टी. सुब्बारामी रेड्डी (अध्यक्ष)
T. Subbarami Reddy

बासु चटर्जी
Basu Chatterjee

चारु हसन
Charu Hassan

मधु
Madhu

माइक पांडे
Mike Pandey

निराद मोहापात्रा
Nirad Mohapatra

विजया मुले
Vijaya Mulay

राघव मेनन
Raghav Menon

सुषमा शिरोमणि
Sushma Shiromanee

ज्वंगदाओ बोडोसा
Jwngdao Bodosa

एम.एस. साथ्यु
M.S. Sathyu

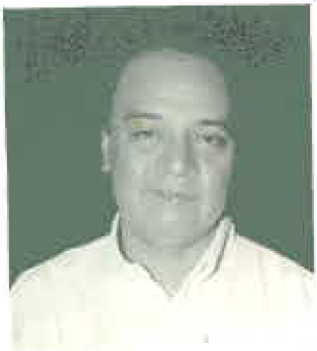

जी. वेंकटेश्वरन
G. Venkateshwaran

डी. रामा नायडू
D. Rama Naidu

स्वराज लाम्बा
Swaraj Lamba

सपन कुमार घोष
Swapan Kumar Ghosh

ग़ैर कथाचित्र निर्णायक मण्डल

JURY FOR NON-FEATURE FILMS

एन.एस. थापा (अध्यक्ष)
N.S. Thapa

स्वप्न सुंदरी
Swapna Sundari

मीरा दीवान
Meera Dewan

सुकुमारन नायर
Sukumaran Nair

पुनाथिल कुन्हाब्दुल्ला
Punathil Kunhabdulla

सर्वोत्तम सिनेमा लेखन निर्णायक मण्डल JURY FOR BEST WRITING ON CINEMA

खालिद मोहम्मद (अध्यक्ष)
Khalid Mohammed (Chairman)

प्रीतिमान सरकार
Pritiman Sarkar

वी.के. माधवन कुट्टी
V.K. Madhavan Kutty

दादा साहेब Dada Saheb
फाल्के पुरस्कार Phalke Award
1997

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

पद्मभूषण डॉ. 'शिवाजी' वी.सी. गणेशन्

डॉ. 'शिवाजी' वी.सी. गणेशन् का जन्म एक मध्यमवर्गीय परिवार में विल्लुपुरम्, तमिलनाडु में 1 अक्तूबर, 1928 के दिन हुआ। उनके पिता श्री चिन्निया पिल्लै अपनी अंग्रेज़ विरोधी प्रवृत्तियों के कारण उसी दिन गिरफ़्तार किए गए थे।

बचपन से ही डॉ. गणेशन् ने रंगमंच के प्रति गहरी रुचि दिखाई। छह साल की उम्र में एक नाट्य मंडली में शामिल होने के लिए घर छोड़ कर उन्होंने अपने स्वतंत्र मिजाज़ का परिचय दिया। रंगमंच पर पहली बार वे **रामायण** नाटक में सीता की भूमिका में सामने आए।

डॉ. गणेशन् ने मराठा योद्धा छत्रपति शिवाजी की भूमिका उत्कृष्ट ढंग से निभाई। इसी वजह से विख्यात समाज सुधारक पेरीयार ने उन्हें एक सार्वजनिक समारोह में 'शिवाजी' तख़ल्लुस दे दिया। तब से वे इसी नाम से जाने जाते हैं।

1990 में नेशनल पिक्चर्स के मि. पेरुमल ने उन्हें **पराशक्ति** फ़िल्म में मुख्य भूमिका दे दी। आगे चल कर वह बॉक्स ऑफिस में बहुत ही सफल फ़िल्म होने वाली थी। 1952 से लेकर **डॉ. गणेशन्** ने तकरीबन 300 फ़िल्मों में काम किया है। इनमें विभिन्न भाषाओं की फ़िल्में शामिल हैं। कुछ फ़िल्मों में उन्होंने गेस्ट आर्टिस्ट के रूप में भी महत्वपूर्ण काम किया है।

डॉ. गणेशन् की 12 से अधिक फ़िल्मों को पुरस्कार मिल चुके हैं। इनमें **वीर पण्डिया कट्टबोम्मन, कप्पालोटिया तमिझान, रक्त तिलकम्, भरत विलास** विशेष उल्लेख के पात्र हैं।

डॉ. गणेशन् का विभिन्न सामाजिक और पुण्यार्थ प्रवृत्तियों से भी संबंध रहा है। 1960 के भारत-पाक युद्ध के दौरान 70 कलाकारों को लेकर वे सैनिकों का मनोरंजन करने के लिए गए थे। यह भारतीय सैनिकों को भली-भांति याद है।

डॉ गणेशन् की यशस्वी कारकिर्दगी की सुयोग्य प्रशंसा की गई है। अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों के अलावा एक सार्वजनिक नागरिक के रूप में भी उन्हें सम्मानित किया गया है। 1966 में उन्हें पद्मश्री और 1984 में पद्मविभूषण का भी सम्मान दिया गया। 1986 में तमिलनाडु के अन्नामलाई विश्वविद्यालय ने उनको ऑनररी डॉक्टरेट प्रदान की।

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार **डॉ. 'शिवाजी' वी.सी. गणेशन्** की सिद्धियों के किरीट में एक और जगमगाते हीरे के समान है।

DADA SAHEB PHALKE AWARD

PADMABHUSHAN DR. 'SIVAJI' V.C. GANESAN

Dr. 'Sivaji' V.C. Ganesan was born at Villupuram, Tamil Nadu, on October 1, 1928, in a middle-class family. His father, Shri Chinniah Pillai, was arrested for anti-British activities on the day Dr. Sivaji Ganesan was born

Dr. Ganesan showed a great aptitude towards the stage from an early age. He exhibited his spirit of independence when he left his family at the age of six, and joined a drama troupe. His first appearance was as Sita in the play, **Ramayana.**

Dr. Ganesan's outstanding portrayal of the Maratha warrior, Chhatrapati Shivaji, earned him the title 'Sivaji'. This was conferred on him at a public function presided over by the famous social reformer, Periyar.

In 1950, Mr. Perumal of National Pictures gave him a lead role in the Tamil film, **Parashakti.** The film was to later become one of the greatest box-office hits.

Since 1952, **Dr. Ganesan** has acted in nearly 300 films. This includes films in different languages, as well as important roles as guest artiste.

Among his films, Dr. Ganesan has received awards for over 12 films. Films like **Veera Pandia Kattabomman, Kappalotia Tamizhan, Raktha Thilakam, Bharatha Vilas,** deserve special mention.

Dr. Ganesan has been involved in various social and charitable activities as well. The soldiers on the battle-front during the 1960 Indo-Pak war remember his visit with 70 artistes, to entertain them.

Dr. Ganesan's illustrious career has been duly recognised. Apart from the numerous national and international awards he has received, he is also an honoured public citizen. He was given the Padmashri in 1966, and the Padmabhushan in 1984. In 1986, the Annamalai University, Tamil Nadu, conferred him with the Honorary Doctorate Degree.

The Dada Saheb Phalke Award to Dr. 'Sivaji' V.C. Ganesan is yet another sparkling jewel in his crown of achievements.

कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Feature Films

सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

लाल दरजा (बंगला)

निर्माता : **चित्राणी लाहिड़ी** को स्वर्ण कमल तथा 50,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **बुद्धदेव दासगुप्त** को स्वर्ण कमल तथा 50,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम कथाचित्र का 1996 का पुरस्कार बंगला फिल्म **लाल दरजा** को समकालीन शहरी परिवेश में मानवीय संबंधों की जटिलता के अन्वेषण तथा उसके काव्यात्मक प्रस्तुतीकरण के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM

LAL DARJA (BENGALI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Producer : **CHITRANI LAHIRI**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Director : **BUDDHADEB DASGUPTA**

Citation
The Award for the Best Feature Film of 1996 is given to the Bengali Film **LAL DARJA** for its poetic presentation and exploration of complexities of human relationship in a contemporary urban milieu.

बुद्धदेव दासगुप्ता ने 1968 में बतौर अर्थशास्त्र के प्राध्यापन से अपना कार्य प्रारंभ किया। वे एक प्रतिष्ठित कवि भी हैं और उनकी कविताएं विभिन्न भारतीय तथा यूरोपीय भाषाओं में अनूदित हुई हैं।

सन् 1976 में वे रचनात्मक फ़िल्म-निर्माण से संबद्ध हुए। सन् 1978 से 1984 के मध्य उन्होंने **दूरत्व, गृहयुद्ध** तथा **अंधी गली** फ़िल्म-त्रय का योगदान किया। इन्हीं तीन फ़िल्मों ने उन्हें सिनेमा जगत में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया।

उनकी अन्य फ़िल्मों में **नीम अन्नपूर्णा, शीत ग्रीष्मेर स्मृति, फेरा, बाघ बहादुर, तहादेर कथा** तथा **चराचर** को व्यापक प्रतिष्ठा मिली। उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण वृत्तचित्रों का निर्माण भी किया है।

अपनी पहली फ़िल्मों की ही भांति **बुद्धदेव दासगुप्ता** व्यक्ति की अंतर्गुहाओं की खोज में लगे हुए हैं।

Buddhadeb Dasgupta began his career as a lecturer of Economics in 1968. Also an eminent poet, his poems have been translated into various Indian and European languages.

Buddhadeb Dasgupta moved to the sphere of creative film-making in 1976. The trilogy of films **Dooratwa, Grihayuddha** and **Andhi Gali** were made between 1978 and 1984. These three films placed him among the respected film-makers in world cinema.

His other films which have received recognition include **Neem Annapurna, Sheet, Grishmer Smriti, Phera, Bagh Bahadur, Tehader Katha, Charachar.** Alongside, **Buddhadeb Dasgupta** continued making significant documentaries as well.

Like in his previous films, **Buddhadeb Dasgupta** continues to attempt probing the inner recesses of individuals.

बप्पी लाहिड़ी से विवाह होने के पूर्व **चित्राणी लाहिड़ी** मुंबई में अर्थशास्त्र की विद्यार्थी थीं। बचपन से ही फ़िल्मों में रुचि के कारण वे स्वत: ही बंगला और अन्य क्षेत्रीय सिनेमा से संबद्ध हो गईं।

चित्राणी लाहिड़ी अपनी पहली फ़िल्म के सफल परिणामों से प्रेरित हो दूसरी फ़िल्म के निर्माण में जुटने के लिए तैयार हैं।

Chitrani Lahiri studied Economics in Mumbai, before she married music director, Bappi Lahiri. A film buff from childhood, she has been exposed to the best cinema of Bengal and elsewhere.

With the success of her first production, Chitrani Lahiri is now ready to launch her second film.

निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

राग-बिराग (असमिया)

निर्माता : **भबेन बरुआ** और **खनिन बरुआ** को स्वर्ण कमल तथा 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **विद्युत चक्रवर्ती** को स्वर्ण कमल तथा 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
निर्देशक के सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए 1996 का इंदिरा गांधी पुरस्कार असमिया फ़िल्म **राग-बिराग** को व्यक्ति-व्यवहार के जटिल मानवीय मन को गहन संवेदनशीलता से उकेरने के लिए प्रदान किया गया है।

INDIRA GANDHI AWARD FOR BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR

RAG-BIRAG (ASSAMESE)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to the Producer : **BHABEN BARUAH** and **KHANIN BARUAH**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to the Director : **BIDYUT CHAKRAVARTY**

Citation
The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director of 1966 is given to the Assamese Film **RAG-BIRAG** for the Director's sensitivity in portraying complex human psyche of individual characters in the film.

भबेन बरुआ और **खनिन बरुआ** ने असमिया संस्कृति को प्रोत्साहित करने का संयुक्त संकल्प किया है। यह उनकी विभिन्न गतिविधियों में झलकता है। उन्होंने देश की मुख्य धारा में असमिया अस्मिता को स्थापित करने की कोशिश की है।

भबेन बरुआ का जन्म 1957 में हुआ। उन्होंने नाटक, दूरदर्शन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के क्षेत्र में स्वयं को पूर्णरूपेण समर्पित कर दिया है। **खनिन बरुआ** भी इन सभी गतिविधियों के साथ-साथ सामाजिक एवं पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर कार्य कर रहे हैं।

Bhaben Barua and **Khanin Baruah** have a shared commitment towards the promotion of Assamese culture. This is reflected in various activities which try to blend the Assamese identity with that of the mainstream Indian heritage.

Born in 1957, **Bhaben Barua** has devoted himself to cultural activities in the field of drama and television programmes. **Khanin Baruah** has a similar background. He is also involved in activities related to social and environmental causes.

37 वर्षीय **विद्युत चक्रवर्ती** ने स्टेज, रेडियो, टेलीविजन और फिल्म सभी में अपनी रचनात्मकता का परिचय दिया है। वे इन सभी क्षेत्रों के प्रामाणिक हस्ताक्षर माने जाते हैं।

सन् 1986 में **विद्युत चक्रवर्ती** का टेलीनाटक **कुकुर्नेचिया मनु** (वोल्फमैन) प्रसारित हुआ जो असमिया टेली-नाटकों में मील का पत्थर साबित हुआ। अपनी पहली निर्देशित फिल्म **राग-बिराग** से वो सिनेमा-जगत में प्रतिष्ठित हो गए हैं।

Bidyut Chakravarty, 37 years, has traversed through a creative career on stage, as well as in radio, television and film. He is acclaimed for his sensitive work in each of these spheres.

Bidyut Chakravarty's teleplay, 'Kukurnechia Manuh' (Wolf-man), telecast in 1986, is considered a trend-setter in Assamese tele-drama. With his first directorial venture on film, "Rag-Birag", **Bidyut Chakravarty** has now established himself in the world of cinema.

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार

माचिस (हिन्दी)

निर्माता : **आर.वी. पंडित** को स्वर्ण कमल तथा 40,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **गुलज़ार** को स्वर्ण कमल तथा 40,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

लोकप्रियता एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र का 1996 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म **माचिस** को पंजाब की स्थिति के शक्तिशाली चित्रण के लिए दिया गया है, जिसमें पंजाब के युवाओं की त्रासदी, अन्तर्द्वंद्व और दुखों का मर्मस्पर्शी अन्वेषण किया गया है।

AWARD FOR THE BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLESOME ENTERTAINMENT

MAACHIS (HINDI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 40,000/- to the Producer : **R.V. PANDIT**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 40,000/- to the Director : **GULZAR**

Citation

The Award for the Best Popular Film providing wholesome entertainment of 1996 is given to the Hindi Film **MAACHIS** for the powerful depiction of the Punjab situation, exploring the trauma, conflict and tragedy of the youth in Punjab.

थॉमस इग्नेशिया रोड्रिग्स रोमन कैथोलिक परिवार में जन्मे किंतु स्वतंत्र भारत में वे **आर.वी. पंडित** के नाम से जाने गए। 17 वर्ष की आयु में डिग्रीरहित **आर.वी. पंडित** ने अपने कैरियर की शुरुआत एक प्रकाशन-गृह से की। इसके बाद वे सफल पत्रकार, प्रकाशक तथा रेस्टोरेंट के मालिक रहे। **आर.वी. पंडित** आज भी कई ट्रेड प्रकाशन कर रहे हैं, हालांकि **इम्प्रिन्ट** बंद कर दिया गया है जिसके वे स्वामी थे। **माचिस** के निर्माण से उन्होंने फ़िल्म क्षेत्र में पदार्पण किया है। फ़िल्म के विषयवस्तु के द्वारा उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि समानान्तर अर्थव्यवस्था का आश्रय लिए बिना भी एक सफल और व्यावसायिक फ़िल्म बनाई व वितरित की जा सकती है।

Born a Roman Catholic, **Thomas Ignatius Rodrigues** changed his name to **R.V. Pandit** because it went better with Independent India. A 17 year old degreeless **R.V. Pandit** began life with a publishing house to later become a successful journalist-cum-publisher-cum-restaurant-owner. **R.V. Pandit** still runs many trade publications, though he closed down "Imprint", of which he was the proprietor.

Maachis is **R.V. Pandit's** debut as a film producer. Apart from his commitment to the theme of the film, **R.V. Pandit** has also proved a point with **Maachis** that even a popular, commercial film can be produced, distributed and revenues collected without recourse to the parallel economy.

साठ वर्षीय **गुलज़ार** के बारे में केवल यह कहना ही काफी होगा कि वे एक अति-संवेदनशील एवं रचनात्मक व्यक्ति हैं। हिंदी सिनेमा की चुनिंदा अति-संवेदनशील फ़िल्मों के वे निर्देशक, गीतकार एवं पटकथा लेखक हैं। अपने शुरुआती दौर में वे प्रगतिशील लेखक आंदोलन से संबद्ध रहे।

1972 से अब तक उन्हें छह राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं, जिनमें दो वृत्तचित्रों के लिए हैं। **कोशिश** (1972) के लिए सर्वोत्तम पटकथा लेखक, **मौसम** (1976) के लिए सर्वोत्तम निर्देशक, **इजाज़त** (1978) और **लेकिन** (1991) के लिए सर्वोत्तम गीतकार के पुरस्कार प्राप्त हुए।

गुलज़ार कविता और लघु कहानियों की अनेक पुस्तकों के लेखक भी हैं। बच्चों की कहानियों की उनकी पुस्तक **एकता** को वर्ष 1989 में राष्ट्रीय पहचान मिली।

Sixty year old **Gulzar** can best be described as a sensitive, creative artist. He has been a lyricist, script writer and director of some of the most sensitive films in Hindi cinema. In his early years, **Gulzar** was closely associated with the progressive writers movement.

Since 1972, **Gulzar** has been a recipient of six National Awards, which include recognition for two documentaries as well. The awards were for Best Screenplay for **Koshish** (1972), Best Director for **Mausam** (1976), Best Lyricist for **Ijaazat** (1988), Best Lyricist for **Lekin** (1991).

Gulzar is also an author of many books of poetry and short stories. His book of children's stories **Ekta** received national recognition in 1989.

राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार

कनकिनाव (मलयालम)

निर्माता : **पी.वी. गंगाधरन** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **सिबी मलायिल** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र का 1996 का **नरगिस दत्त** पुरस्कार मलयालम फिल्म **कनकिनाव** को राष्ट्रीय एकता के प्रति निर्भीक एवं बुद्धिमत्तापूर्ण रवैये और धर्म के नाम पर होने वाले वर्गवाद की निरर्थकता के संवेदनशील चित्रण के लिए दिया गया है।

NARGIS DUTT AWARD FOR BEST FEATURE FILM ON NATIONAL INTEGRATION

KANAKKINAVU (MALAYALAM)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer : **P.V. GANGADHARAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director : **SIBI MALAYIL**

Citation
The **NARGIS DUTT AWARD** for the Best Feature Film on National Integration of 1996 is given to the Malayalam Film **KANAKKINAVU** for its brilliant and bold approach to National Integration and the futility of division in the name of religion.

पी.वी. गंगाधरन केरल के जाने-माने निर्माता, वितरक एवं प्रदर्शक हैं। वे विभिन्न संस्थानों के महत्वपूर्ण पदों से संबद्ध रहे हैं। वे केरल राज्य फिल्म विकास निगम के अध्यक्ष भी रहे हैं तथा वर्तमान में फ़िल्म फेडरेशन ऑफ इंडिया के उपाध्यक्ष हैं।

वे केरल के औद्योगिक तथा व्यापारिक क्षेत्र की प्रसिद्ध हस्ती हैं। वे केरल की प्रतिष्ठित प्रकाशन-कंपनी **मातृभूमि** के निदेशक भी हैं। **पी.वी. गंगाधरन** ने अब तक 15 फ़िल्मों का निर्माण किया है।

P.V. Gangadharan is a leading film producer, distributor and exhibitor of Kerala. He is also associated with various organisations in which he holds key positions. Presently, the Vice-President of the Film Federation of India, he was also the President of the Kerala Film Development Corporation.

As a business magnate, **P.V. Gangadharan** is a well-known figure in the business and industrial world of Kerala. He is also a Director with one of Kerala's premier publishing companies, **Matrubhoomi.** Over the years, **P.V. Gangadharan** has produced 15 films.

सिबी मलायिल मलयालम सिनेमा के अनुभवी व्यक्ति हैं। अपने लंबे फ़िल्मी-जीवन में उन्होंने केरल के कई राज्य-स्तरीय पुरस्कार तथा बतौर निदेशक राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त किया है।

सिबी मलायिल फ़िल्म में मर्मस्पर्शी सामाजिक और व्यापारिक समस्याओं को अपनी सहज शैली में प्रस्तुत करते हैं। **थनियावर्तनन, भारतम, क्रीड़म, आकाशदूतु, हिज हाईनेस अब्दुल्ला, सदायम कमलादलम** और पुरस्कार विजेता फ़िल्म **कनकिनाव** में उन्होंने अपनी इसी सुपरिचित शैली का प्रयोग किया है।

Sibi Malayil is a veteran of Malayalam cinema. Over the years, he has received several state awards in Kerala, as well as the National Award for Best Director.

Sibi Malayil is known for his simple style of depiction in film. He uses this simplistic style for portraying poignant social and commercial problems. The films in which he has effectively used this style are **Thaniyavarthanan, Bharatam, Kireedam, Akasadoothu, His Highness Abdulla, Sadayam Kamaladalam,** and the present award-winning film **Kanakkinavu.**

परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार

लाठी (बंगला)

निर्माता : **रोबिन अग्रवाल** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **प्रभात राय** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
परिवार कल्याण संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र का 1996 का पुरस्कार बंगला फिल्म **लाठी** को समाज में वृद्धों की दुर्दशा के चित्रण तथा पेंशनभोगी वृद्धों के एक दल द्वारा परिवार में संबंधों को पूरी तरह परिवर्तित करने के मार्मिक चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON FAMILY WELFARE

LATTHI (BENGALI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer : **ROBIN AGARWAL**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director : **PRABHAT ROY**

Citation
The Award for the best film on Family Welfare of 1996 is given to the Bengali Film **LATTHI** for focusing on the plight of the seniors in society and how a determined group of pensioners transform the power relations in a family, in a wholesome manner.

रोबिन अग्रवाल का जन्म 1946 में कलकत्ता में हुआ। उन्होंने सेंट जेवियर्स कॉलेज से स्नातक शिक्षा पूरी की। बतौर निर्माता 1973 में उनकी **बन्हीशिखा** ने राज्य-स्तर पर अनेक पुरस्कार जीते।

उन्होंने समकालीन विषयों पर अनेक फिल्में बनाईं। **सत्या, शत्रु** (1984), **पथ भोला** (1987) और **शैतान** (1992) आदि फ़िल्मों ने जुबली मनाई और सभी लोगों द्वारा सराही गईं।

Robin Agarwal was born in Calcutta in 1946, where he graduated from St. Xavier's College. His maiden venture as Producer was **"Banhisikha"** in 1973, which won many state-level awards.

Subsequently, **Robin Agarwal** has produced films which have contemporary appeal. Among them are **Satya**, **Shatru** (1984), **Path Bhola** (1987) and **Shaitaan** (1992). These films have been jubilee hits and have been recommended viewing for different groups of people.

प्रभात राय ने अपना फ़िल्मी जीवन विख्यात फ़िल्मी हस्तियों के साथ बतौर मुख्य सहायक निर्देशक के रूप में आरंभ किया। बारह वर्ष के लंबे अनुभव के बाद उन्होंने **प्रतिदान** का निर्देशन किया। उन्होंने 14 बंगला फ़िल्मों का निर्देशन किया है और सभी व्यावसायिक तौर पर सफल रही हैं। उनकी फ़िल्म **श्वेत पाथरेर थला** (1992) बेहद सफल फ़िल्म रही, जिसे कई पुरस्कार भी प्राप्त हुए। इस फ़िल्म के लिए वर्ष 1993 में उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला।

Prabhat Roy began his film career as Chief Assistant Director under well-known film-makers. After accumulating experience over twelve years, he launched his maiden directorial venture **Pratidaan.** Subsequently, he directed nearly 14 Bengali films which have also been commercial hits.

Prabhat Roy's film, **Shwet Patharer Thala** (1992) was also a great success, which received many awards. He received the National Award for this film in 1993.

मद्यनिषेध, महिला तथा बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों से हानियां, विकलांग कल्याण आदि जैसे अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार

तमन्ना (हिन्दी)

निर्माता : **पूजा भट्ट** को रजत कमल तथा 30,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **महेश भट्ट** को रजत कमल तथा 30,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
मद्यनिषेध, महिला तथा बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों से हानियां, विकलांग कल्याण आदि जैसे अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1996 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म **तमन्ना** को परित्यक्त बच्चे के प्रति एक हिजड़े के प्रेम और निस्वार्थ समर्पण को चित्रित करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON OTHER SOCIAL ISSUES SUCH AS PROHIBITION, WOMEN AND CHILD WELFARE, ANTI-DOWRY, DRUG ABUSE, WELFARE OF THE HANDICAPPED, ETC.

TAMANNA (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer : **POOJA BHATT**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director : **MAHESH BHATT**

Citation
The Award for the Best Film on Other Social Issues such as Prohibition, women and child welfare, Anti-Dowry, Drug Abuse, Welfare of the Handicapped etc. of 1996 is given to the Hindi Film **TAMANNA** for depicting the selfless dedication and love of eunachs for an abandoned child.

पूजा भट्ट व्यावसायिक हिन्दी फ़िल्मों की एक परिचित अभिनेत्री हैं। परंतु संवेदनशील फ़िल्म निर्माता महेश भट्ट की पुत्री होने के साथ ही वे मौजूदा वक्त के ज्वलंत सामाजिक मुद्दों के प्रति भी जागृत हैं। सामयिक सामाजिक विषय की फ़िल्म **तमन्ना** के माध्यम से **पूजा भट्ट** ने फ़िल्म निर्माण में भी पहल की है।

Pooja Bhatt is more popularly known as an actress in commercial Hindi films. But as the daughter of a sensitive film-maker Mahesh Bhatt, she has been aware of the pressing social issues of the time.

Tamanna is **Pooja Bhatt's** first step in the field of producing films with a relevant social theme.

महेश भट्ट ने अपना फ़िल्मी जीवन निर्माण प्रबंधक के रूप में आरंभ किया। 1974 में उन्होंने अपनी पहली फिल्म **मंजिलें और भी हैं** निर्देशित की। फिलहाल, वे एक बड़ी मनोरंजन कंपनी में रचनात्मक निदेशक के रूप में मीडिया के विविध पहलुओं से जुड़े हुए हैं।

महेश भट्ट की **अर्थ** और **सारांश** जैसी फ़िल्मों को कई पुरस्कार तथा आलोचनात्मक प्रशंसा मिली है। उनकी **नाम, सड़क** और **दिल है कि मानता नहीं** जैसी फ़िल्मों ने व्यावसायिक रूप से तहलका मचा दिया।

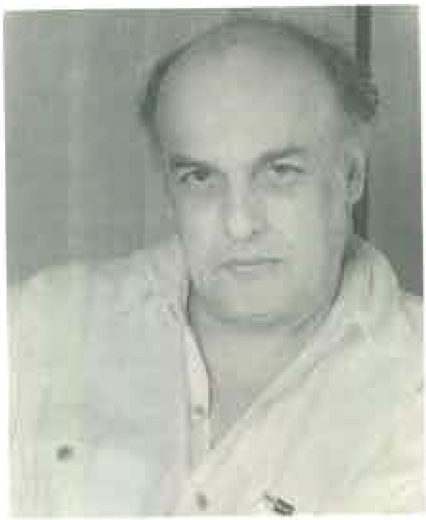

Mahesh Bhatt began his film career as a production-manager. In 1974 he directed his first film, **Manzilen Aur Bhi Hain.** At present, he is involved in various aspects of media activity as Creative Director in a large entertainment company.

Mahesh Bhatt's films like **Arth** and **Saaransh** received many awards and critical acclaim. While films like **Naam, Sadak, Dil Hai Ki Manta Nahin** have been blockbusters with popular appeal.

सर्वोत्तम बाल कथाचित्र पुरस्कार

दामू (बंगला)

निर्माता : **मैसर्स आर्ट फिल्म्स, कलकत्ता** को स्वर्ण कमल तथा 30,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **राजा सेन** को स्वर्ण कमल तथा 30,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम बाल कथाचित्र का 1996 का पुरस्कार बंगला फ़िल्म **दामू** को हृदयस्पर्शी कथा के लिए दिया गया है जिसमें एक सरल व्यक्ति एक बच्चे को दिए गए वचन को निबाहता है।

AWARD FOR THE BEST CHILDREN'S FILM

DAMU (BENGALI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer : **ART FILMS, CALCUTTA**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director : **RAJA SEN**

Citation
The Award for the Best Children's Film of 1996 is given to the Bengali Film **DAMU** for the charming story of a simpleton who keeps his word given to a child.

राजा सेन का जन्म 1955 में हुआ। वे कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक हुए। 1982 में दूरदर्शन नाटकों के निर्देशन के साथ उन्होंने अपने बहुविध कैरियर की शुरुआत की। इस दौरान उन्होंने कई टेलीविजन धारावाहिकों, वृत्तचित्रों तथा टेली फिल्मों का निर्माण और निर्देशन किया है।
राजा सेन के टेलीविजन धारावाहिक **सुबर्णलता** (1987) ने अनेक पुरस्कार प्राप्त किए। सर्वोत्तम वृत्तचित्र का 1993 का राष्ट्रीय पुरस्कार उनके वृत्तचित्र **सुचित्रा मित्रा** को दिया गया। **दामू** के साथ ही उन्होंने कथाचित्र क्षेत्र में पदार्पण किया है।

Born in 1955, **Raja Sen** is a graduate from Calcutta University. He began his prolific career in 1982 with the direction of television plays. Since then he has produced and directed several television serials, documentaries and telefilms.
Raja Sen's television serial **Subarnalata** (1987) received many prestigious awards. His documentary film, **Suchitra Mitra** received the 1993 National Award for the Best Documentary Film. With **Damu** Raja Sen has now stepped into the arena of feature films.

सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार

अहातियन

निर्देशक : **अहातियन** को स्वर्ण कमल तथा 50,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम निर्देशन का 1996 का पुरस्कार **अहातियन** को उनकी तमिल फिल्म **कातल कोत्तई** में अद्‌भुत कथा-संरचना के लिए दिया गया है, जिसमें अंत तक एक असाधारण प्रेम कथा का मानस और लय स्तर पर संतुलन रहता है।

AWARD FOR THE BEST DIRECTION

AHATHIAN

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Director : **AHATHIAN**

Citation
The Award for the Best Direction of 1996 is given to **AHATHIAN** for the Tamil Film **KAATHAL KOTTAI** for a brilliantly knit plot, maintaining the tempo and rhythm of an unusual love story till the end.

एस. अहातियन आर्ट्स में स्नातकोत्तर हैं और चेन्नई में रहते हैं।

S. Ahathian is a post-graduate in Arts based at Chennai.

सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार

कमल हासन

अभिनेता : **कमल हासन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम अभिनेता का 1996 का पुरस्कार **कमल हासन** को तमिल फिल्म **इंडियन** में उनके द्वारा दो भूमिकाओं को सजीवता से अदा करने के लिए दिया गया है, जिसमें पूरी तरह विपरीत चरित्रों को जीवंत कर देने का उनका यह कौशल उनकी अद्भुत अभिनयक्षमता का परिचायक है।

AWARD FOR THE BEST ACTOR

KAMAL HAASAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Actor : **KAMAL HAASAN**

Citation
The Award for the Best Actor of 1996 is given to **KAMAL HAASAN** for his double role in the Tamil Film **INDIAN.** His remarkable range in the entire diverse roles shows his excellent calibre as an actor.

कमल हासन एक सुप्रसिद्ध अभिनेता हैं। अब तक वे लगभग 170 फ़िल्मों में अभिनय कर चुके हैं। सुपरस्टार होने के बावजूद उनमें नए प्रयोग करते रहने की प्रवृत्ति है। **नायकन, अपूर्व सहोदरागल** आदि फ़िल्मों में उनके द्वारा अभिनीत चरित्र इस प्रवृत्ति के जीवंत उदाहरण हैं।

कमल हासन ने अपने कैरियर की शुरुआत नृत्य निर्देशन से की। उन्होंने बतौर सहायक निर्देशक तथा पटकथा लेखक का भी कार्य किया। उन्होंने 12 फ़िल्मों का निर्माण भी किया है।

वर्ष 1990 में **कमल हासन** को **पद्मश्री** की उपाधि से सम्मानित किया गया। वे एकमात्र ऐसे अभिनेता हैं जिन्हें 16 फ़िल्मफेयर पुरस्कार मिलने का गौरव प्राप्त है। 1982 में **मुंदरम् पिराई** तथा 1987 में **नायकन** फ़िल्मों के लिए उन्हें सर्वोत्तम अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है।

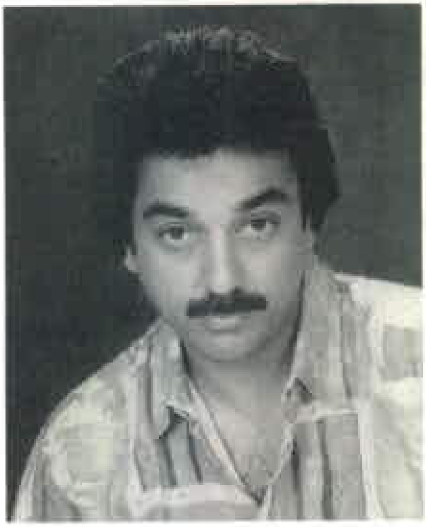

Kamal Haasan is an actor of many years' standing with 170 films to his credit. Though a superstar, he has experimented with varied characters in films like **Nayakan, Apoorva Sahodarargal,** etc.

Kamal Haasan began his adult career as a choreographer. He has also worked as assistant director and script writer. Subsequently he had produced 12 films. In 1990, **Kamal Haasan** was conferred the title of 'Padmashree'. He is the only actor to have received 16 Filmfare Awards. In 1982 and 1987 he received the National Award for Best Actor for the films **Mundram Pirai** and **Nayakan** respectively.

सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार

तब्बू

अभिनेत्री : **तब्बू** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम अभिनेत्री का 1996 का पुरस्कार **तब्बू** को हिन्दी फ़िल्म **माचिस** में एक ऐसी औरत के चरित्र को, जो अंतर्द्वंद्वों के चक्रवात में बुरी तरह फंसी हो, अति-संवेदनशील ढंग से निबाहने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ACTRESS

TABU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Actress : **TABU**

Citation
The Award for the Best Actress of 1996 is given to **TABU** for the Hindi Film **MAACHIS** for sensitive portrayal of a woman trapped in the vortex of conflicts.

तबस्सुम फ़ातिमा हाशमी अपने प्रशंसकों द्वारा **तब्बु** नाम से जानी जाती हैं। बहुभाषाविद् तबु ने 1993 में फ़िल्मों की दुनिया में पहला क़दम रखा।

कर्मनिष्ठ तब्बु अपने काम को बहुत गंभीरता से लेती हैं। उन्होंने गुलज़ार, मणि रत्नम्, प्रियदर्शन, के. राघवेन्द्र राव जैसे विख्यात निर्देशकों के साथ काम किया है। **कालापानी** (हिन्दी), **इरुवार** (तमिल), **विजयपथ** (हिन्दी) उनकी कुछ फ़िल्में हैं। 1996 में उन्हें भरपूर मनोरंजन देने वाली सर्वोत्तम फीचर फ़िल्म **निन्नेपेल्लादाथ** (तेलुगु) और **विरासत** (हिन्दी) में काम करने के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। 1994 में तब्बु को फ़िल्मफेयर पुरस्कार भी दिया गया।

Tabassum Fatima Hashmi is popularly known as **Tabu** by her fans. A multi-linguist, she made her debut in 1993.

Being very diligent and sincere in her work, Tabu has worked with well known films directors in India like Gulzar, Mani Ratnam, Priyadarshan, K. Raghavendra Rao. Some of the films she had acted in are **Kalapaani** (Hindi), **Iruvar** (Tamil), **Vijayapath** (Hindi) and **Ninnepelladatha** (Telugu) which won a national award in 1996 for the Best Feature Film for Wholesome Entertainment, and **Viraasat** (Hindi). Tabu also won the Filmfare award in 1994.

सर्वोत्तम सह-अभिनेता पुरस्कार

नाना पाटेकर

सह-अभिनेता : **नाना पाटेकर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम सह-अभिनेता का 1996 का पुरस्कार **नाना पाटेकर** को हिन्दी फिल्म **अग्नि साक्षी** में एक सनकी पति के चरित्र को जीवन्तता से अदा करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTOR

NANA PATEKAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Supporting Actor : **NANA PATEKAR**

Citation
The Award for the Best Supporting Actor of 1996 is given to **NANA PATEKAR** for his brilliant performance as an obssessed husband in the Hindi Film **AGNI SAKSHI.**

नाना पाटेकर के उत्कृष्ट अभिनय की हमेशा सराहना की गई है। **अंकुश, प्रतिघात, कल की आवाज, प्रहार, तिरंगा** और **खामोशी** जैसी फ़िल्मों में अपने अभिनय द्वारा उन्हें बहुत प्रसिद्धि प्राप्त हुई। फ़िल्म **क्रांतिवीर** में अपने अभिनय के लिए उन्हें सर्वोत्तम अभिनेता का फ़िल्मफेयर पुरस्कार और राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

Nana Patekar is acclaimed as a fine actor for his performances. Among the films he is known for are **Ankush, Pratighaat, Kal Ki Awaaz, Prahaar, Tiranga** and **Khamoshi.** He won first award for acting in the film **Krantiveer** which he got him the best Actor award at the National Film Festival and was also adjudged the Best Actor by Screen Panasonic and Filmfare.

सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री पुरस्कार

राजेश्वरी सचदेव

सह-अभिनेत्री : **राजेश्वरी सचदेव** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री का 1996 का पुरस्कार **राजेश्वरी सचदेव** को उर्दू फ़िल्म **सरदारी बेगम** में उनकी अदाकारी के लिए दिया गया है, जिसमें उन्होंने एक तनहा लड़की की आकांक्षाओं और यंत्रणाओं को मार्मिकता से चित्रित किया है।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTRESS

RAJESHWARI SACHDEV

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Supportng Actress : **RAJESHWARI SACHDEV**

Citation
The Award for the Best Supporting Actress of 1996 is given to **RAJESHWARI SACHDEV** for her role in the Urdu Film **SARDARI BEGUM** in which she depicts the aspirations and agony of a lonely teenage girl.

राजेश्वरी सचदेव ने मुंबई से अंग्रेजी साहित्य में स्नातक की शिक्षा ली है। बचपन से ही वे रंगमंच समूह **इप्टा** से संबद्ध रही हैं। पिछले बारह वर्षों से वे भरतनाट्यम की विद्यार्थी भी हैं।

1992 में **राजेश्वरी** को फ़िल्मों में उनके उत्कृष्ट अभिनय के लिए अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उन्हें फ़िल्म **अयात्या घरात घरोबा** के लिए राज्य-स्तरीय सर्वोत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार भी मिल चुका है।

Rajeshwari Sachdev is a graduate in English from Mumbai. She has been a member of the theatre-group, IPTA, since childhood. She has also been a student of Bharat Natyam for over twelve years.

Since 1992, **Rajeshwari** has been acting in films and has received awards for many of them. She got the state-level award for best actress in the film **Ayatya Gharat Gharoba.**

सर्वोत्तम बाल कलाकार पुरस्कार

कुमारी काव्या

मास्टर कुमार

बाल कलाकार : **कुमारी काव्या** और **मास्टर कुमार** को रजत कमल तथा प्रत्येक को 5,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल कलाकार का 1996 का पुरस्कार **कुमारी काव्या** को तेलुगु फिल्म **लिटिल सोल्जर्स** तथा **मास्टर कुमार** को मलयालम फ़िल्म **देसाडनम्** में उनके कार्य तथा बेहतरीन अदाकारी के लिए संयुक्त रूप में दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CHILD ARTISTE

KUMARI KAVYA

MASTER KUMAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Child Artistes : **KUMARI KAVYA** (Rs. 5000/-), **MASTER KUMAR** (Rs. 5000/-)

Citation

The Award for the Best Child Artiste of 1996 is jointly given to **KUMARI KAVYA** for her work in the Telugu Film **LITTLE SOLDIERS** and to **MASTER KUMAR** for his role in the Malayalam Film **DESADANAM** and for their excellent performance.

काव्या अन्नपारेड्डी का जन्म 1992 में इंग्लैंड में हुआ। तीन वर्ष की आयु में जब उन्होंने कैमरे का सामना किया, तब वे तेलुगु नहीं जानती थीं। पर उन्होंने भाषा को न केवल बोला अपितु दृश्य के साथ-साथ अपने संवादों का खूबसूरती से तालमेल स्थापित कर डबिंग भी की।

Kavya Annapareddi was born in England in 1992. She did not know Telugu when she faced the camera at the age of three years. But she picked up the language and was even able to dub her own dialogues in perfect synchronisation with the visuals.

मास्टर कुमार फिलहाल केरल में रह रहे हैं। यूं वे तमिलनाडु राज्य के निवासी हैं। **देसाडनम्** उनकी अभिनीत पहली फ़िल्म है, जिसे केरल राज्य सरकार ने सर्वोत्तम बाल कलाकार का पुरस्कार दिया है।

Master Kumar hails from Tamil Nadu though now living in Kerala. **Desadanam** is the first film he has acted in, for which he has also received the Kerala State Government Award for the Best Child Artiste.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार

एस.पी. बालसुब्रह्मण्यम्

पार्श्व गायक : **एस.पी. बालसुब्रह्मण्यम** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम पार्श्व गायक का 1996 का पुरस्कार **एस.पी. बालसुब्रह्मण्यम्** को तमिल फ़िल्म **मिन्सारा कणवु** में गीत **थंगा थमारा** के भावपूर्ण गायन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST MALE PLAYBACK SINGER

S.P. BALASUBRAMANIYAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Male Playback Singer : **S.P. BALASUBRAMANIYAM**

Citation
The Award for the Best Male Playback Singer of 1996 is given to **S.P. BALASUBRAMANIYAM** for his brilliant rendering of the song **THANGATHAMARA** in the Tamil Film **MINSARA KANAVU.**

एस.पी. बालसुब्रह्मण्यम् ने बहुत कम आयु में ही अपने पिता से गायकी सीखना आरंभ किया था। तेलुगु फ़िल्म **श्री श्री मर्यादा रामन्ना** से उन्होंने शुरुआत की तथा 1979 में वे हिंदी फ़िल्मों में भी गाने लगे।

बालू के नाम से विख्यात इस गायक ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में तकरीबन 28,000 गीत गाए हैं। अनेक गीतों के लिए उन्हें बेहद प्रशंसा व नाम मिला है। **शंकराभरणम्** (1979) और **एक दूजे के लिए** (1981) में गायन के लिए उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले हैं।

बालू तेलुगु, कन्नड़, तमिल और हिंदी फ़िल्मों के जाने-माने संगीतकार भी हैं। उन्होंने अब तक 35 फ़िल्मों के लिए संगीत भी दिया है।

S.P. Balasubramaniyam learnt singing at a very young age from his father. He received his first break in the Telugu film **Sri Sri Maryada Ramanna.** By 1979 he was singing for Hindi films as well.

Balu, as he is popularly known, has sung over 28,000 songs in various Indian languages. He has won acclaim for many of them, including national awards for his singing in **Shankarabharanam** (1979) and **Ek Dooje Ke Liya** (1981).

Balu is also a well-known composer for Telugu, Kannada, Tamil and Hindi films. He has scored music for 35 films until now.

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका पुरस्कार

चित्रा

पार्श्व गायिका : **चित्रा** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका का 1996 का पुरस्कार **चित्रा** को तमिल फ़िल्म **मिन्सारा कणवु** में गीत **मनमाथुरई** के भाव-प्रवण एवं हृदयग्राही ढंग से गायन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEMALE PLAYBACK SINGER

CHITHRA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Female Playback Singer : **CHITHRA**

Citation
The Award for the Best Female Playback Singer of 1996 is given to **CHITHRA** for her soulful rendering of the song **MANAMATHURAI** in the Tamil Film **MINSARA KANAVU.**

के.एस. चित्रा को संगीत कला विरासत में प्राप्त हुई। उनके पिता स्व. कृष्णन् नायर ने उन्हें संगीत की आरंभिक शिक्षा प्रदान की। बाद में उन्होंने स्नातकोत्तर स्तर तक विधिवत् संगीत शिक्षा प्राप्त की।

चित्रा ने श्री एम.जी. राधाकृष्णन् तथा श्री इलैया राजा जैसे दिग्गज संगीत निर्देशकों के साथ संगीत-साधना की है। उनकी मुख्य फ़िल्मों में **अत्ताहसन** तथा **नी ताना अंता कुइल** आदि हैं। भारत तथा विदेशों में उन्होंने श्री येशुदास के साथ अनेक संगीत-गोष्ठियों में गायन किया है। अब **चित्रा** ने उड़िया तथा बंगला भाषा के साथ-साथ हिंदी में भी गायन आरंभ किया है।

चित्रा ने अन्य अनेक पुरस्कारों के साथ वर्ष 1986, 1987 तथा 1989 के राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त किए। उन्होंने लगातार 1985 से 1995 तक केरल राज्य पुरस्कार जीते, जो अपने आप में एक कीर्तिमान है। उनके इस अद्भुत कौशल के सम्मान में तमिलनाडु सरकार ने उन्हें **कलाए ममाणि** की उपाधि प्रदान की है।

K.S. Chithra was born in a family of musicians and received her early music lessons from her father, late Shri Krishnan Nair. Later Chithra continued her training in music upto the post-graduate level.

Chithra's career in music flourished under music directors like Shri M.G. Radhakrishnan and Shri Ilayaraja, in films like **Attahasan Nee Tana Antha Kuil** among others. She also did live concerts with Shri Yesudas in India and abroad. Now **Chithra** has also made a debut in Hindi films, as well as sung in Oriya and Bengali languages.

Among various awards, **Chithra** has won the National Awards in 1986, 1987 and 1989. She has continuously won the Kerala State Award from 1985 to 1995, an all-time record. In recognition of her virtuosity, Tamil Nadu State has conferred the title of **Kalaimamani** (1997) on **Chithra.**

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

मृणाल कांति दास

छायाकार : **मृणाल कांति दास** को रजत कमल तथा 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

फ़िल्म प्रोसेसिंग करने वाली प्रयोगशाला : **प्रसाद फ़िल्म लेबोरेट्रीज, चेन्नई** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम छायांकन का 1996 का पुरस्कार **मृणाल कांति दास** को असमिया फ़िल्म **अदाज्या** और **राग-बिराग** में उनकी बहुमुखी प्रतिभा, कल्पनाशीलता और अद्भुत संयोजन तथा विभिन्न मनोदशाओं को खूबसूरती से प्रतिफलित करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHER

MRINAL KANTI DAS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Cameraman : **MRINAL KANTI DAS**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the laboratory processing the films : **PRASAD FILM LABORATORIES, CHENNAI**

Citation
The Award for the Best Cinematography of 1996 is given to **MRINAL KANTI DAS** for his work in the Assamese films **ADAJYA** and **RAG-BIRAG** for his versatile, imaginative and superb compositions and mood lighting.

मृणाल कांति दास ने भारतीय फ़िल्म एवं टेलीविज़न संस्थान, पुणे से मोशन पिक्चर फोटोग्राफी में 1991 में स्नातक की उपाधि प्राप्त की तथा अनेक टेलीविज़न धारावाहिकों में कार्य किया।

अदाज्या, राग-बिराग तथा **हस्तिर कन्या** आदि फ़िल्मों में उनके छायांकन को सभी जगह से आलोचनात्मक प्रशंसा प्राप्त हुई है।

Mrinal Kanti Das is a graduate in Motion Picture Photography from the Film and Television Institute of India, Pune. After graduating in 1991, he worked for many television serials.

Mrinal Kanti Das cinematography in the films **Adajya, Rag-Birag** and **Hastir Kanya** have all won him critical acclaim.

सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार

अहातियन

पटकथा लेखक : **अहातियन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नक़द पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम पटकथा लेखन का 1996 का पुरस्कार **अहातियन** को तमिल फ़िल्म **कातल कोत्तई** में अद्‌भुत संवादों के साथ-साथ सुरूचिपूर्ण और प्रवाहपूर्ण कथानक के ताने-बाने तथा प्रखर सामंजस्य के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SCREENPLAY

AHATHIAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Screenplay Writer : **AHATHIAN**

Citation
The Award for the Best Screenplay of 1996 is given to **AHATHIAN** for his work in the Tamil Film **KAATHAL KOTTAI,** for a tightly knit and smooth flowing plot with excellent dialogues and razor-sharp tuning.

एस. अहातियन आर्ट्स में स्नातकोत्तर हैं और चेन्नई में रहते हैं।

S. Ahathian is a post-graduate in Arts based at Chennai.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

कृष्णन उन्नी

ध्वनि आलेखक : **कृष्णन उन्नी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम ध्वनि-आलेखन का 1996 का पुरस्कार **कृष्णन उन्नी** को मलयालम फ़िल्म **देसाडनम्** में फ़िल्म की मूल भावना के उपयुक्त परिवेशगत ध्वनि और हृदयस्पर्शी प्रभावों के अद्भुत मिश्रण तथा उत्कृष्ट प्रयोगों के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

KRISHNAN UNNI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Audiographer : **KRISHNAN UNNI**

Citation
The Award for the Best Audiographer of 1996 is given to **KRISHNAN UNNI** for his work in the Malayalam Film **DESADANAM,** for excellent use and blending of ambient sound with superb effects, appropriate to the spirit depicted in the film.

कृष्णन उन्नी केरल के निवासी हैं तथा चित्रांजलि स्टूडियो में कार्यरत हैं। ध्वनि-आलेखक के रूप में उन्होंने दो राष्ट्रीय पुरस्कारों के साथ ही अनेक अन्य पुरस्कार भी प्राप्त किए। **कृष्णन उन्नी** को केरल राज्य सरकार का 1997 का पुरस्कार भी **देसाडनम्** में ध्वनि-आलेखन के लिए दिया गया है।

Krishnan Unni, a native of Kerala, works with the Chitranjali Studio. In his career as audiographer, he has won several awards, including two National Awards.
Krishnan Unni's audiography in **Desadanam** also won him the Kerala State Government Award in 1997.

सर्वोत्तम संपादन पुरस्कार

ए. श्रीकर प्रसाद

फ़िल्म संपादक : **ए. श्रीकर प्रसाद** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम संपादन के लिए 1996 का पुरस्कार **ए. श्रीकर प्रसाद** को असमिया फ़िल्म **राग-बिराग** में कल्पनाशीलता, कथा की प्रवाहशीलता तथा गति-निर्धारण में दक्षतापूर्ण कार्य एवं कुशल संपादन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST EDITING

A. SREEKAR PRASAD

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Editor : **A. SREEKAR PRASAD**

Citation
The Award for the Best Editor of 1996 is given to **A. SREEKAR PRASAD** for his work in Assamese Film **RAG-BIRAG,** for slickly editing with imagination, setting the pace and flow of the story.

ए. श्रीकर प्रसाद यूं तो चेन्नई, तमिलनाडु के निवासी हैं किंतु उनका नाम विख्यात असमिया फ़िल्मों के माध्यम से प्रकाश में आया।

उन्होंने नई पीढ़ी के लगभग सभी असमिया फ़िल्मकारों के साथ काम किया है, जिनमें से अधिकांश को राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली है। **हलधर, मीमांसा** तथा **राग-बिराग** जैसी फ़िल्मों में उनकी संपादन कला ने असमिया फ़िल्मों में एक नवीन शैली का सूत्रपात किया है।

A. Sreekar Prasad is a permanent resident of Chennai, Tamil Nadu. But his name has come to be associated with trend-making Assamese films.

A. Sreekar Prasad has worked with almost all the new generation Assemese film-makers, most of whom have received national and international recognition. **Sreekar Prasad's** approach to editing in films like **Haladhar, Meemansa** and **Rag-Birag** are considered the beginning of a new style in Assamese films.

सर्वोत्तम कला निर्देशन पुरस्कार

थोटा थरणी

कला निर्देशक : **थोटा थरणी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम कला निर्देशन के लिए 1996 का पुरस्कार **थोटा थरणी** को तमिल फिल्म **इंडियन** में उनके कार्य के लिए दिया गया है जिसमें कथा के कालानुसार तथा फिल्म के बड़े कैनवस के अनुरूप सेटों के निर्माण तथा लोकेशन के चयन में बुद्धिमत्ता एवं रचनात्मकता का परिचय दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ART DIRECTION

THOTTA THARANI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Art Director : **THOTTA THARANI**

Citation
The Award for the Best Art Director of 1996 is given to **THOTTA THARANI** for his work in the Tamil Film **INDIAN**, for erection of sets and selection of locations perfectly matching the periods depicted in the story and enhancing the huge canvas of the film.

थोटा थरणी पुरस्कार विजेता चित्रकार हैं। उन्होंने फाईन आर्ट्स एंड पेंटिंग में चेन्नई, तमिलनाडु से डिप्लोमा किया है। देश-विदेश में उनकी अनेक एकल प्रदर्शनियां आयोजित की गई हैं तथा सामूहिक प्रदर्शनियों में भी उनकी सक्रिय भागीदारी रही है।

थोटा थरणी ने अपना फ़िल्मी कैरियर एक वरिष्ठ कला निर्देशक के सहायक के तौर पर आरंभ किया। अनेक दक्षिण भारतीय फ़िल्मों में उन्होंने कला निर्देशक के रूप में कार्य किया है। उन्हें **सागर संगमम्** (1982), **गीतांजलि** (1989), **अभिमन्यु** (1991), **दलपति** (1993), **कादलन** (1996) के लिए अनेक राज्य-स्तरीय पुरस्कार प्राप्त हुए तथा **नायकन** (1988) के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

Thotta Tharani, an award winning painter, did his post-graduate Diploma in Fine Arts and Painting from Chennai, Tamil Nadu. He has held several solo exhibitions in India and abroad, as well as participated in many group exhibitions.

Thotta Tharani began his film career as an assistant to vetaran art directors. Subsequently, he has worked as art director for many South Indian films. Among others, he has won state-level awards for **Sagara Sangamam** (1982), **Geethanjali** (1989), **Abhimanyu** (1991), **Dhalapathi** (1993), **Kaadalan** (1996). And the National Award for **Nayakan** (1988).

सर्वोत्तम वेशभूषाकार पुरस्कार

एम. दण्डपाणि

वेशभूषाकार : **एम. दण्डपाणि** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम वेशभूषाकार का 1996 का पुरस्कार **एम. दण्डपाणि** को मलयालम फ़िल्म **कुलम्** में चित्रित काल के अनुरूप खूबसूरत एवं प्रामाणिक वेशभूषा तैयार करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST COSTUME DESIGNER

M. DHANDAPANI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Costume Designer : **M. DHANDAPANI**

Citation
The Award for the Best Constume Designer of 1996 is given to **M. DHANDAPANI** in the Malayalam Film **KULAM,** for creating beautiful costumes that are authentic to the period depicted in the film.

आर.के. दण्डपाणि व्यावसायिक वेशभूषाकार रह चुके हैं। हाईस्कूल के बाद उन्होंने सर्वप्रथम कपड़ों की सिलाई की दुकान से शुरुआत की। आज वे एक सिद्धहस्त वेशभूषाकार हैं।

आर.के. दण्डपाणि ने केरल की 100 से अधिक फ़िल्मों में वेशभूषाकार का कार्य किया है। उन्हें फ़िल्म **दयावथिन्डे विक्रीथिकल** (1992) के लिए सर्वोत्तम वेशभूषाकार का राज्य-स्तरीय पुरस्कार मिल चुका है।

R.K. Dhandapani has been a professional costume-designer. After high school he made a modest beginning with a tailoring shop. Today he is an accomplished costume-designer.

R.K. Dhandapani has designed costumes for more than one hundred films in Kerala. For the film **Dayavathinde Vikrithikal** (1992) he received the state-level award for best costume-designer.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

ए.आर. रहमान

संगीत निर्देशक : **ए.आर. रहमान** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम संगीत निर्देशक का 1996 का पुरस्कार **ए.आर. रहमान** को तमिल फ़िल्म **मिन्सारा कणवु** में समस्त परंपराओं का अतिक्रमण करने वाली एक युगांतकारी संयोजना, जिससे एक नए युग का आरंभ होता है, के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTION

A.R. RAHMAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Music Director : **A.R. RAHMAN**

Citation
The Award for the Best Music Director of 1996 is given to **A.R. RAHMAN** for the Tamil Film **MINSARA KANAVU** for innovative compositions breaking all traditions, entering into a new era.

ए.आर. रहमान का जन्म एक परंपरागत संगीत प्रेमी परिवार में हुआ। उनके पिता श्री आर.के. शेखर केरल के प्रसिद्ध संगीत निर्देशक थे। अपने बचपन से ही **ए.आर. रहमान** ने संगीत को जीवन बना लिया था। बाद में, उन्होंने ट्रिनिटी कॉलेज ऑफ म्यूज़िक, लंदन से शिक्षा प्राप्त की।

ए.आर. रहमान ने विज्ञापन एजेंसियों, संगीत-मंडलियों, कलाकारों तथा जनचेतना अभियानों के लिए विभिन्न विषयों पर कार्य किया है। 1991 से अब तक उन्होंने **रोजा, कादलन** तथा **बाम्बे** जैसी तकरीबन 20 फ़िल्मों में संगीत दिया है।

संगीत के लिए उन्हें राज्य सरकार का 1992-93 का पुरस्कार, फ़िल्मफेयर 1992-96 का पुरस्कार तथा **रोजा** में संगीत के लिए 1992 का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया है।

A.R. Rahman was born in a family with a tradition of music. His father was the well-known music director of Kerala, Shri R.K. Sekar. Playing music from childhood was a natural part of **A.R. Rahman's** early years. Later he qualified from the Trinity College of Music, London.

A.R. Rahman worked with artists, music groups, advertising agencies and public awareness compaigns on various projects. Since 1991 he has produced the sound tracks and songs for nearly 20 films, like **Roja, Kadalan, Bombay** etc.

A.R. Rahman has won the State Awards from 1992-93; the Filmfare Awards from 1992-96; and the National Award for his music in **Roja** in 1992.

सर्वोत्तम गीत पुरस्कार

जावेद अख्तर

गीतकार : **जावेद अख्तर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम गीतकार का 1996 का पुरस्कार **जावेद अख्तर** को हिंदी फिल्म **साज़** में गीतों की काव्यात्मकता तथा पारंपरिक अभिव्यक्ति के प्रतिफलन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST LYRICS

JAVED AKHTAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Lyricist : **JAVED AKHTAR**

Citation
The Award for the Best Lyricist for the year 1996 is given to **JAVED AKHTAR** for his lyrics in the Hindi Film **SAAZ**, for its poetic and traditional expression.

जावेद अख़्तर गीतकार, पटकथा लेखक तथा कवि हैं। उनका संबंध एक ऐसे परिवार से है जो पिछली सात पीढ़ियों से इस क्षेत्र में स्थापित है। उनके पिता जां निसार अख़्तर प्रसिद्ध उर्दू कवि तथा फ़िल्मी गीतकार रहे हैं।

जावेद अख़्तर ने अकेले तथा अपने सहयोगी सलीम के साथ अनेक सफल फ़िल्मों की पटकथा लिखी है। सर्वोत्तम पटकथा के लिए उन्हें नौ बार फ़िल्मफेयर पुरस्कार मिला है।

जावेद अख़्तर ने फ़िल्म 1942—**ए लव स्टोरी** में अपने गीतों से फ़िल्मी गीतों में एक नई स्वच्छ तथा साहित्यिक संस्पर्श वाली शैली की शुरुआत की है। उनकी यह शैली नज़्म और ग़ज़लों के संकलन **तरकश** में भी दृष्टव्य है जो पहले पुस्तक रूप में आई तथा अब तक जिसकी तकरीबन 1,00,000 आडियो प्रतियां बिक चुकी हैं।

जावेद अख़्तर एक प्रतिबद्ध कवि तथा लेखक हैं। उनकी प्रसिद्धि चहुंमुखी है। हावर्ड, कोलंबिया, मेरीलैंड, लंदन, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों में उन्हें अक्सर काव्य-पाठ के लिए आमंत्रित किया जाता है।

Lyricist, script-writer and poet, **Javed Akhtar** belongs to a family that traces its literary traditions back to seven generations. His father was the well-known Urdu poet and film lyricist, Jan Nisar Akhtar.

Javed Akhtar has scripted several successful films, both with his ex-partner, Salim and individually. He has won the Filmfare Award for Best Script nine times over.

Javed Akhtar's lyrics for the film "1942—A Love Story" have received the trend for clean, literary flavour in film songs. This trend is combined with the success of **Tarkash,** a collection of Nazms and Ghazals. First released as a book, it has now also sold over 1,00,000 copies as an audi-book.

Javed Akhtar's reputation as a committed poet and writer has spread across the seas. The universities of Harvard, Columbia, Maryland, London and Cambridge have all invited him for sessions of poetry recitation.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

अमोल पालेकर और किरण खेर

अमोल पालेकर और **किरण खेर** को रजत कमल तथा प्रत्येक को 12,500/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
निर्णायक मंडल का 1996 का विशेष पुरस्कार निर्देशक **अमोल पालेकर** को हिन्दी फ़िल्म **दायरा** में हमारे समाज के उपांतिक तथा अपेक्षित वर्ग की यंत्रणाओं एवं साहस के नग्न यथार्थ के चुनौतीपूर्ण विषय को अति-संवेदनशील ढंग से उठाने के लिए दिया गया है।

और

किरण खेर को उर्दू फ़िल्म **सरदारी बेगम** में एक परिवर्तनकामी व्यक्तित्व को जीवंतता प्रदान करने के लिए दिया गया है, जिसमें वह समाज की रूढ़ियों को ध्वस्त करती है तथा अपने मनपसन्द क्षेत्र में बुलंदियों को छूती है।

SPECIAL JURY AWARD

AMOL PALEKAR and KIRON KHER

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to **AMOL PALEKAR** and **KIRON KHER**

Citation
The Special Jury Award of 1996 is given to the Director **AMOL PALEKAR** in the Hindi Film **DAAYRA** for the sensitive handling of a challenging theme laying bare the agony and courage of a neglected and marginalised section of our society.

and

to **KIRON KHER** in the Urdu Film **SARDARI BEGUM,** for superb depiction of a dynamic person who breaks shackles of society and achieves excellence in her chosen profession.

अमोल पालेकर ने अपना थिएटर जीवन ऐसे दिग्गजों के संरक्षण में शुरू किया जिन्होंने 1970 में भारतीय थिएटर में तहलका मचा दिया था। बाद में वे मराठी **अवांत गार्दे थिएटर** के स्वयंसिद्ध हस्ताक्षर हो गए।

अमोल पालेकर ने 1970 में एक अभिनेता के रूप में फ़िल्म जगत में पदार्पण किया तथा शीघ्र ही एक सरल एवं निष्कपट व्यक्ति की इमेज में प्रसिद्ध हो गए। वे 1980 के मध्य में मराठी सिनेमा के निर्देशक के रूप में उभरे। उनकी पहली फ़िल्म **अक्रियेत** को नांत्स, फ्रांस के निर्णायक मंडल के विशेष पुरस्कार के साथ ही भारत में अनेक राज्य-स्तरीय तथा राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए। उनकी अन्य फ़िल्मों—**अनकही, थोड़ा सा रूमानी हो जाएं** तथा **बंगनवाड़ी** को देश-विदेश में बेहद प्रशंसा तथा सम्मान मिला है।

Amol Palekar began his theatre career under the leaders of the renaissance that swept Indian theatre in the 1970s. Later, he himself came to be the hall-mark fo Marathi avant-garde theatre.

Amol Palekar came to cinema in the 1970s as an actor who was popular, with the image of the 'boy-next-door'.

It was in the mid-'80s that **Amol Palekar** emerged as a director in Marathi cinema. His first film, **Akriet** won the special Jury Award at Nantes, France, apart from several state-level and national awards in India. His other films, **Ankahee, Thodaasa Roomani Ho Jayen, Banganwadi** have also won acclaim in India and abroad.

डिपार्टमेंट ऑफ इंडियन थिएटर से स्नातक की शिक्षा पूरी करने के बाद **किरण खेर** ने अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर किया। पंजाबी थिएटर बलवंत गार्गी के संरक्षण में उन्होंने अपने शुरुआती थिएटर जीवन को पल्लवित किया। थिएटर की अन्य जानी-मानी हस्तियों के साथ काम करते हुए **किरण खेर** ने दूरदर्शन की ओर अभिनेत्री तथा संचालिका के रूप में रुख किया, जिसके लिए उन्हें बेहद प्रसिद्धि मिली। श्याम बेनेगल के निर्देशन में उन्होंने सिनेमा जगत में भी अपनी अदाकारी का सिक्का जमा लिया है।

After doing her M.A. in English literature, **Kiron Kher** also graduated from the Department of Indian Theatre. Her early career blossomed under the direction of Punjabi theatre stalward, Balwant Gargi.

After working with other leading theatre personalities, **Kiron Kher** moved to television as actress and anchorwoman for which she has received much acclaim. Under Shyam Benegal's direction, she has now made her mark in the world of films.

सर्वोत्तम विशेष प्रभाव पुरस्कार

वेन्की

सृजक : **वेन्की** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम विशेष प्रभाव का 1996 का पुरस्कार **वेन्की** को तमिल फिल्म **इंडियन** में काल-कल्पना के मनोरंजनात्मक तरीके, नवीनता तथा परंपरा के अद्भुत संगम के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SPECIAL EFFECTS

VENKI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Creator : **VENKI**

Citation
The Award for the Best Special Effects of 1996 is given to **VENKI** for recreation of the period images and also for combining new footage with stock footage in the Tamil Film **INDIAN.**

वेन्की संबामूर्ति ने गवर्नमेंट कालेज आफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स, मद्रास से फाइन आर्ट्स में स्नातकोत्तर किया है। वे विशेष प्रभाव सर्जना के विशेषज्ञ हैं। पिछले 12 वर्षों में उन्होंने एनीमेशन, ऑप्टिकल तथा कम्प्यूटर ग्राफिक्स में अच्छी साख बनाई है।

अपूर्व सागोथारागल, अंजलि, कादलन, रंगीला आदि फिल्मों में उन्होंने विशेष प्रभाव सर्जना की है।

Venki Sambamoorthy is a post-graduate in Fine Arts from the Government College of Arts & Crafts, Madras. He specialises in special visual effects. For over 12 years, **Venki Sambamoorthy** has built a reputation for excellence in Animation, optical and Computer Graphics.

Among the films which have special effects created by Venki are: **Apoorva Saghotharargal, Anjali, Kadalan, Rangila.**

सर्वोत्तम नृत्य संयोजन पुरस्कार

प्रभु देवा

नृत्य संयोजक : **प्रभु देवा** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम नृत्य संयोजक का 1996 का पुरस्कार **प्रभु देवा** को तमिल फ़िल्म **मिन्सारा कणवु (गीत : वेन्नीलेवे, वेन्नीलेवे** तथा **स्ट्राबेरी कन्ने)** में ऐंद्रिय भावों की अति-उत्कृष्टता तथा अनुपम नृत्य संयोजन-पद्धति की उपयुक्तता के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CHOREOGRAPHY

PRABHU DEVA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Choreographer : **PRABHU DEVA**

Citation
The Award for the Best Choreographer of 1996 is given to **PRABHU DEVA** whose sensual body language is par excellence and appropriate to unique choreographic patterns in the Tamil Film **MINSARA KANAVU** (Song—Vennilave Vennilave and song—Strawberry Kanne)

चेन्नई निवासी **एस. प्रभु देवा** का जन्म वर्ष 1973 में बेंगलौर में हुआ। वे ऐसे परिवार से हैं जो काफी अर्से से नृत्य-निर्देशन में सक्रिय है। उनके पिता और भाई भी इसी क्षेत्र से संबद्ध हैं।

प्रभु देवा स्वयं एक सफल नर्तक होने के साथ-साथ 80 फ़िल्मों में नृत्य-निर्देशन कर चुके हैं। उन्होंने **कादलन** और **मिन्सारा कणवु** में बतौर नायक का भी काम किया है।

Born in 1973 in Bangalore, **S. Prabhu Devah** settled in Chennai. He belongs to a family with a background in choreography. His father and brother both are choreographers.

Prabhu Devah has choreographed for 80 films and is himself one of the most popular dancers on the screen. He has also acted as a hero in several films like **Kadhalan, Minsara Kanavu** etc.

सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र पुरस्कार

अदाज्या

निर्माता : **नयन प्रसाद** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **डॉ. सांत्वना बारदोलोई** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र का 1996 का पुरस्कार **अदाज्या** को अकेलेपन, मानसिक आघात तथा कर्मकांडी विश्वासों के जटिल जाले में उलझी तीन विधवाओं के विस्तार के अति-सूक्ष्म तथा अन्वेषणपूर्ण उद्‌घाटन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM IN ASSAMESE

ADAJYA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **NAYAN PRASAD**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director : **SANTWANA BARDOLOI**

Citation
The Award for the Best Film in Assamese of 1996 is given to **ADAJYA** for a subtle and sensitive exploration of loneliness trauma and coverage of 3 widows caught in the complex web of ritualistic beliefs.

डॉ. सांत्वना बारदोलोई ने एम.बी.बी.एस. करने के बाद पैडिएट्रिक्स में एम.डी. किया। परंतु अपने बचपन से ही वे असमिया थिएटर तथा बाद में रेडियो टेलीविजन से जुड़ी रहीं। रंगमंच तथा टेलीविज़न पर एक सफल अभिनेत्री के रूप में उनका नाम जाना जाता है।
डॉ. सांत्वना बारदोलोई ने निर्देशन के क्षेत्र में **आरण्यक** नामक लघु टेली फ़िल्म से शुरुआत की। इसके बाद उनकी कई अन्य फ़िल्में आईं। उनकी नवीनतम फ़िल्म **अदाज्या** को 1996 का **अरविन्दन पुरस्कारम्** भी दिया गया है।

Dr. Santwana Bardoloi did her M.B.B.S., followed by an M.D. in Paediatrics. But from her school-going days, she was working in Assamese theatre, and later radio and television. She has won critical acclaim as an actress on television.
Dr. Satwana Bardoloi made her debut in direction with a short tele-film, **Aranyak.** This was followed by other films, until her maiden feature film, **Adajya** for which she has also won the **'Arabindan Puraskaram'** in 1996.

नयन प्रसाद असम के विख्यात फ़िल्म-समीक्षक तथा स्तंभकार हैं। वे कई वर्षों तक स्थानीय रेडियो के लिए भी कार्य कर चुके हैं।
नयन प्रसाद रंगमंच कार्यकर्ता तथा शौकिया रंगमंच निर्देशक भी रह चुके हैं। वे असम फ़िल्म सोसायटी मूवमेंट के सक्रिय सदस्य रह चुके हैं। वर्तमान में वे एक ऐसी सहकारी संस्था से संबद्ध हैं जो राज्य में सार्थक सिनेमा के विकास के लिए कटिबद्ध है।

Nayan Prasad is a well-known film critic and columnist in Assam. He has also worked with the local radio for many years.
Nayan Prasad has been a theatre activist and amateur theatre director. He has been actively involved with the film society movement in Assam. At present he is involved with a co-operative society which promotes meaningful cinema in the state.

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र पुरस्कार

संघात

निर्माता : **पिनाकी चौधरी** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **पिनाकी चौधरी** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र का 1996 का पुरस्कार **संघात** को समकालीन समाज में कामकाजी महिलाओं को होने वाली मुसीबतों और तकलीफों के प्रभावपूर्ण चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN BENGALI

SANGHAT

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **PINAKI CHAUDHURI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director : **PINAKI CHAUDHURI**

Citation
The Award for the Best Feature Film in Bengali of 1996 is given to **SANGHAT** for effectively bringing out the trials and tribulations faced by working women in contemporary society.

पिनाकी चौधरी विज्ञान स्नातक हैं तथा उन्होंने अपने जीवन की शुरुआत तबला वादक के रूप में की। वे उस्ताद करमातुल्लाह खान के शिष्य रहे हैं। उन्होंने पं. रविशंकर तथा अली अकबर खान जैसे विख्यात संगीतज्ञों के साथ अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं।

उनकी निर्देशित पहली फ़िल्म **चेना अचेना** (1992) व्यावसायिक रूप से बेहद सफल रही। **नरक, बलिदान, अतिक्रम** तथा **वजूद** जैसी उनकी टेली फ़िल्मों ने बहुत नाम कमाया। **अतिक्रम** को तो दर्शकों की मांग पर पुन: प्रसारित किया गया था।

पिनाकी चौधरी ने बंगला और हिन्दी में दूरदर्शन के लिए अनेक धारावाहिकों का निर्देशन भी किया है।

Pinaki Chaudhuri is a science graduate who began life with a passion for tabla-playing. A disciple of Ustad Keramatullah Khan, he has performed as an amateur with maestros Pandit Ravi Shankar and Ustad Ali Akbar Khan, among others.

Pinaki Chaudhuri directed his first feature film **Chena Achena** in 1992, which was a commercial hit. His subsequent works like telefilms, **Narak, Balidaan, Atikram** and **Wazood** have all won critical acclaim. **Atikram** has been a film with repeated telecasts on demand on television.

Pinaki Chaudhury has also directed serials for television in both Bengali and Hindi.

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र पुरस्कार

गुड़िया

निर्माता : **अमित खन्ना** और **महेश भट्ट** को रजत कमल तथा 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **गौतम घोष** को रजत कमल तथा 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र का 1996 का पुरस्कार **गुड़िया** को पारंपरिक विदूषकों के अंतर्जीवन के असाधारण अन्वेषण के लिए दिया गया है जिसमें साथ ही साथ सनक की हद तक सजीव और निर्जीव खिलाड़ियों के आपसी संबंध भी गुंथे हुए हैं।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN HINDI

GUDIA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **AMIT KHANNA** and **MAHESH BHATT**

Citation
The Award for the Best Feature Film in Hindi of 1996 is given to **GUDIA** for an unusual exploration into the lives of traditional entertainers and the entwined relationships between the animate and inanimate players that develop into an obsession.

प्लस चैनल (इंडिया) लिमिटेड में प्रबंध निदेशक तथा समूह संपादक के पद पर कार्य करने वाले **अमित खन्ना** ने 1969 में अपने बहुमुखी कैरियर की शुरूआत कॉपीराइटर के रूप में की। 1971 से 81 तक के दस वर्षों के बीच उन्होंने हिन्दी सिनेमा के दिग्गज देव आनन्द के नवकेतन स्टूडियो में काम किया। 1986 में **बुनियाद** जैसे लंबे और प्रसिद्ध धारावाहिक के वे कार्यकारी निर्माता रहे। उन्होंने अनेक फ़िल्मों और टेलीविज़न कार्यक्रमों का लेखन, निर्माण और निर्देशन किया है तथा अनेक फ़िल्मों और गायकों के लिए गीत-रचना भी की है।

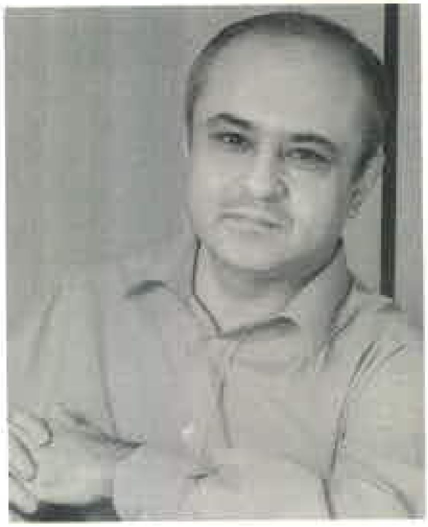

Managing Director & Group Editor of Plus Channel (India) Ltd., **Amit Khanna** began his dynamic career as a copy-writer in 1969. For ten years between 1971-81 he was associated with one of the doyens of Indian cinema, Dev Anand and his studio Navketan. In 1986, **Amit Khanna** was Executive Producer for the long-running popular television serial, "Buniyaad." He has written, produced and directed several films and television shows, as well as composed lyrics for many films and singers.

महेश भट्ट ने अपना फ़िल्मी जीवन निर्माण प्रबंधक के रूप में आरंभ किया। 1974 में उन्होंने अपनी पहली फ़िल्म **मंजिलें और भी हैं** निर्देशित की। फिलहाल, वे एक बड़ी मनोरंजन कंपनी में रचनात्मक निदेशक के रूप में मीडिया के विविध पहलुओं से जुड़े हुए हैं।
महेश भट्ट की **अर्थ** और **सारांश** जैसी फ़िल्मों को कई पुरस्कार तथा आलोचनात्मक प्रशंसा मिली है। उनकी **नाम, सड़क** और **दिल है कि मानता नहीं** जैसी फिल्मों ने व्यावसायिक रूप से तहलका मचा दिया।

Mahesh Bhatt began his film career as a production manager. In 1974 he directed his first film, **Manzilen Aur Bhi Hain.** At present, he is involved in various aspects of media activity as Creative Director in a large entertainment company.
Mahesh Bhatt's film like **Arth** and **Saaransh** received many awards and critical acclaim. While films like **Naam, Sadak, Dil Hai Ki Manta Nahin** have been blockbusters with popular appeal.

गौतम घोष के लब्ध प्रतिष्ठित फ़िल्मी कैरियर में पुरस्कार प्राप्त इन फ़िल्मों की एक लंबी सूची है जो सिनेमा के उच्च-शिखरों को स्पर्श करती है।
गौतम घोष को जिन फ़िल्मों के लिए छह बार राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान हो चुका है वे हैं **मां भूमि** (1980), **दखल** (1982), **पार** (1985), **अन्तर्जली यात्रा** (1988), **पद्मा नदीर मांझी** (1992) और **पतंग** (1993)। उनकी इन्हीं फ़िल्मों ने कान, वेनिस, कारलोवी वारी तथा ताशकंद आदि फिल्म समारोहों में अनेक पुरस्कार जीते तथा सम्मान प्राप्त किया।

Gautam Ghose's illustrious career is a long list of award-winning films which have taken him upto the upper echelons of cinema.
Gautam Ghose has won the National Award six times for his films **Maa Bhoomi** (1980), **Dakhal** (1982), **Paar** (1985), **Antarjali Yatra** (1988), **Padma Nadir Manjhi** (1992) and **Patang** (1993). The same films have also won international awards and acclaim at Cannes, Venice, Karlovyvary and Tashkent Film Festivals.

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र पुरस्कार

अमेरिका! अमेरिका!

निर्माता : **नंदकुमार** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **नागाथिहल्ली चन्द्रशेखर** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र का 1996 का पुरस्कार **अमेरिका! अमेरिका!** को भारत तथा अमेरिका पर लिखी दक्षतापूर्ण कथा के परिपक्व संचालन, अपने-अपने देश तथा सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति प्रेम के विश्लेषण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN KANNADA

AMERICA! AMERICA!

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **G. NANDAKUMAR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **NAGATHIHALLI CHANDRASHEKARA**

Citation
The Award for the Best Kannada Feature Film of 1996 is given to **AMERICA! AMERICA!** for mature handling of a deftly written script set in USA and India holding up love for one's own country and cultural values.

जी. नन्दकुमार एक प्रसिद्ध उद्योगपति होने की वजह से संसार के लगभग सभी देशों में गए हैं। इन यात्राओं से उनके अंदर कला और सामाजिक बोध के प्रति दिलचस्पी उत्पन्न हुई। परिणामस्वरूप वे शिक्षा तथा कला के विकास के लिए विभिन्न संस्थानों से जुड़ गए।

जी. नन्दकुमार ने 1993 में सिनेमा जगत में **चिन्नारी मुथा** के सह-निर्माता के रूप में शुरूआत की। फ़िल्म को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। फिलहाल वे अपने बैनर विश्वप्रिया फ़िल्म्स के तहत स्वतंत्र निर्माता के रूप में कार्य कर रहे हैं। 1994 में उनकी फ़िल्म **कोतरेशी कनसु** को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

G. Nandakumar's career as a businessman has taken him to various parts of the world. His travels generated an interest in social issues as well as the arts. As a result he has been associated with many institutions to promote education and the arts.

G. Nandakumar ventured into the world of film in 1993 as a co-producer of **Chinnari Mutha** which won a National Award. He is now an independent producer working under his own banner Vishwapriya Films. His film, **Kotreshi Kanasu** won the National Award in 1994.

नागाथिहल्ली चन्द्रशेखर, चन्द्रू के नाम से विख्यात हैं। वे एक अध्यापक के पुत्र हैं। उन्होंने अपना कैरियर लघुकथा तथा उपन्यास लेखन से आरंभ किया।

चन्द्रू का फ़िल्म कैरियर **उद्भाव, प्रथम उषाकिरण, मधुमास, अमानुष** आदि फ़िल्मों में पटकथा, गीत और संवाद लेखन से आरंभ हुआ।

चन्द्रू की पहली फ़िल्म **उंडु होडा कोन्डु होडा** को सर्वोत्तम कथा के लिए राज्य पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनकी निर्देशित फ़िल्म **कोतरेशी कनसु** को 1994 का राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया था।

Nagathihalli Chandrashekara, popularly known as **Chandru** is the son of a teacher. He began his career as a writer of short stories and novels. **Chandru's** career in films began with writing screenplays songs and dialogues for **Udhbhava, Prathama Ushakirana, Madhumasa, Amanusha** among others.

Undu Hoda, Kondu Hoda was **Chandru's** maiden feature film which won a state Award for Best Story. **Kotreshi Kanasu** directed by him won the National Award in 1994.

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र पुरस्कार

देसाडनम्

निर्माता : **जयराज** को रजत कमल तथा 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **जयराज** को रजत कमल तथा 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र का 1996 का पुरस्कार **देसाडनम्** को धार्मिक विश्वासों के मध्य प्रेम और पारंपरिक कर्तव्यों तथा बंधनों के बीच द्वंद्वों के उत्कृष्ट एवं हृदयस्पर्शी निरूपण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN MALAYALAM

DESADANAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **JAYARAAJ**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director : **JAYARAAJ**

Citation
The Award for the Best Feature Film in Malayalam of 1996 is given to **DESADANAM** for depicting in an excellent manner the conflicts between love, traditional bonds and duties, arising out of religious beliefs.

केरल निवासी **जयराज** ने इलेक्ट्रानिकी तथा टेली-कम्यूनिकेशन्स इंजीनियरिंग में स्नातक की शिक्षा ली है। उनकी फ़िल्में 1992 से लगातार राष्ट्रीय तथा राज्यस्तरीय पुरस्कार प्राप्त कर रही हैं।

कुटुम्बासमेतम ने केरल में पटकथा, संगीत, छायांकन के पुरस्कारों के अलावा सर्वोत्तम द्वितीय फ़िल्म का पुरस्कार भी प्राप्त किया। **पैथरूकम्** (1993) तथा **सोपानम्** (1994) को भी अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। केरल राज्य सरकार की ओर से **देसाडनम्** को सर्वोत्तम निर्देशक के पुरस्कार के सहित सात अन्य पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।

Jayaraaj belonging to Kerala is a graduate of Electronics and Telecommunication Engineering. Since 1992 his films have consistently received awards at the state and national levels.

Kudumbasametham (1992) received the second Best Film Award in Kerala along with other awards for screenplay, music, cinematography. **Paithrukam** (1993) and **Sopanam** (1994) have similarly received various awards. **Desadanam** has received seven awards, including the Best Director Award, from the Kerala State Government.

सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र पुरस्कार

राव साहेब

निर्माता : **के.बी. जोशी** और **रवीन्द्र सुर्वे** को रजत कमल तथा प्रत्येक को 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **संजय सूरकर** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र का 1996 का पुरस्कार **राव साहेब** को महत्वाकांक्षी राजनीतिज्ञों के सत्ता-संघर्ष के अत्यंत प्रभावपूर्ण प्रस्तुतीकरण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN MARATHI

RAO SAHEB

Rajat Kamal and a joint cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **K.B. JOSHI** and **RAVINDRA SURVE**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director : **SANJAY SURKAR**

Citation
The Award for the Best Feature Film in Marathi of 1996 is given to **RAO SAHEB** for depicting the struggle for power of ambitious politicians in a most effective manner.

के.बी. जोशी पिछले 15 वर्षों से मराठी रंगमंच से जुड़े हैं। **साहेब विरुद्ध मी** तथा **फुलरानी** उनके विख्यात नाटक हैं। उन्होंने फीचर फ़िल्म **मामला पोरिन्चा** के साथ-साथ **अधंतरी** और **वर्गावाड़ी** जैसे टेलीविज़न सीरियलों का भी निर्माण किया है।

K.B. Joshi has been involved in the field of Marathi theatre for over 15 years. The notable plays produced by him are **Saheb Vriddha Me** and **Tee Phulrani.** He has also produced the television serials **Adhantari** and **Vargawari** as well as the feature film **Mamla Porincha.**

आर.डी. सुर्वे कला-स्नातक हैं। एक दशक तक उद्योगपति रहने के बाद वे स्थानीय मराठी सिनेमा में अपनी रुचि के कारण फ़िल्म निर्माण से जुड़े।

R.D. Surve is a graduate of Arts. For a decade he has been a businessman. His interest in producing films is linked with his interest in local Marathi cinema.

संजय सूरकर ने 1983 में कामर्स में स्नातक तक शिक्षा ली, तत्पश्चात् फाईन आर्ट्स में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने ड्रामेटिक्स में विशेषज्ञता हासिल की। मराठी रंगमंच से उनका गहरा जुड़ाव है।

1990-96 के मध्य **संजय सूरकर** ने अनेक टेलीविजन धारावाहिकों का निर्देशन किया। **एक हाथाची ताली** तथा **राऊ** को दर्शकों में लोकप्रियता तथा अनेक पुरस्कार भी मिले। उनकी फीचर फ़िल्मों में **चंकट राजा** (1991) को आलोचनात्मक ख्याति, **आपली मनसा** (1992) को सर्वोत्तम फ़िल्म का राज्यस्तरीय पुरस्कार तथा **यादना** को सात पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

After graduating in Commerce in 1983, **Sanjay Surkar** did his masters in the Fine Arts, where he specialised in Dramatics. He has had a long association with the Marathi stage.

Between 1990-96, **Sanjay Surka** directed television serials like **Ek Hatachi Tali and Raoo** which got popular viewing and won awards. Among his feature films, **Chaukat Raja** (1991) received critical acclaim; **Apali Mansa** (1992) won the state-level Best Film Award and **Yadna** received Seven awards in all.

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र पुरस्कार

शून्य स्वरूप

निर्माता : **अलय कुमार मोहंती** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **हिमांशु शेखर खतुआ** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र का 1996 का पुरस्कार **शून्य स्वरूप** को संन्यासियों के बीच एक सामान्य जन की छटपटाहट के द्वंद्वों को बेहतरीन खूबसूरती से चित्रित करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN ORIYA

SHUNYA SWAROOPA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **ALAYA KUMAR MOHANTY**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director : **HIMANSHU SEKHAR KHATUA**

Citation
The Award for the Best Film in Oriya of 1996 is given to **SHUNYA SWAROOPA** for a beautifully photographed film depicting the conflicts of a layman floundering in the world of sanyasias.

अलय कुमार मोहंती ने अपना कैरियर संगीत नाटक अकादमी, उड़ीसा से एक रचनात्मक प्रशिक्षु के रूप में आरंभ किया। अपने शुरुआती दौर में वे एक पत्रकार, अभिनेता तथा सामाजिक कार्यकर्ता रहे।

तदुपरांत **अलय कुमार मोहंती** ने **मरीचिका** नामक प्रसिद्ध टेलीविज़न धारावाहिक का निर्माण किया। उनकी पहली फीचर फ़िल्म **आशा** ने सात राज्यस्तरीय पुरस्कार अर्जित किए। **शून्य स्वरूप** उनकी दूसरी फीचर फ़िल्म है।

Alaya Kumar Mohanty began his creative training as a student of the Sangeet Natak Academy in Orissa. Earlier he was a journalist, social worker, and actor.

Subsequently, **Alaya Kumar Mohanty** produced a popular television serial, **Marichika.** His first feature film, **Asha** (1993), winning five state-level awards. **Shunya Swaroopa** is his second feature film.

हिमांशु शेखर खतुआ को भारतीय फ़िल्म और टेलीविज़न संस्थान, पुणे से डिप्लोमा प्राप्त है। फ़िल्म के कला पक्ष में विशेष रुचि होने के फलस्वरूप वे फ़िल्म सोसायटी के सक्रिय सदस्य हैं।

उन्होंने अनेक प्रतिष्ठित वृत्तचित्रों, टेलीफिल्मों तथा फीचर फ़िल्मों में ध्वनि–आलेखन का कार्य किया है। **शून्य स्वरूप** उनकी निर्देशित पहली फीचर फ़िल्म है।

Himanshu Sekhar Khatua is a diploma-holder from the Film and Television Institute of India, Pune. He has also been an active member of a Film Society with keen interest in films as art.

Himanshu Sekhar Khatua has worked as an audiographer in many prestigious documentary films, telefilms and a feature film. **Shunya Swaroopa** is his maiden directorial venture in feature films.

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र पुरस्कार

कातल कोत्तई

निर्माता : **डी. पांडियन** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **अहातियन** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र का 1996 का पुरस्कार **कातल कोत्तई** को एक बेहद मनोरंजक ढंग से पिरोई गई मनोहर प्रेम कथा के लिए दिया गया है जिसमें भाग्य के अस्वाभाविक मोड़ और पेंच हैं।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN TAMIL

KAATHAL KOTTAI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **D. PANDIAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director : **AHATHIAN**

Citation
The Award for the Best Feature Film in Tamil of 1996 is given to **KAATHAL KOTTAI** for a charming love story with unusual twists and turns of fate told in an interesting manner with good production values.

डी. पांडियन चेन्नई के एक युवा निर्माता हैं।

D. Pandian is a young producer from Chennai.

एस. अहातियन ने चेन्नई से कला में स्नातकोत्तर किया है।

S. Ahathian holds a post-graduate degree in Arts from Chennai.

सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र पुरस्कार

निण्णे पेल्लाड़ता

निर्माता : **अक्कीनेनी नागार्जुन** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **कृष्ण वंशी** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र का 1996 का पुरस्कार **निण्णे पेल्लाड़ता** को समकालीन विषय पर पारिवारिक घटनाचक्र का बेहद नवीनता से प्रस्तुतीकरण करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN TELUGU

NINNE PELLADATHA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **AKKINENI NAGARJUNA**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000/- to the Director : **KRISHNA VAMSI**

Citation
The Award for the Best Feature Film in Telugu of 1996 is given to **NINNE PELLADATHA** for the innovative way in which a family drama with the contemporary theme is handled.

नागार्जुन अक्किनेनी लगभग दस वर्षों से दक्षिण भारतीय फ़िल्मों के एक लोकप्रिय अभिनेता हैं। वे मिशिगन यूनीवर्सिटी से इंजीनियरिंग में स्नातक हैं। अपने कैरियर की शुरुआत से ही उनके प्रेरणास्रोत उनके पिता श्री अक्किनेनी नागेश्वर राव रहे, जो स्वयं तेलुगु सिनेमा के महारथी रहे हैं। अभिनय के बाद उन्होंने फ़िल्म निर्माण की तरफ़ रुख किया और पारिवारिक मनोरंजन से भरपूर **शिशिन्द्री** बनाई। इस फ़िल्म में उनके छोटे बेटे अखिल को उसकी बेहतरीन अदाकारी के लिए अनेक पुरस्कार मिले। उनकी दूसरी फ़िल्म **निण्णे पेल्लाड्ता** स्वस्थ मनोरंजन पर आधारित है। मनोहारी दृश्यों और मनभावन गीतों के अद्भुत प्रस्तुतीकरण ने फ़िल्म को संगीतमय सफलता दिलाई है।

After graduating as an engineer from the University of Michigan, **Nagarjuna Akkineni** was one of the most popular actors of South India for nearly ten years. Right through his career his inspiration has been his father, one of the doyens of Telugu Cinema, Shri Akkineni Nageshwara Rao. After acting, he moved into the field of production. Stressing on the value of wholesome family entertainment, he produced **Sisindri**. His little son, Akhil, won many awards for his performance in the film.

Ninne Pelladatha is **Nagarjuna Akkineni's** second attempt at clean entertainment. The film, with song-sequences shot in exotic locations, has been a musical hit.

कृष्णा वंशी की बचपन से ही फ़िल्मों में गहरी दिलचस्पी रही है और जिन परंपराओं से वे संबंध रखते हैं उनकी संवेदनशील समझ उनमें विकसित हुई है। उन्होंने अपने फ़िल्मी कैरियर की शुरुआत सुविख्यात फ़िल्मकारों के सान्निध्य में सहायक निर्देशक के रूप में की। उनकी स्वतंत्र रूप से निर्देशित पहली फ़िल्म **गुलाबी** ने परिवार तथा युवाओं को समान रूप से प्रभावित किया। **निण्णे पेल्लाड्ता** में उन्होंने सफल व्यावसायिकता और स्वस्थ पारिवारिक मनोरंजन का सामंजस्य स्थापित किया है।

Krishna Vamsi's keen interest in films since childhood is accompanied by a sensitive understanding of the traditions he belongs to.

Krishna Vamsi began his film career as assistant director under well-known film-makers. His first independent feature film, **Gulabi,** appealed to youth and family alike. In **Ninne Pelladatha** he has endeavoured towards clean family entertainment which can as well be a commercial success.

सर्वोत्तम उर्दू कथाचित्र पुरस्कार

सरदारी बेगम

निर्माता : **अमित खन्ना** और **महेश भट्ट** को रजत कमल तथा प्रत्येक को 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **श्याम बेनेगल** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम उर्दू कथाचित्र का 1996 का पुरस्कार **सरदारी बेगम** को एक युग को मूर्त करने तथा सभी रूढ़िवादी और कट्टरपंथी मूल्यों को नकार कर एक कलाकार की संगीत के प्रति सत्यनिष्ठा को भाव-प्रवण ढंग से उकेरने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN URDU

SARDARI BEGUM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **AMIT KHANNA & MAHESH BHATT**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director : **SHYAM BENEGAL**

Citation
The Award for the Best Film in Urdu of 1996 is given to **SARDARI BEGUM** for excellent recreation of an era and showing dedication of an artist to music that defies all orthodox and conservative values.

प्लस चैनल (इंडिया) लिमिटेड में प्रबंध निदेशक तथा समूह संपादक के पद पर कार्य करने वाले **अमित खन्ना** ने 1969 में अपने बहुमुखी कैरियर की शुरुआत कॉपीराइटर के रूप में की। 1971 से 81 तक के दस वर्षों के बीच उन्होंने हिन्दी सिनेमा के दिग्गज देव आनन्द के नवकेतन स्टूडियो में काम किया। 1986 में **बुनियाद** जैसे लंबे और प्रसिद्ध धारावाहिक के वे कार्यकारी निर्माता रहे। उन्होंने अनेक फ़िल्मों और टेलीविजन कार्यक्रमों का लेखन, निर्माण और निर्देशन किया है तथा अनेक फ़िल्मों और गायकों के लिए गीत-रचना भी की है।

महेश भट्ट ने अपना फ़िल्मी जीवन निर्माण प्रबंधक के रूप में आरंभ किया। 1974 में उन्होंने अपनी पहली फिल्म **मंजिलें और भी हैं** निर्देशित की। फिलहाल, वे एक बड़ी मनोरंजन कंपनी में रचनात्मक निदेशक के रूप में मीडिया के विविध पहलुओं से जुड़े हुए हैं।

श्याम बेनेगल ने अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर करने के बाद बोस्टन में डब्ल्यू जी वी एच के लिए बतौर सहायक निर्माता कार्य किया। 1973 से अब तक उनका गौरवपूर्ण फ़िल्मी कैरियर रहा है।
अंकुर (1973) को तीन राष्ट्रीय तथा देश-विदेश में 43 पुरस्कार मिले। **निशांत** (1975), **मंथन** (1976), **भूमिका** (1977), **जुनून** (1978), **कलयुग** (1981) उनकी कुछ ऐसी फिल्में हैं जिन्होंने देश-विदेश में उनकी विस्तृत पहचान बनाई और सम्मान दिलाया।
श्याम बेनेगल निर्देशित **द मेकिंग ऑफ द महात्मा** को 1996 का निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार तथा सर्वोत्तम अंग्रेजी कथाचित्र का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

Managing Director & Group Editor of Plus Channel (India) Ltd., **Amit Khanna** began his dynamic career as a copy-writer in 1969. For ten years between 1971-81 he has associated with one of the doyens of Indian cinema Dev Anand and his studio, Navketan. In 1986, **Amit Khanna** was Executive Producer for the long-running popular television serial, **Buniyaad.** He has written, produced and directed several films and television shows, as well as composed lyrics for many films and singers.

Mahesh Bhatt began his film career as a production manager. In 1974 he directed his first film, **Manzilen Aur Bhi Hain.** At present, he is involved in various aspects of media activity as Creative Director in a large entertainment company.

A post-graduate in Economics, **Shyam Benegal** went on to work as an associate producer for WGBH in Boston. Since 1973 he has an illustrious career in film-making.
Ankur (1973) won three National Awards and 43 prizes in India and abroad. **Nishant** (1975), **Manthan** (1976), **Bhumika** (1977), **Junoon** (1978), **Kalyug** (1981) are among his several films which have received widespread acclaim at the national and international-levels. In 1996, **The Making of the Mahatma,** directed by **Shyam Benegal** received the Special Jury Award and the Award for Best Film in English.

विशेष उल्लेख

संघात में डोलोन रॉय

और

अदाज्या में भागीरथी

प्रशस्ति
निर्णायक मंडल ने **डोलोन रॉय** का बंगला फ़िल्म **संघात** में तथा दुर्गा के चरित्र को निबाहने के लिए **भागीरथी** का असमिया फ़िल्म **अदाज्या** में विशेष उल्लेख किया है।

SPECIAL MENTION

DOLON ROY in SANGHAT, and BHAGIRATHEE in ADAJYA

Citation
The Jury would also like to make special mention of the performance of **DOLON ROY** in **SANGHAT** and **BHAGIRATHEE** in Durga's role in the Assamese Film **ADAJYA.**

डोलोन रॉय ने प्राणि-विज्ञान में स्नातक की शिक्षा पूरी करने के बाद कंप्यूटर्स में अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त वे 1986 से ग्रुप थिएटर से जुड़ी हुई हैं।
डोलोन रॉय व्यावसायिक तौर पर 1981 में थिएटर से जुड़ीं। तत्पश्चात उन्होंने टेलीफिल्मों **बलिदान, वजूद, छुट्टी नामंजूर** और **अतिक्रम** में मुख्य भूमिकाएं कीं।

Dolon Roy is a graduate in Zoology with further qualification in computers. Apart from this, she had been working in group theatre from 1986.
Dolon Roy joined professional theatre in 1991. Subsequently she worked in lead roles for Telefilms like **Balidaan, Wazood, Chhutti Namazoor,** and **Atikram.**

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली से स्नातक **भागीरथी** ने अभिनय में विशेषज्ञता प्राप्त की है। उन्होंने तीस से अधिक नाटकों में मुख्य किरदार अभिनीत किए हैं। भारत तथा विश्व के अन्य देशों में भी वे रंगमंच के कार्य के तहत जाती रही हैं। वे असम में अपना रंगमंच विद्यालय भी चलाती हैं। **भागीरथी** की पहली फीचर फिल्म **अदाज्या** है।

Bhagirathee graduated from the National School of Drama, New Delhi, with a specialisation in acting. She has acted in the lead role in over thirty plays. Her theatre work has taken her to different parts of India and the world. She also runs a theatre school in Assam. **Adajya** is Bhagirathi's debut in feature films.

पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम पुरस्कार नहीं दिया गया है।

Award not given for the Best Feature Film on Environment/Conservation/Preservation Film.

ग़ैर-कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Non-Feature Films

सर्वोत्तम ग़ैर-कथाचित्र पुरस्कार

शैम्स विज़न (अंग्रेजी)

निर्माता : **मनु ग्रोवर** को स्वर्ण कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **शाजी एन. करुण** को स्वर्ण कमल तथा 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम ग़ैर-कथाचित्र का 1996 का पुरस्कार **शैम्स विज़न** को एक कलाकार की अन्तर्निहित चेतना, जिससे उसका बाह्य जगत का अंधेरा प्रकाशमय हो जाता है, के सजीव चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM

SHAMS VISION (ENGLISH)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **MANU GROVER**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director : **SHAJI N. KARUN**

Citation
The Award for the Best Non-Feature Film of 1996 is given to **Shams Vision** for its moving portrayal of an artist's rich inner vision which lights his outer world of darkness.

मनु ग्रोवर ने वर्ष 1987 में वाणिज्य में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। श्री शम्सुद्दीन से अचानक हुई मुलाकात उनके रचनात्मक क्षेत्र में प्रवेश का सबब बनी। जिन्होंने उन्हें रेशमी धागे की कढ़ाई में दक्ष कलाकारों पर फ़िल्म बनाने के लिए प्रेरित भी किया।

Manu Grover is a 1987 graduate of commerce. A chance encounter with Shri Shamsuddin opened the door to the intricacies of creative work. And inspired **Manu Grover** to produce a film on the artist who excels in silk thread embroidery. **Shams Vision** is the first film produced by him.

छायाकार से निर्देशक बने **शाजी एन. करुण** भारतीय फ़िल्म और टेलीविजन संस्थान, पुणे के डिप्लोमा धारक हैं। उनकी पहली फीचर फ़िल्म **पिरवी** और दूसरी **स्वाहम्** को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली है।

Shaji N. Karun, a diploma-holder from the Film Television Institute of India, Pune, is a cinematographer-turned-director. His first film **Piravi** won the National Award in 1988. **Piravi** and his subsequent film, **Swaham** have also won international critical acclaim.

निर्देशक का सर्वोत्तम ग़ैर-कथाचित्र पुरस्कार

यह वो शहर तो नहीं (हिन्दी)

निर्माता : निदेशक, भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान, पुणे को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **सुधाकर राव** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
निर्देशक के प्रथम सर्वोत्तम ग़ैर कथाचित्र का 1996 का पुरस्कार **यह वो शहर तो नहीं** को बाहरी तनावों के प्रति आदमी के अन्तर्विवादों को ध्वनि तथा दृश्य माध्यम के जरिए चित्रित करने के कल्पनाशील प्रयोग के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FIRST NON-FEATURE FILM OF A DIRECTOR

YEH WOH SAHAR TO NAHIN (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : Director, FTII, Pune

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **SUDHAKAR RAO**

Citation
The Award for the Best First Non-Feature Film of 1996 is given to **Yeh Woh Sahar To Nahin** for its imaginative use of sound and visuals to capture the under-currents of human response to outer tensions.

वी. सुधाकर राव ने फ़िल्म अध्ययन के क्षेत्र में आने से पूर्व मेकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा किया है। कालांतर में उन्होंने फ़िल्म एंड वीडियो प्रोडक्शन में डिप्लोमा प्राप्त किया तथा भारतीय फ़िल्म और टेलीविजन संस्थान, पुणे से फ़िल्म निर्देशन में विशेषज्ञता हासिल की।

V. Sudhakar Rao, first did his diploma in mechanical engineering, before he moved into the area of studying films. Subsequently, he got a diploma in Film & Video Production. And later specialised in film direction at the Film and Television Institute of India, Pune.

सर्वोत्तम जीवनी संबंधी फ़िल्म पुरस्कार

हस्तिर कन्या (असमिया)

निर्माता : **दिग्विजय मेधी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **प्रवीण हजारिका** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम जीवनी संबंधी फ़िल्म का 1996 का पुरस्कार **हस्तिर कन्या** को गौरीपुर, असम की गायिका प्रतिमा बरुआ पांडे के जीवन के माध्यम से गोलपरिया लोक-संगीत के संसार के अन्वेषण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST BIOGRAPHICAL FILM

HASTIR KANYA (ASSAMESE)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **DIGBIJAY MEDHI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **PRABIN HAZARIKA**

Citation
The Award for the Best Biographical Film of 1996 is given to **HASTIR KANYA** for exploring the world of Goalpariya folk music through the life of singer Pratima-Borooah Pandey of Gauripur, Assam.

दिग्विजय मेधी का जन्म असम में वर्ष 1976 में हुआ। उन्होंने अपने कैरियर की शुरुआत दूरदर्शन धारावाहिकों के निर्माण से की। **हस्तिर कन्या** उनके द्वारा निर्मित पहला वृत्तचित्र है।

Digbijay Medhi was born in 1976 in Assam. He began his career with the production of television serials. **Hastir Kanya** is his first documentary production.

प्रवीण हजारिका असम के दूरदर्शन एवं फिल्मों के अनेक प्रसिद्ध निर्देशकों के साथ बतौर मुख्य सहायक निर्देशक का कार्य कर चुके हैं। उन्होंने **शेष निशार जोनक** और **बी मनूह** टेली फ़िल्मों और दो दूरदर्शन धारावाहिकों **आई चाहराते** तथा **दीपून** का स्वतंत्र तौर पर निर्देशन किया है। **हस्तिर कन्या** उनकी पहली फ़िल्म है।

Prabin Hazarika worked as chief assistant director under many well-known television and film directors of Assam. He has also independently directed the telefilms, **Sesh Nishar Jonak** and **Bea Manooh,** as well as two television serials, **Eai Chaharate** and **Depoon. Hastir Kanya** is his maiden film venture.

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म पुरस्कार

नौका चरितरामू (अंग्रेजी)

निर्माता : **सरोज सत्यनारायण** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **सरोज सत्यनारायण** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म का 1996 का पुरस्कार **नौका चरितरामू** को कर्नाटक शैली की तीन महिला संगीतज्ञों के परिवर्तनकारी सिनेमाई चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ARTS/CULTURAL FILM

NAUKA CHARITRAMU (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **SAROJ SATYANARAYAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **SAROJ SATYANARAYAN**

Citation
The Award for the Best Arts/Cultural Film of 1996 is given to **NAUKA CHARITRAMU** for its innovative cinematic portrayal of three women-musicians of Carnatic tradition.

सरोज सत्यनारायण शुरू में थिएटर तदुपरांत विज्ञापन-क्षेत्र से जुड़ीं। उनकी शास्त्रीय तथा अन्य कलाओं में भी गहन रुचि है। **नौका चरितरामू** उनकी गैर कथाचित्र निर्माता के तौर पर पहली फ़िल्म है।

Saroj Satyanarayan's early career was associated with theatre, and later advertising. She is also deeply interested in the classical and performing arts. **Nauka Charitramu** is her major debut as a documentary film-maker.

मद्यनिषेध, महिला और बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों से हानियां, विकलांग कल्याण आदि जैसे सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार

साइलेन्ट स्क्रीम्स : ए विलेज क्रॉनिकल (अंग्रेजी)

निर्माता : **जोस सेबेस्तियन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **ओ.के. जॉनी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म का 1996 का पुरस्कार **साइलेन्ट स्क्रीम्स : ए विलेज क्रॉनिकल** को त्रिनेल्ली, केरल की आदिवासी महिलाओं की यंत्रणा को गहन संवेदनशीलता तथा मार्मिकता से उजागर करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES

(Such as Prohibition, Women and Child Welfare, and Dowry, Drug Abuse, Welfare of the Handicapped, etc.)

SILENT SCREAMS : A VILLAGE CHRONICLE (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **JOSE SEBASTIAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **O.K. JOHNNY**

Citation
The Award for the Best Film on Social Issues of 1996 is given to **SILENT SCREAMS : A VILLAGE CHRONICLE** for highlighting with sensitivity and sincerity the agony of the tribal women of Thrinelli, Kerala.

जोस सेबेस्तियन एक सामाजिक संस्था से जुड़े हैं। वे अब तक तीन गैर कथाचित्रों का निर्माण कर चुके हैं। उनकी पहली फ़िल्म **द इनहेरिटर्स ऑफ दि अर्थ** को देश-विदेश के अनेक अंतरराष्ट्रीय समारोहों में प्रदर्शित किया गया है। **जोस सेबेस्तियन** द्वारा निर्मित **साइलेंट स्क्रीम्स : ए विलेज क्रानिकल** को सर्वोत्तम वृत्तचित्र का राज्य-स्तरीय पुरस्कार मिला है।

Jose Sebastian who is associated with a social action organisation has produced three documentaries. His first film, **The Inheritors of the Earth** was screened at many national and international film festivals. **Silent Screams : A Village Chronicle** has won the state-level Award for the Best Documentary.

ओ.के. जॉनी एक प्रतिष्ठित लेखक हैं। मलयालम भाषा के प्रसिद्ध स्तंभकार होने के साथ-साथ फ़िल्म और मीडिया समीक्षक भी हैं। उन्होंने फ़िल्म पर दो पुस्तकें लिखी हैं। वर्ष 1995 में उनकी पहली फ़िल्म **द ट्रैप्ड** को सर्वोत्तम मानव शास्त्रीय फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। **ओ.के. जॉनी** निर्देशित **साइलेंट स्क्रीम्स : ए विलेज क्रॉनिकल** को सर्वोत्तम वृत्तचित्र का राज्य-स्तरीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह उनकी दूसरी फ़िल्म है।

O.K. Johnny is a writer of repute. He is a known columnist in Malayalam and a film and media critic. He has also written two books on films. His first film, **The Trapped** received the National Award for the Best Anthropological Film in 1995. **Silent Screams : A Village Chronicle** which has won the state-level award for Best Documentary is **O.K. Johnny's** Second directorial venture.

सर्वोत्तम शैक्षणिक/अभिप्रेरक फ़िल्म पुरस्कार

राबिया चैलिकुन्नू (मलयालम)

निर्माता : **अब्राहम बेनहूर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **अली अकबर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम शैक्षणिक/अभिप्रेरक फ़िल्म का 1996 का पुरस्कार **राबिया चैलिकुन्नू** को एक युवा लड़की के विश्वसनीय एवं प्रेरक चित्रण के लिए दिया गया है। जिसमें वह अपनी शारीरिक और सामाजिक अक्षमता से उबरकर समाज में आदर्श प्रस्तुत करती है।

AWARD FOR THE BEST EDUCATIONAL/ MOTIVATIONAL, INSTRUCTIONAL FILM

RABIA CHALIKKUNNU (MALAYALAM)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **ABRAHAM BENHUR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **ALI AKBAR**

Citation
The Award for the Best Motivational Film of 1996 is given to the film **RABIA CHALIKKUNNU** for its credible and inspiring portrayal of a young girl who overcomes her physical and social disabilities and becomes a role model for society.

अब्राहम बेनहूर एक किसान परिवार से हैं और केरल के वायनाड जिले के अंतर्गत एक सुदूर छोटे से कस्बे में रहते हैं। उन्होंने अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की है। प्रकृति और समाज में उनकी गहरी दिलचस्पी है।

अब्राहम बेनहूर ने संरक्षण और सामाजिक उत्थान के लिए एक संस्था का निर्माण किया है। वे दृश्य माध्यम को इसके संवर्द्धन में उपयोगी और प्रभावी माध्यम मानते हैं। **राबिया चैलीकुन्नू** निर्देशन में उनका प्रथम प्रयास है।

Abraham Benhur, belonging to a peasant family, lives in a small town in the remote Wynad district of Kerala. He is a post-graduate in economics with a keen interest in nature and society.

Abraham Benhur has set-up an organisation supporting the cause of conservation and social upliftment. He considers the visual medium an effective tool in this work. **Rabia Chalikkunnu** is the first attempt in that direction.

केरल में जन्मे **अली अकबर** वाणिज्य स्नातक हैं। अपने कैरियर के शुरुआती दौर से ही वे समर्पित रंगमंच कार्यकर्ता रहे और बाद में उन्होंने फ़िल्म निर्माण में डिप्लोमा किया।

अली अकबर की पहली फीचर फ़िल्म **मामलाक्कप्पमथ** ने राज्य-स्तरीय पुरस्कार जीता। तदुपरांत, उन्होंने चार फीचर फ़िल्में और दूरदर्शन धारावाहिकों का निर्माण किया। **राबिया चैलीकुन्नू** उनकी पहली गैर-फीचर फ़िल्म है।

Born in Kerala, **Ali Akbar** is a commerce graduate. A dedicated theatre activist in his early years, he later did his diploma in film-making.

Ali Akbar's maiden venture, a feature film **Mamalakalkkappmath** won the state-level award. He subsequently made four more feature films and television serials as well. Rabia Chalikkunnu is his first documentary.

सर्वोत्तम खोजी फ़िल्म पुरस्कार

समाचार पत्रिका सं. 309 भिवंडी ट्रैजडी (अंग्रेजी)

निर्माता : **यश चौधरी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **वी. पैकिरी स्वामी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम खोजी फ़िल्म का 1996 का पुरस्कार **समाचार पत्रिका सं. 309 भिवंडी ट्रैजडी** (अंग्रेजी) को प्रवासी औद्योगिक कामगारों को होने वाली स्वास्थ्य विषमताओं के अन्वेषण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST INVESTIGATIVE FILM

N.M. NO. 309 BHIWANDI TRAGEDY (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **YASH CHAUDHARY**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **V. PACKIRI SWAMY**

Citation
The Award for the Best Investigative Film of 1996 is given to the film **N.M. No. 309 BHIWANDI TRAGEDY** for the exploration of the issue of health hazards faced by migrant industrial workers.

यशपाल चौधरी को पुणे की फ़िल्म और टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ़ इण्डिया का स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त है। रेडियो तथा रंगमंच का भी उन्हें वैविध्यपूर्ण अनुभव है।
1971 से यशपाल चौधरी को कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिलते रहे हैं। उनकी कुछ पुरस्कृत फ़िल्में हैं, **आनंद भवन** (1992), **मोर दैन अ सकसेस स्टोरी** (1989), **सोहराब मोदी** (1990) और **स्टोरी ओफ़ टेन विलेजीस** (1993) भारतीय पैनोरमा के लिए चुनी गई थीं।

Yash Pal Chaudhary is a post-graduate diploma-holder from the Film & Television Institute of India, Pune. He has diverse experience in radio and theatre as well.
Yash Pal Chaudhry has won several national and international awards since 1971. Among his awarded films are **Anand Bhavan** (1992), **More than a Success Story** (1989) etc. His films like **Sohrab Modi** (1990) and **Story of Ten Villages** (1993) were selected for the Indian Panorama.

तमिलनाडु के एक छोटे से गांव में जन्मे **वी. पैकिरी स्वामी** मद्रास विश्व विद्यालय से अर्थशास्त्र के स्नातक हैं। मद्रास की फ़िल्म एण्ड टेलीविज़न इंस्टीट्यूट ऑफ तमिलनाडु उन्होंने तीन साल का फ़िल्म निर्देशन और पटकथा लेखन का डिप्लोमा कोर्स किया। 1986 में डिप्लोमा मिलने के बाद उन्होंने तमिल मेनस्ट्रीम सिनेमा में लोकप्रिय निर्देशक उदय कुमार के साथ काम किया। 1989 में वे फ़िल्म्स डिवीज़न में आए। इसके बाद उन्होंने कई न्यूज़ मेगेजीन और वृत्त चित्रों का निर्माण किया है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों के लिए उनकी फिल्में पसंद की गई। **लोस्ट चाइल्डहुड**को डमास्कस, सीरिया में 9वें फ़िल्म समारोह में उनको कांस्य पदक दिया गया।

Hailing from a remote village in Tamil Nadu, **V. Packiri Swamy** (age 33) is an Economics graduate from the Madras University. After completing a 3 year diploma course in Film Direction and Screenplay writing in 1986 from Film and Television Institute of Tamil Nadu, Madras, he worked with Udaykumar, a popular director in Tamil Mainstream cinema. He joined Films Division in 1989, Since then he has made several News magazines and Documentaries. His films were selected for many national and international film festivals. His film on child labour **Lost Childhood** won the Bronge medal at the 9th Film Festival fo Damascus Syria in 1995.

सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म पुरस्कार

द लॉस्ट हॉराइजन (केवल संगीत)

निर्माता : **अरुण गोंगडे** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **अरुण गोंगडे** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

कार्टूनकार : **अरुण गोंगडे** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म का 1996 का पुरस्कार **द लॉस्ट हॉराइजन** को एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय संदेश को वर्ली लोक कला तथा कार्टून के रचनात्मक संश्लेषित रूप में अभिव्यक्त करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ANIMATION FILM

THE LOST HORIZON (ONLY MUSIC)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **ARUN GONGADE**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **ARUN GONGADE**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Animator : **ARUN GONGADE**

Citation
The Award for the Best Animation Film of 1996 is given to the film **THE LOST HORIZON** for its creative synthesis of animation with Warli folk art in conveying a vital environmental message.

अरुण गोंगडे पहले कमर्शियल आर्ट के विद्यार्थी थे। वर्तमान में वे फ़िल्म प्रभाग, मुंबई के कार्टून फ़िल्म विभाग के प्रभारी हैं।

अरुण गोंगडे अपने एनीमेशन कौशल के लिए अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। **विदाई** (1984), **अबसी** (1987), **एंड गेम** (1988), **लॉस्ट हॉरिजन** (1997) इनमें प्रमुख हैं। **अबसी** तथा **एंड गेम** को तेहरान अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में गोल्डन स्टेचुएट तथा सिल्वर स्टेचुएट से सम्मानित किया गया है।

Arun Gongade was a student of commercial art. He is now in-charge of the cartoon film unit at the Films Division in Mumbai.

Over the years, **Arun Gongade** has received many National Awards for his animation skills. Among them are, **Bidaai** (1984), **Absee** (1987), **End Game** (1988), **Lost Horizon** (1997). Of these **Absee** and **End Game** respectively, received the Golden Statuette and Silver Statuette at the Tehran International Film Festival.

निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार

नीलोत्पल मजूमदार

नीलोत्पल मजूमदार को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
निर्णायक मण्डल का 1996 का विशेष पुरस्कार निर्माता, निर्देशक और संगीत निर्देशक **नीलोत्पल मजूमदार** को **धातु झर 96** में खोज और विध्वंस के बीच दुविधा के साहसिक एवं प्रायोगिक अन्वेषण के लिए दिया गया है।

SPECIAL JURY AWARD

NILOTPAL MAJUMDAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to **NILOTPAL MAJUMDAR**

Citation
The Special Jury Award of 1996 is given to Nilotpal Majumdar, Producer, Director and Cinematographer of the film **DHATU JHAR '96** for his bold and experimental exploration of the dilemma between discovery and destruction.

नीलोत्पल मजूमदार भारतीय फ़िल्म और टेलीविजन संस्थान, पुणे से स्नातकोत्तर हैं। उन्होंने अपने व्यवसाय में निर्देशन, छायांकन तथा संपादन के कौशल का अद्‌भुत समन्वय किया है। उन्होंने **डेज एण्ड नाइट्स इन सातोस लैंड, द लैंड विदिन रिप्पल्स** और **धातु झर ९६** तीन फ़िल्मों का निर्देशन किया है।

Nilotpal Majumdar did his post-graduation from the Film & Television Institute of India, Pune. In his profession, he combines the skills of direction, cinematography and editing. He has directed three films **Days and Nights in Sato's Land, The Land within Ripples** and **Dhatu Jhar '96.**

सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म पुरस्कार

विडियलै नौकी (तमिल) और आत्मीयम् (मलयालम)

निर्माता : प्रिंसीपल, तमिलनाडु फ़िल्म और टेलीविजन संस्थान, चेन्नई को **विडियलै नौकी** के लिए रजत कमल तथा 5,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : निदेशक, भारतीय फ़िल्म और टेलीविजन संस्थान, पुणे को फ़िल्म **आत्मीयम्** के लिए रजत कमल तथा 5,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **पी. वैंकटेश** को उनकी फ़िल्म **विडियलै नौकी** तथा निर्देशक **नंद कुमार काविल** को उनकी फ़िल्म **आत्मीयम्** के लिए, प्रत्येक को रजत कमल तथा 5,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म का 1996 का पुरस्कार **विडियलै नौकी** को दृष्टि के संबंध में एक भावपूर्ण एवं ज्ञानवर्द्धक जानकारी के लिए तथा फ़िल्म **आत्मीयम्** को एक परंपरागत कलाकार को अपनी रचनात्मक अस्मिता के प्रति आंतरिक विद्रोह को चित्रित करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SHORT FICTION FILM

VIDIYALAI NOKKI (TAMIL) and ATHMEEYAM (MALAYALAM)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000/- to the Producer : The Principal, F&T V.I.T.N. Chennai, for the film **VIDIYALAI NOKKI** and Director, FTII, Pune, for the film **ATHMEEYAM**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000/- each to the Director : **P. Venkatesh** for his film **VIDIYALAI NOKKI** and **NANDAKUMAR KAVIL** for his film **ATMEEYAM**

Citation
The Award for the Best Short Fiction Film of 1996 is given to film **VIDIYALAI NOKKI** for making an eloquent statement on the gift of sight and to the film **ATMEEYAM** for presenting a traditional artist's inner rebellion against the denial of his creative identity.

पी. वेंकटेश विज्ञान स्नातक हैं और उन्होंने टेलीविज़न निर्माण में विशेषज्ञता हासिल की है। टेलीविज़न निर्माण के अध्ययन के दौरान ही वे सामाजिक दायित्व के अनेक विषयों पर कार्य कर चुके हैं।
पी. वेंकटेश ने टेलीविज़न और फ़िल्म से संबंधित अनेक सर्टीफिकेट कोर्सों, वर्कशापों और सेमिनारों में भागीदारी की है। वे नल्लूर कवल निलयम जैसे टेलीविज़न सीरियल से भी सम्बद्ध रहे हैं।

P. Venkatesh is a Science graduate who has specialised in television production. While studying television production he worked on various themes of social relevance.
P. Venkatesh has also undertaken various certificate courses and attended many workshops and seminars on film and television-related subjects. He has been actively associated with various television serials like "Nallur Kaval Nilayam."

नंद कुमार कविल ने केरल राज्य से इतिहास में स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की है। वे भारतीय फ़िल्म और टेलीविज़न संस्थान, पुणे से स्नातक हैं। आजकल वे लोक कला क्षेत्र तथा केरल रंगमंच के लिए कार्य कर रहे हैं।

Nandakumar Kavil is a graduate of History from Kerala. He also graduated in film direction from the Film & Television Institute of India, Pune.
Nandakumar Kavil is presently working in the area of folk arts, and the theatre of Kerala.

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार

भीत (बंगला)

निर्माता : **फ़िल्म प्रभाग** तथा **के.आर.जी. फ़िल्म्स** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निदेशक : **गुल बहार सिंह** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फ़िल्म का 1996 का पुरस्कार **भीत** को एक देहाती स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा अपने सम्प्रदाय को पूर्णरूपेण बदल देने की कथा के विश्वसनीय चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON FAMILY WELFARE

BHIT (BENGALI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **FILMS DIVISION & K.R.G. FILMS**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **GULBAHAR SINGH**

Citation
The Award for the Best Film on Family Welfare of 1996 is given to the film **BHIT** for its credible depiction of a rural health worker's efforts in transforming her community.

गुल बहार सिंह विज्ञान स्नातक हैं। फ़िल्म निर्माण के क्षेत्र में उन्होंने पांच वर्ष लगाए हैं। वे विभिन्न सामाजिक विषयों पर अब तक अनेक गैर कथाचित्र तथा फीचरेट्स बना चुके हैं। उनकी फ़िल्म **अंकुरण** का वर्ष 1986 में राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह के निर्णायक मंडल ने विशेष उल्लेख किया था।

Gulbahar Singh is a science graduate, who spent five years as an under-study in the field of film-making. He has made various documentaries and featurettes on social subjects. His film **Anukaran** received the Special Mention National Award in 1986.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

हरि नायर

छायाकार : **हरि नायर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

फ़िल्म प्रोसेसिंग करने वाली लेबोरेट्री : **प्रसाद फ़िल्म लैब** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
गैर कथाचित्र का सर्वोत्तम छायांकन का 1996 का पुरस्कार **हरि नायर** को **शैम्स विज़न** में प्रकाश और छाया के विस्मयकारी प्रयोग से निर्जीव वस्तुओं में भी सजीवता का अनुभव कराने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

HARI NAIR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Cameraman : **HARI NAIR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Laboratory processing the film : **PRASAD FILM LAB.**

Citation
The Award for the Best Cinematography for a non-feature film of 1996 is given to **HARI NAIR** for his brilliant use of light and shade, to bring to life even inanimate objects in the film **SHAM'S VISION.**

हरि नायर को फिल्म्स एण्ड टेलीविज़न इंस्टीट्यूट ऑफ़ इण्डिया, पुणे का डिप्लोमा प्राप्त है। उन्होंने छायांकन के लिए केरल राज्य पुरस्कार जीता है। **हरि नायर** ने भिन्न-भिन्न निर्देशकों के लिए छह फीचर-फ़िल्मों में भी छायांकन किया है।

Hari Nair is a diploma holder from the Films and Television Institute of India, Pune. He has won the Kerala State Film Award for Photography. **Hari Nair** has shot six feature films also for various directors.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

निहार आर. समल

ध्वनि आलेखक : **निहार आर. समल** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
गैर कथाचित्र के लिए सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1996 का पुरस्कार **निहार आर. समल** को **तत् त्वम् असि** में उनके संयमित, संतुलित और बहुआयामी साउंड ट्रेक के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

NIHAR R. SAMAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Audiographer : **NIHAR R. SAMAL**

Citation
The Award for the Best Audiography in a non-feature film of 1996 is given to **NIHAR R. SAMAL** for his restrained, balanced and multi-layered sound-track of the film **TAT TVAM ASI.**

निहार रंजन समल ने भारतीय फ़िल्म और टेलीविज़न संस्थान, पुणे में प्रवेश से पूर्व भौतिकी में स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने संस्थान से ध्वनि-आलेखन में डिप्लोमा तथा विशेषज्ञता हासिल की है।

निहार रंजन समल आजकल दूरदर्शन धारावाहिकों, टेली फ़िल्मों तथा गैर कथाचित्रों में बतौर ध्वनि-आलेखक तथा कथाचित्रों में सहायक ध्वनि-आलेखक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

Nihar Ranjan Samal first graduated in Physics before joining the Film & Television Institute of India, Pune. There, he specialised and received a diploma in audiography.

Nihar Ranjan Samal now works as audiographer for television serials, telefilms, documentaries and in feature films as associate audiographer.

सर्वोत्तम संपादन पुरस्कार

ए. श्रीकर प्रसाद

फ़िल्म संपादक : **ए. श्रीकर प्रसाद** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
गैर कथाचित्र के लिए सर्वोत्तम संपादन का 1996 का पुरस्कार **ए. श्रीकर प्रसाद** को **नौका चरितरामु** में एक अटूट दृश्यात्मक प्रवाह को कुशलतापूर्वक बनाए रखने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST EDITOR

A. SREEKAR PRASAD

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Editor : **A. SREEKAR PRASAD**

Citation
The Award for the Best Editing of a non-feature film of 1996 is given to **A. SREEKAR PRASAD** for knitting together harmoniously into an unbroken visual flow in the film **NAUKA CHARITRAMU.**

ए. श्रीकर प्रसाद यूं तो चेन्नई, तमिलनाडु के निवासी हैं किन्तु उनका नाम विख्यात असमिया फ़िल्मों के माध्यम से प्रकाश में आया।
उन्होंने नई पीढ़ी के लगभग सभी असमिया फ़िल्मकारों के साथ काम किया है जिनमें से अधिकांश को राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली है। **हलधर, मीमांसा** तथा **राग-बिराग** जैसी फ़िल्मों में उनकी संपादन कला ने असमिया फ़िल्मों में एक नवीन शैली का सूत्रपात किया है।

A. Sreekar Prasad is a permanent resident of Chennai, Tamil Nadu. But his name has come to be associated with trend-making Assamese films.
A. Sreekar Prasad has worked with almost all the new-generation Assamese film-makers, most of whom have received national and international recognition. **Sreekar Prasad's** approach to editing in films like **Haladhar, Meemansa** and **Rag-Birag** are considered the beginning of a new style in the Assamese films.

पुरस्कार जो नहीं दिए गए

निम्नलिखित गैर-कथाचित्रों को पुरस्कार नहीं दिए गए हैं

(1) मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फ़िल्म

(2) वैज्ञानिक फ़िल्म

(3) पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण संबंधी फ़िल्म

(4) प्रोत्साहन देने वाली फ़िल्म

(5) कृषि संबंधी फ़िल्म

(6) ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन

(7) खोजी फ़िल्म

(8) सर्वोत्तम संगीत निर्देशक

AWARDS NOT GIVEN

Awards not given for the best non-feature films on

(1) Anthropological/Ethnographic film

(2) Scientific film

(3) Environment/Conservation/Preservation film

(4) Promotional film

(5) Agricultural film

(6) Historical Reconstruction/Compilation

(7) Exploration film

(8) Best Music Director

सिनेमा लेखन के लिए पुरस्कार

Awards for Writing on Cinema

सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक पुरस्कार

द आई ऑफ द सरपेन्ट : एन इन्ट्रोडक्शन टू तमिल सिनेमा

लेखक : **एस. थियोडोर भास्करन्** को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रकाशक : **ईस्ट वैस्ट बुक्स (मद्रास) प्रा. लिमिटेड** को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक का 1996 का पुरस्कार **एस. थियोडोर भास्करन्** को तमिल फ़िल्मों पर विधिवत शोधपूर्ण पुस्तक लिखने के लिए दिया गया है। यह पुस्तक हमारे देश के श्रेष्ठ सिनेमा के उन पहलुओं से पाठकों को अवगत कराती है जिन्हें दशकों तक पुनर्व्याख्या की आवश्यकता है।

AWARD FOR THE BEST BOOK ON CINEMA

THE EYE OF THE SERPENT : AN INTRODUCTION TO TAMIL CINEMA

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Author : **S. THEODORE BASKARAN**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Publisher : **EAST WEST BOOKS (MADRAS) PVT. LTD.**

Citation
For the methodically researched books on Tamil Films which informs and enlightens the reader about one of the most prolific cinemas of our country which has kept re-defining itself over the decades.

एस. थियोडोर भास्करन् इतिहास में स्नातकोत्तर हैं। वे बेंगलौर के नेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज में वरिष्ठ पदाधिकारी रह चुके हैं। वे राष्ट्रीय फ़िल्म अभिलेखागार, पुणे के सलाहकार बोर्ड में सदस्य भी रह चुके हैं।
थियोडोर भास्करन् ने तमिल सिनेमा सहित विभिन्न विषयों पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं। उन्हें तमिलनाडु इतिहास शोध परिषद की ओर से फेलोशिप भी दिया गया है। उनकी पुस्तक द **मैसेज बियरर्स** दक्षिण भारतीय सिनेमा और रंगमंच के शुरुआती इतिहास के लिए एक मानक संदर्भ-ग्रंथ है।

S. Theodore Baskaran is a post-graduate on History. He has been a senior associate of the National Institute of Advanced Studies in Bangalore. As well as a member of the Advisory Board of the National Film Archives, Pune.
Theodore Baskaran has written several books on Tamil Cinema, among other subjects. And been a recipient of fellowships from the Tamil Nadu Council of Historical Research. His book, **The Message Bearers** is a standard reference book on the early history of South Indian cinema and theatre.

सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक पुरस्कार

एम.के. राघवेन्द्र

समीक्षक : **एम.के. राघवेन्द्र** को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक का 1996 का पुरस्कार **एम.के. राघवेन्द्र** को उनके उद्‌बोधनपूर्ण और गैर-परंपरागत लेखन के लिए दिया गया है। उनके लेखन से वाद-विवाद तथा परिचर्चा का क्रम शुरू होता है, जो वर्तमान फ़िल्म आलोचना में लगभग नदारद है।

AWARD FOR THE BEST FILM CRITIC

M.K. RAGHAVENDRA

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/-

Citation
For his provocative and iconoclastic writing, which inspires debate and discussion, so rare in film criticism today.

एम.के. राघवेन्द्र केमिस्ट्री के विषय में स्नातक हैं। लेखन में वे रूचि रखते हैं। फ़िल्म समीक्षा के अलावा साहित्यिक समीक्षक के रूप में वे मशहूर हैं।

फ़िल्म सोसायटी मूवमेंट में सक्रिय हिस्सा लेने वाले एम.के. राघवेन्द्र ने 1980 में फ़िल्मों की समीक्षा लिखना आरंभ किया जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छप-ी रही। आफ्रिकन सिनेमा की कन्नड़ पुस्तक के भी वे सह-लेखक हैं।

M.K. Raghavendra is a chemistry with a keen interest in writing. Apart from criticism, he is also a well known literary critic.

Actively involved with the film society movement, M.K. Raghavendra began writing film criticism in 1980. Since then he has written extensively on cinema in newspapers, journals and magazines. He has also co-authored a book on African Cinema in Kannada.

कथासार : Synopses
कथाचित्र Feature Films

ADAJYA

Assamese/Colour/94 min

Producer: Neyan Prasad; **Director/ Screenplay Writer:** Dr. Santwana Bardoloi; **Leading Actress:** Trisha Saikia; **Supporting Actor:** Tom Alter; **Supporting Actress:** Bhageerathi; **Music Director:** Sher Choudhury.

The film is an imaginary account of real-life characters in the Assam of 1940s. It is set in the home of the priest of a religious Centre, Sattra. In this background, the story revolves around three widows, Durga, younger Gosani and Giribala.

In the midst of these circumstances, while each widow struggles with her identity, there is a visitor, Mark, an American scholar, who has come to collect old manuscripts for research.

While Durga is resigned to her fate as a widow, the other two struggle for independence in their own way. Younger Gosani tries to arrange for her property. While Giribala, influenced by Mark Sahib, aspires for freedom from the tragedy of widowhood. Different circumstances hold different futures for the three widows.

अदाज्या

असमिया/रंगीन/94 मिनट

निर्माता : नयन प्रसाद; **निर्देशक/पटकथा लेखक :** डॉ. सांत्वना बारदोलोई; **मुख्य अभिनेत्री :** तृषा साइकिया; **सह-अभिनेता :** टॉम आल्टर; **सह-अभिनेत्री :** भागीरथी; **संगीत निर्देशक :** शेर चौधरी।

यह सन् 1940 के असम के वास्तविक पात्रों की काल्पनिक प्रस्तुति है। धार्मिक केन्द्र सत्तरा में एक पुजारी के घर के इर्द-गिर्द यह कथा बुनी गई है। यह कहानी अपने अतीत में दुर्गा, गोसानी और गिरिबाला के चारों ओर घूमती है।

जब ये तीनों विधवाएं अपनी पहचान के लिए संघर्ष कर रही होती हैं तभी एक अमेरिकी विद्वान यात्री मार्क वहां शोध के संबंध में पुरानी पाण्डुलिपियों का संग्रह करने के लिए आता है।

इन तीनों विधवाओं में से दुर्गा अपने भाग्य से समझौता कर चुकी है किन्तु अन्य दो अपने-अपने तरीके से स्वतंत्रता के लिए कोशिश करती हैं। छोटी गोसानी अपने लिए संपत्ति जोड़ने का प्रयास करती है। गिरिबाला वैधव्य के दुख से अपनी मुक्ति चाहती है, वह मार्क साहब से प्रभावित है। विभिन्न स्थितियां उन तीन विधवाओं के लिए अलग-अलग भविष्य लाती हैं।

अग्निसाक्षी

हिन्दी/रंगीन/165 मिनट

निर्माता : माधवी ठाकरे; **निर्देशक :** पार्थो घोष; **पटकथा लेखक :** रणबीर पुष्प; **मुख्य अभिनेता :** जैकी श्राफ; **मुख्य अभिनेत्री :** मनीषा कोईराला; **सह-अभिनेता :** नाना पाटेकर; **सह-अभिनेत्री :** दिव्या दत्ता; **छायाकार :** के.वी. रामन्ना; **ध्वनि आलेखक :** प्रकाश भाटिया; **संपादक :** आर. राजेन्द्रन; **कला निर्देशक :** आर. बर्मन; **वेशभूषाकार :** रूही रावल; **संगीत निर्देशक :** नदीम श्रवण; **गीतकार :** समीर; **नृत्य संयोजक :** गणेश; **पार्श्वगायक :** कुमार सानु, कविता कृष्णमूर्ति।

सूरज जहाजरानी के क्षेत्र में एक सफल उद्योगपति है। अचानक एक दिन उसकी मुलाकात शुभांगी से होती है। यह मुलाकात प्रेम में बदल शादी में तब्दील हो जाती है।

अपने हनीमून के दौरान शुभांगी और सूरज विश्वनाथ को मिलते हैं जो हर जगह उनका पीछा करता है। यह उलझन तनाव में बदल जाती है जब विश्वनाथ कहता है कि शुभांगी उसकी पत्नी है।

सूरज और शुभांगी को अपने विवाह के शुरुआती दिनों में ही इस भयानक तनाव से उबारना होता है।

AGNISAKSHI

Hindi/Colour/165 min

Producer: Madhavi Thackeray; **Director:** Partho Ghosh; **Screenplay Writer:** Ranbir Pushp; **Leading Actor:** Jackie Shroff; **Leading Actress:** Manisha Koirala; **Supporting Actor:** Nana Patekar; **Supporting Actress:** Divya Datta; **Cameraman:** K.V. Ramanna; **Audiographer:** Prakash Bhatia; **Editor:** R. Rajendran; **Art Director:** R. Varman; **Costume Designer:** Ruhi Rawal; **Music Director:** Nadeem Shravan; **Lyricist:** Sameer; **Choreographer:** Ganesh; **Playback Singers:** Kumar Sanu, Kavita Krishnamurthy.

Suraj is a rich shipping tycoon. One day he accidentally meets Shubhangi. Their chance meeting blossoms into romance, and later marriage.

In the midst of their honeymoon, Shubhangi and Suraj face Vishwanath, who insists on following them everywhere. The embarrasment turns into a source of tension when Vishwanath claims Shubhangi was married to him.

Suraj and Shubhangi have to overcome this big hurdle in the early days of their marriage.

AMERICA! AMERICA!

Kannada/Colour/162 min

Producer: G. Nandakumar; **Director/ Screenplay Writer:** Nagathihalli Chandrashekar; **Leading Actor:** Ramesh G.; **Leading Actress:** Hema; **Supporting Actor:** Akshay Anand; **Supporting Actress:** Sandhya Ravindranath; **Cameraman:** Sunny Joseph; **Audiographer:** Kodandapani; **Editor:** Shivu; **Art Director:** Raju; **Costume Designer:** C.S. Shobha; **Music Director:** Murthy; **Lyricist:** Gopal Krishna Adiga; **Playback Singers:** Raju Ananthaswamy, H. Sangeetha

Surya, Shashanka and Bhoomika are close childhood friends. Surya is a brilliant student, rooted in Indian values, who later succeeds in setting up his own industry. For Shashanka, America is the ultimate goal in life. He studies there and settles into a job. Bhoomika is fond of both, but arrangements between parents bring Shashanka and her into wedlock. They remain unaware that Surya has loved Bhoomika since long.

Bhookima and Shashanka are settled in America when they one day see Surya on a business visit. They take him home and Shashanka goes out to the store. An accident leads to his death. His last wish was that Surya should marry Bhoomika and give her a new life.

Bhoomika cannot agree to this. She is confident she can live on her own in India, strengthened by her exposure to American life. With that decision, Surya and Bhoomika board the plane to return to India.

अमेरिका ! अमेरिका !

कन्नड़/रंगीन/165 मिनट

निर्माता : जी. नन्दकुमार; **निर्देशक/पटकथा लेखक :** नागाथिहल्ली चन्द्रशेखर; **मुख्य अभिनेता :** रमेश जी.; **मुख्य अभिनेत्री :** हेमा; **सह-अभिनेता :** अक्षय आनंद; **सह-अभिनेत्री :** संध्या रवीन्द्रनाथ; **छायाकार :** सन्नी जोसेफ; **ध्वनि आलेखक :** कोदण्डपाणि; **संपादक :** शिवु; **कला निर्देशक :** राजू; **वेशभूषाकार :** सी.एस. शोभा; **संगीत निर्देशक :** मूर्ति; **गीतकार :** गोपाल कृष्ण अडिग; **पार्श्वगायक :** राजू अनन्तस्वामी, एच. संगीता।

सूर्य, शशांक और भूमिका बचपन के तीन दोस्त हैं। सूर्य भारतीय संस्कारों में पला एक मेधावी छात्र है जो बाद में अपनी इण्डस्ट्री लगाने में सफल होता है। शशांक अमेरिका में पढ़ता है और वहीं नौकरी करने लगता है। अमेरिका उसके जीवन का अंतिम ध्येय है। भूमिका दोनों को पसंद करती है पर माता-पिता की मर्जी से शशांक और उसका विवाह हो जाता है। वो इस बात से अनजान है कि सूर्य बहुत वक्त से भूमिका को प्रेम करता है।

अमेरिका में एक दिन भूमिका और शशांक सूर्य को मिलते हैं जो बिजनेस से सिलसिले में आता है। वे उसे घर ले आते हैं और शशांक कुछ खरीदारी करने के लिए बाहर चला जाता है। एक दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो जाती है। उसकी अंतिम इच्छा थी कि सूर्य भूमिका से विवाह कर उसे एक नई जिन्दगी दे।

भूमिका इससे सहमत नहीं होती। अमेरिकन जिन्दगी से दो-चार होने के बाद भूमिका में ये आत्म-विश्वास पैदा होता है कि वह अपने बल पर भारत में बसर करेगी। इस निर्णय के साथ सूर्य और भूमिका भारत के लिए चल पड़ते हैं।

दायरा

हिन्दी/रंगीन/132 मिनट

निर्माता : परवेज सिप्पी; **निर्देशक** : अमोल पालेकर; **पटकथा लेखक** : तिमेरी मुरारी; **मुख्य अभिनेता** : निर्मल पाण्डे; **मुख्य अभिनेत्री** : सोनाली कुलकर्णी; **सह-अभिनेता** : हैदर अली; **सह-अभिनेत्री** : नीना कुलकर्णी; **बाल कलाकार** : सई देवधर; **छायाकार** : देबु देवधर; **ध्वनि आलेखक** : विजय भोपे; **संपादक** : वामन भोसले; **कला निर्देशक** : निखिल बैरन सेनगुप्ता; **वेशभूषाकार** : मीना नाइक; **संगीत निर्देशक** : आनन्द मिलिन्द; **गीतकार** : गुलजार; **नृत्य संयोजक** : सरोज खान; **पार्श्वगायक** : येशुदास, आशा भोंसले।

दायरा लिंग-पहचान से गुंथी हुई एक प्रेम कथा है। कोठा चलाने वाला एक व्यक्ति गांव की एक लड़की का अपहरण कर लेता है। वह बच जाती है और नदी किनारे सो जाती है। जागने पर उसकी मुलाकात एक ऐसे व्यक्ति से होती है जो स्त्रियों के कपड़े पहनकर नाटक करता है। वह उसकी सहायता नहीं करता।

तीन आवारा बदमाश उस देहाती लड़की का बलात्कार करते हैं। संयोग से दोनों फिर आमने-सामने होते हैं। परिस्थितियों के कारण लड़की को आदमी के कपड़े पहनने पड़ते हैं।

प्रेम की शुरुआत होती है। परन्तु एक-दूसरे को पहचानने की यात्रा अंतत: त्रासदी में बदल जाती है।

DAAYRAA

Hindi/Colour/132 min

Producer: Pravesh Sippy; **Director:** Amol Palekar; **Screenplay Writer:** Timeri Murari; **Leading Actor:** Nirmal Pandey; **Leading Actress:** Sonali Kulkarni; **Supporting Actor:** Hyder Ali; **Supporting Actress:** Neena Kulkarni; **Child Artist:** Sai Deodhar; **Cameraman:** Debu Deodhar; **Audiographer:** Vijay Bhope; **Editor:** Waman Bhosle; **Art Director:** Nikhil Baran Sengupta; **Costume Designer:** Meena Naik; **Music Director:** Anand Milind; **Lyricist:** Gulzar; **Choreographer:** Saroj Khan; **Playback Singers:** Yesudas, Asha Bhonsle.

Daayraa is a love story complicated with gender identity. A village girl is kidnapped by a brothel keeper. She escapes and falls asleep on a river-bank. On waking, she confronts a transvestite, who used to play female roles. The transvestite does not help her.

Three vagabonds rape the village girl. Destiny brings her and the transvestite together again. And due to circumstances, the girl is required to don men's clothes.

A bond of love develops. But the voyage of discovering each other culminates in tragedy for the two unconventional individuals.

DAMU

Bengali/Colour/116 min

Producer: Art Films, Calcutta; **Director:** Raja Sen; **Screenplay Writer:** Mohit Chattopadhyaya and Dakshin Roy Palli; **Leading Actor:** Raghuvir Yadav; **Supporting Actor:** Satya Bandopadhyaya, Manoj Mitra, Sabyasachi Chakraborty; **Cameraman:** Shakti Banerjee; **Audiographer:** Jyoti Chatterjee; **Editor:** Snehashish Ganguly; **Art Director:** Radharaman Tapadar; **Costume Designer:** Papiya Sen; **Music Director:** Jatileshwar Mukherjee; **Lyricist:** Partha Sengupta; **Playback Singer:** Shakti Thakur.

Damu is the story of a man who spares no effort in wanting to keep his word with a child, spoken in passing but taken seriously by the child.

Eight year old Runku writes to her grandfather, Panchanan, to come and take her to her village for a few days. Panchanan goes with Damu, the foolish, honest, sweet villager. Amidst pranky conversations, Damu promises Runku he will take her to the village on an elephant. On seeing no elephant the next morning, Runku throws tantrums and refuses to go.

A dejected Damu then sets off to fulfil his promise. He goes through various awkward and humiliating circumstances, until he wins over a circus owner, who lends Damu an elephant to take Runku to her grandfather's village.

दामू

बंगला/रंगीन/116 मिनट

निर्माता : आर्ट फ़िल्म्स, कलकत्ता; **निर्देशक** : राजा सेन; **पटकथा लेखक** : मोहित चट्टोपाध्याय, दक्षिण राय पल्ली; **मुख्य अभिनेता** : रघुवीर यादव; **सह-अभिनेता** : सत्या बंदोपाध्याय, मनोज मित्र, सव्यसाची चक्रवर्ती; **छायाकार** : शक्ति बैनर्जी; **ध्वनि आलेखक** : ज्योति चटर्जी; **संपादक** : स्नेहाशिष गांगुली; **कला निर्देशक** : राधारमण तपादार; **वेशभूषाकार** : पापिया सेन; **संगीतकार** : जतिलेश्वर मुखर्जी; **गीतकार** : पार्थ सेनगुप्ता; **पार्श्व गायक** : शक्ति ठाकुर।

दामू एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो एक बच्चे के यूं ही बोल दिए गए शब्दों को निभाने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा देता है क्योंकि बच्चा उन्हें सच मान लेता है।

आठ वर्षीय रुन्कु अपने दादा पंचानन को पत्र लिखता है कि वे उसे कुछ दिनों के लिए गांव ले जाएं। पंचानन एक सीधे-सादे ईमानदार देहाती दामू के साथ आता है। हंसी-मजाक के बीच दामू रून्कु से वादा करता है कि वह उसे गांव हाथी पर बैठा कर ले जाएगा। अगली सुबह हाथी न पाकर रुन्कु नाराज होता है और जाने से इंकार कर देता है।

दुखी दामू अपने वादे को पूरा करने को निकल पड़ता है। वह बहुत शर्मसार और कष्टदायक स्थितियों से गुजरता है। अंततः एक सर्कस-मालिक रुन्कु को दादा के गांव छोड़ आने के लिए दामू को हाथी देता है।

DESADANAM

Malayalam/Colour/114 min

Producer/Director: Jayaraj; **Screenplay Writer:** Madambu Kunjukuttan; **Leading Actor:** Vijay Ragavan; **Leading Actress:** Mini Nair; **Supporting Actor:** Unnikrishnan Namboothiri; **Supporting Actress:** Satyabhama Pisharasyar; **Child Artist:** Master Kumar; **Cameraman:** M.J. Radhakrishnan; **Audiographer:** Krishnan Unni; **Editor:** B. Lenin, V.T. Vijayan; **Art Director:** Nadhan Mannoor; **Costume Designer:** Nagaraj; **Music Director/Lyricist:** D. Namboothiri; **Playback Singers:** Yesudas, Manju.

Pachu is nominated to succeed Acharya, the head of the monastery. Grandfather is pleased with the honour, but mother cannot bear to let go her child Unni.

The family witnesses a conflict between traditional values and emotions. Meanwhile, Pachu's friends, even neighbours and relatives develop a sense of awe and respect for him in view of his future status.

Ultimately the mother has to agree and rituals are performed for Pachu to sever his family ties. He joins the monastery, but cannot bear it. He returns home to his mother, only to find that she and the others can no longer accept him as an ordinary person.

देसाडनम्

मलयालम/रंगीन/114 मिनट

निर्माता/निर्देशक : जयराज; **पटकथा लेखक :** मदाम्बु कुंजुकुट्टन; **मुख्य अभिनेता :** विजय राघवन; **मुख्य अभिनेत्री :** मिनी नैयर; **सह-अभिनेता :** उन्नीकृष्णन नम्बूदिरी; **सह-अभिनेत्री :** सत्यभामा पिशारस्यार; **बाल कलाकार :** मास्टर कुमार; **छायाकार :** एम.जे. राधाकृष्णन; **ध्वनि आलेखक :** कृष्णन उन्नी; **संपादक :** बी. लेनिन, वी.टी. विजयन; **कला निर्देशक :** नाधन मन्नूर; **वेशभूषाकार :** नागराज; **संगीत निर्देशक/गीतकार :** डी. नम्बूदिरी; **पार्श्वगायक :** येशुदास, मंजू।

पाचू को मठ के प्रमुख आचार्य के पद हेतु नामित किया जाता है। दादा इस गौरव से बहुत खुश होते हैं, पर मां अपने बच्चे उन्नी को भेजना नहीं चाहती।

परिवार पारंपरिक मूल्यों और भावनाओं के मध्य फंस जाता है। इस बीच, पाचू के मित्र, पड़ोसी और रिश्तेदार उसके भविष्य के गौरव से प्रभावित हो उसके प्रति श्रद्धालु और प्रेमपूर्ण हो जाते हैं।

अंतत: मां को तैयार होना पड़ता है और पाचू पारिवारिक बंधनों को तोड़ने की रस्मों को निबाहता है। वह मठ चला जाता है पर वहां रह नहीं पाता। वह अपनी मां के पास घर आता पर अब उसकी मां और अन्य लोग उसके साथ साधारण व्यक्ति की तरह व्यवहार नहीं कर पाते।

GUDIA

Hindi/Colour/139 min

Producer: Amit Khanna and Mahesh Bhatt; **Director/Screenplay Writer:** Goutam Ghose; **Leading Actor:** Mithun Chakravarty; **Leading Actress:** Nandana Dev Sen; **Supporting Actor:** Pran, Mohan Agashe; **Cameraman:** Jeeva; **Audiographer:** Suajit Sarkar; **Editor:** Moloy Banerjee; **Art Director:** Ashok Bose; **Costume Designer:** Nilanjana Ghose; **Music Director:** Goutam Ghose, Arthur Grascious; **Lyricist:** Nida Fazil, Goutam Ghose; **Playback Singers:** Amit Kumar, Manna Dey, Kavita Krishnamurthy, Poornima, Sunita Rao.

Gudia portrays as artist's struggle to find his voice and retain his freedom. The story is symbolised through the triangle of a ventriloquist, his doll, and the girl he loves.

When Hameed's voice fails because of cancer, he sells his life-size doll, Urvashi, to Johnny. Back home, Johnny is reunited with Rosemary, whom he still sees as a little girl. He has romantic dialogues with the doll, which angers and frustrates Rosemary.

A corrupt politician pressurises Johnny to promote his show. But Johnny he cannot become a mouthpiece for propaganda. The orders henchmen attack Johnny and destroy his doll.

Rosmary nurtures the mourning Johnny. She presents him a new guitar to revive his spirits. Now it is Rosemary who becomes the doll...

गुड़िया

हिन्दी/रंगीन/139 मिनट

निर्माता : अमित खन्ना, महेश भट्ट; **निर्देशक/पटकथा लेखक :** गौतम घोष; **मुख्य अभिनेता :** मिथुन चक्रवर्ती; **मुख्य अभिनेत्री :** नंदन देव सेन; **सह-अभिनेता :** प्राण, मोहन अगाशे; **छायाकार :** जीवा; **ध्वनि आलेखक :** सुजीत सरकार; **संपादक :** मोलोय बैनर्जी; **कला निर्देशक :** अशोक बोस; **वेशभूषाकार :** नीलांजना घोष; **संगीत निर्देशक :** गौतम घोष, आर्थर ग्रेशियस; **गीतकार :** निदा फाजली, गौतम घोष; **पार्श्वगायक :** अमित कुमार, मन्ना डे, कविता कृष्णमूर्ति, पूर्णिमा, सुनीता राव।

गुड़िया फ़िल्म में एक कलाकार का अपनी आवाज़ हासिल करने और स्वातंत्र्य क़ायम रखने के संघर्ष का नरूपण है। एक पेट बोला, उसकी गुड़िया और जिससे वह प्रेम करता है उस लड़की के तिकोनात्मक रूप में यह कहानी चलती है।

कैंसर के कारण हमीद ने अपनी आवाज़ खो दी तो अनिच्छा से वह अपनी आदमक़द गुड़िया उर्वशी ज्होनी को बेच देता है। घर पर ज्होनी का रोज़मेरी के साथ फिर मिलन होता है, जो अब भी उसकी नज़रों में छोटी बच्ची ही है। अपने भावों को वह गुड़िया के साथ रोमांस भरे संवादों द्वारा व्यक्त करता है। रोज़मेरी को गुस्सा आता है और वह हतोत्साह हो जाती है।

एक भ्रष्ट राजनेता ज्होनी पर अपना शो आगे बढ़ाने के लिए दबाव डालता है। लेकिन ज्होनी को समझ में आ जाता है कि वह प्रचार का मुखांग नहीं बन सकता। राजनेता के हजूरिये क्रोधित नेता के आदेश से ज्होनी पर हमला करते हैं, और उसकी गुड़िया तोड़ देते हैं। उद्विग्न ज्होनी उस गुड़िया को समुद्र में फेंक देता है।

रोज़मेरी शोकातुर ज्होनी को प्रोत्साहित करती है। पुन: उत्साह जगाने के लिए वह उसे एक गिटार उपहार के रूप में देती है। अब रोज़मेरी गुड़िया बन जाती है।

INDIAN

Tamil/Colour/170 min

Producer: A.M. Rathnam; **Director/ Screenplay Writer:** K. Shankar; **Leading Actor:** Kamal Haasan; **Leading Actress:** Manisha Koirala; **Supporting Actor:** Goundamani; **Supporting Actress:** Urmila Matondkar; **Cameraman:** Jeeva; **Audiographers:** Pyramid Audios; **Editor:** Lenin, V.T. Vijayan; **Art Director:** Thotta Tharani; **Costume Designer:** Kasi; **Music Director:** A.R. Rahman; **Lyricist:** Vairamuthu; **Choreographer:** Raju Sundaram; **Special Effects:** Venki; **Playback Singers:** S.P. Balasubramaniam, Swarna Latha.

Senapathy and his wife, Amirthavalli, lived in a village Thirumullaivayal. Both were caught up in their commitment to the independence movement. Senapathy was also an expert in the martial art of 'Varmakkalai'.

After independence, the couple beget a son, Chandru, and a daughter, Kasthuri. Chandru follows a path of quick-money through wrong means. And Kasthuri falls victim to an accident. Senapathy gets drawn into the injustice of the social system that Chandru belongs to and is unable to save his daughter. He uses his martial techniques in retaliation and is hunted by the police.

Later, fate pits Senapathy against his own son, Chandru, whom he kills with his technique.

इण्डियन

तमिल/रंगीन/170 मिनट

निर्माता : ए.एम. रत्नम; **निर्देशक/पटकथा लेखक** : के. शंकर; **मुख्य अभिनेता** : कमल हासन; **मुख्य अभिनेत्री** : मनीषा कोईराला; **सह-अभिनेता** : गोण्डामणि; **सह-अभिनेत्री** : उर्मिला मातोंडकर; **छायाकार** : जीवा; **ध्वनि आलेखक** : पिरामिड ऑडियोज; **संपादक** : लेनिन, वी.टी. विजयन; **कला निर्देशक** : थोटा थरणी; **वेशभूषाकार** : कासी; **संगीत निर्देशक** : ए.आर. रहमान; **गीतकार** : वैरामुथु; **नृत्य संयोजक** : राजू सुन्दरम्; **विशेष प्रभाव** : वेन्की; **पार्श्वगायक** : एस.पी. बालसुब्रह्मणियम्, स्वर्णलता।

सेनापति और उसकी पत्नी अमृतावल्ली तिरुमुलैवायल गांव में रहते थे। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पति-पत्नी बंदी भी बनाए गए थे। सेनापति वरमाककलई विद्या में एक सिद्धहस्त व्यक्ति था।

स्वतंत्रता के बाद, इस दंपति के एक पुत्र चन्द्रू और एक पुत्री कस्तूरी होती है। चन्द्रू गलत तरीकों से तुरन्त धन कमाने का रास्ता अख्तियार कर लेता है। कस्तूरी की एक दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है। सेनापति भ्रष्टाचार के दलदल में सारी व्यवस्था को धंसा पाता है और अपनी बेटी को बचा नहीं पाता। चन्द्रू भी इस दलदल में लिप्त है। सेनापति व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए अपनी विद्या का प्रयोग करता है। पुलिस उसके पीछे पड़ जाती है।

अंततः एक दिन सेनापति को भाग्य के हाथों मजबूर हो अपने बेटे चन्द्रू की भी हत्या करनी पड़ती है।

KANAKKINAVU

Malayalam/Colour/157 min

Producer: P.V. Gangadharan; **Director:** Sibi Malayil; **Screenplay Writer:** T.A. Razak; **Leading Actor:** Murali; **Leading Actress:** Sukanya; **Supporting Actor:** Mamukoya; **Supporting Actress:** Mohini; **Child Artist:** Vishal; **Cameraman:** Venu; **Audiographer:** Babu; **Editor:** Bhoominathan; **Art Director:** K. Krishnan Kutty; **Costume Designer:** V. Keezhillam; **Music Director:** Raghu Kumar; **Lyricist:** Gireesh Puthencheri; **Playback Singers:** Yesudas, Chithra.

Kanakkinavu is a simple rural tale made complex by communal passions. Dasan and Hamsa are lumberjacks. Dasan had settled Hamsa in marriage. When Hamsa's wife dies, the two children are brought up in Dasan's home.

Hamsa is later attracted to a local girl, whom he marries with the consent of village elders. But shortly, he dies in the fury of the river. A sad Dasan and his wife, Sathi, want to educate Hamsa's son. This simple wish escalates into a communal issue because the Muslim child has a Hindu guardian.

When zealous bigots exploit the situation, Dasan, Sathi and the children flee the village at night. The humanist, Dasan cannot fulfil his dream.

कनकिनाव

मलयालम/रंगीन/157 मिनट

निर्माता : पी.वी. गंगाधरन; **निर्देशक :** सिबी मलायिल; **पटकथा लेखक :** टी.ए. रजक; **मुख्य अभिनेता :** मुरली; **मुख्य अभिनेत्री :** सुकन्या; **सह-अभिनेता :** मामूकोया; **सह-अभिनेत्री :** मोहिनी; **बाल कलाकार :** विशाल; **छायाकार :** वेणु; **ध्वनि आलेखक :** बाबू; **संपादक :** भूमिनाथन; **कला निर्देशक :** के. कृष्णन कुट्टी; **वेशभूषाकार :** वी. कोझिल्लम; **संगीत निर्देशक :** रघु कुमार; **गीतकार :** गिरीश पुदेनचेरी; **पार्श्वगायक :** येशुदास, चित्रा।

कनिकनाव एक सीधी-सादी देहाती कथा है जिसमें साम्प्रनायिक उद्वेग को प्रस्तुत किया गया है।

दासन् और हंसा लकड़हारे हैं। दासन् हंसा का विवाह करवाता है। हंसा की बीवी की मौत के बाद वह उसके दोनों बच्चों को अपने घर ले आता है।

कुछ वक्त बाद हंसा गांव के कुछ बुजुर्गों की सहमति से एक स्थानीय लड़की से पुनर्विवाह कर लेता है। परन्तु जल्द ही बाढ़ में उसकी मौत हो जाती है। दुखी दासन और उसकी पत्नी, हंसा के बेटे को पढ़ाना चाहते हैं। परन्तु यह साम्प्रदायिक रंग ले लेता है कि एक मुसलमान बच्चे का संरक्षक हिन्दू है।

कुछ कट्टरपंथी इसी स्थिति का लाभ उठाते हैं। एक रात दासन, उसकी पत्नी सती और बच्चे गांव छोड़ चले जाते हैं। मानवतावादी दासन अपनी छोटी सी इच्छा को भी पूरा नहीं कर पाता।

कातल कोत्तई

तमिल/रंगीन/135 मिनट

निर्माता : डी. पांडियन; **निर्देशक/पटकथा लेखक/गीतकार :** अहातियन; **छायाकार :** शंकर बचन; **ध्वनि आलेखक :** एन. पांडुरंग; **संपादक :** लैंसी मोहन; **कला निर्देशक :** महेन्द्रन; **वेशभूषाकार :** मासानम; **संगीत निर्देशक :** देवा; **नृत्य निर्देशक :** सम्पतराज; **विशेष प्रभाव :** एम.जे. राजू; **पार्श्वगायक :** एस.पी. बालसुब्रह्मणियम्, स्वर्णलता।

कमाली नौकरी की तलाश के दौरान रेल में अपना बैग खो देती है। एक नवयुवक सूर्य को बैग मिल जाता है जिसे वह कमाली को डाक द्वारा भेज देता है। इस घटना के बाद से ही उनके बीच पत्रों के माध्यम से प्रेम-प्रस्फुटन होता है। वे निश्चय करते हैं कि जिस दिन भी वे मिलेंगे, आपस में विवाह कर लेंगे।

परन्तु परिस्थितियां उन्हें एक डोर में बंधने नहीं देतीं। हालांकि उनके बीच प्रेम बना रहता है। (डाक विभाग की हड़ताल के कारण उन्हें पत्र भी नहीं मिलते।) इसी दौरान सूर्य मालिक के दुर्व्यवहार के कारण नौकरी छोड़ देता है।

आखिरकार, परेशान कमाली सूर्य की तलाश में निकल पड़ती है, जो कि संयोगवश वही गाड़ी चला रहा है जिसमें वो बैठी हुई है। सूर्य की तलाश में असफल कमाली वापिस ट्रेन में जा बैठती है। अचानक उसकी निगाह सूर्य के जैकेट उतारते समय उसकी कमीज के अंदर के चिन्ह पर पड़ती है। कमाली पहचान लेती है कि ये चित्र तो उसी का बनाया हुआ है। कमाली सूर्य का नाम पुकारते हुए उसकी तरफ भागती है और वे आपस में गले लग जाते हैं।

KATHAL KOTTAI

Tamil/Colour/135 min

Producer: D. Pandian; **Director/Screenplay Writer/Lyricist:** Ahathian; **Cameraman:** Shankar Bachan; **Audiographer:** N. Pandurangan; **Editor:** Lancy, Mohan; **Art Director:** Mahendran; **Costume Designer:** Maasaanam; **Music Director:** Deva; **Choreographer:** Sampathraj, S. Balaji; **Special Effects:** M.N. Raju; **Playback Singers:** S.P. Balasubramaniam, Swarna Latha.

While on the look out for a job, Kamali loses her bag in the train. A youngster, Soorya, finds it and mails it to her. This is the beginning of their love which results in writing letters. They pledge to marry the day they see each other.

But circumstances keep the two apart, though they repeatedly run into each other. (They have missed letters due to a postal strike.) Meanwhile, Soorya is compromised by the owner of the office, who is attracted to him. Later Soorya leaves.

In desperation, Kamali sets out in search of Soorya, who is driving the vehicle she is in. Unable to locate Soorya, Kamali boards the train. And accidentally notices the emblem on Soorya's inner shirt, as he removes his jacket. It was the emblem she had stitched. Kamali rushes to him calling out his name. And they hug each other.

KULAM

Malayalam/Colour/125 min

Producer: V.S. Gangadharan; **Director/Screenplay Writer:** Lenin Rajendran; **Leading Actor:** Thilakan; **Leading Actress:** Bhanu Priya; **Supporting Actor:** Nazar; **Cameraman:** Madhu Ambat; **Audiographer:** T. Krishnan Unni, N. Harikumar; **Editor:** B. Lenin, V.T. Vijayan; **Art Director:** P. Krishnamoorthy; **Costume Designer:** M. Dhandapani; **Music Director:** M.G. Radhakrishnan; **Lyricist:** Prof. V. Madhusoodan Nair; **Playback Singers:** S.P. Balasubramaniam, Chithra.

Kulam or clan is a story set against the devious court scene which took place in 18th century Kerala. Padmanabha Thampi and the Pillais want to leave no stone unturned to stop crownprince Marthanda Varma from ascending the throne.

Subhadra is the niece of one of the Pillais, enamoured by a martial art expert, Kumaran. But Padmanabha Thampi who has tried to seduce her, makes sure that Kumaran is eliminated. Meanwhile, every strategy of the Pillais fails, and Marthanda Varma vanquishes the clan. Later, when it is learnt that Subhadra was the informer, her uncle stabs her. In her dying words Subhadra says she had no loyalties to either side. She only wanted to avenge those who had ruined her life.

कुलम्

मलयालम/रंगीन/125 मिनट

निर्माता : वी.एस. गंगाधरन; **निर्देशक/पटकथा लेखक :** लेनिन राजेन्द्रन; **मुख्य अभिनेता :** तिलकन; **मुख्य अभिनेत्री :** भानु प्रिया; **सह-अभिनेता :** नजर; **छायाकार :** मधु अम्बट; **ध्वनि आलेखक :** टी. कृष्णन उन्नी, एन. हरिकुमार; **संपादक :** बी. लेनिन, वी.टी. विजयन; **कला निर्देशक :** पी. कृष्णामूर्ति; **वेशभूषाकार :** एम. दण्डपाणि; **संगीत निर्देशक :** एम.जी. राधाकृष्णन; **गीतकार :** प्रोफेसर वी. मधुसूदन नैयर; **पार्श्वगायक :** एस.पी. सुब्रह्मणियम्; चित्रा।

कुलम् अर्थात् कुल की कथा अठारहवीं सदी के केरल के भ्रष्ट दरबार पर बुनी गई है। पद्मनाभा थम्पी और पिल्लै लोग मार्तण्ड वर्मा के सिंहासनारूढ़ न होने में हरसंभव बाधा डालते हैं।

सुभद्रा एक पिल्लै परिवार की भतीजी है। वह मार्शल आर्ट विशेषज्ञ कुमारन से अभिभूत है। पर पद्मनाभा थम्पी उसके साथ दुर्व्यवहार करता है और कुमारन को बहिष्कृत कर देता है।

इसी बीच, पिल्लै लोगों की हर चाल निष्फल होती है और मार्तण्ड वर्मा सिंहासनारूढ़ हो जाता है। सुभद्रा के मुखबिर होने का पता चलने पर उसका चाचा उसको छुरा घोंपकर मार देता है। मरते वक्त सुभद्रा बताती है कि उसका मार्तण्ड वर्मा से कोई लेना-देना नहीं था पर वह अपनी जिन्दगी को बरबाद करने वाले से बदला लेना चाहती थी।

LAL DARJA

Bengali/Colour/97 min

Producer: Chitrani Lahiri; **Director/ Screenplay Writer/Story Writer:** Buddhadeb Dasgupta; **Leading Actor:** Subhendu Chatterjee; **Leading Actress:** Champa; **Supporting Actor:** Asad; **Supporting Actress:** Indrani Halder; **Child Artist:** Sudip Majumdar; **Cameraman:** Venu; **Audiographer:** Hiten Ghosh; **Editor:** Ujjal Nandi; **Art Director:** Ashoke Bose; **Music Director:** Bappi Lahiri; **Playback Singers:** Arundhati, Sipriti Ghosh.

The film depicts the inner turmoil of a man who feels responsible for the break up of his marriage. Middle-class respectability has dulled dentist Nabin Datta's marriage. His wife, Bela, wants to break away, and he cannot prevent her.

Nabin's driver, Dinu, is a happy-go-lucky man—with one wife in the village and another in the city. Nabin cannot emulate Dinu and knows he must find himself. He does this when he realises his escape lies in his being in tune with nature, as he used to be as a little boy.

लाल दरजा

बंगला/रंगीन/97 मिनट

निर्माता : चित्राणी लाहिड़ी; **निर्देशक/पटकथा लेखक/कहानी लेखक** : बुद्धदेव दासगुप्ता; **मुख्य अभिनेता** : शुभेन्दु चटर्जी; **मुख्य अभिनेत्री** : चम्पा; **सह-अभिनेता** : असद; **सह-अभिनेत्री** : इन्द्राणी हलधर; **बाल कलाकार** : सुदीप मजुमदार; **छायाकार** : वेणु; **ध्वनि आलेखक** : हितेन घोष; **संपादक** : उज्वल नंदी; **कला निर्देशक** : अशोक बोस; **संगीत निर्देशक** : बप्पी लाहिड़ी; **पार्श्व गायिका** : अरुन्धति, सिप्रिति घोष।

यह फ़िल्म एक व्यक्ति की अन्तर्व्यथा का चित्रण करती है जो अपने विवाह के टूटने की भयावह स्थिति के लिए खुद को जिम्मेदार समझता है। दंत-चिकित्सिक नवीन दत्ता की गृहस्थी मध्यमवर्गीय प्रतिष्ठा के कारण संवेदनाशून्य हो जाती है। उसकी पत्नी बेला उसे छोड़कर जाना चाहती है वह उसे रोकने में नाकाम रहता है।

नवीन का ड्राईवर दीनू एक खुशहाल आदमी है। जिसकी एक शहर में तथा एक गांव में—दो बीवियां हैं। नवीन दीनू की बराबरी नहीं कर सकता पर वह जानता है उसे खुद को पहचानना होगा। जब वह यह समझ जाता है कि उसका बचाव प्रकृति से खुद के तारतम्य में ही है, वह एक छोटे लड़के की भांति ऐसा करता है।

LATTHI

Bengali/Colour/160 min

Producer: Robin Agarwal; **Director/ Screenplay Writer:** Prabhat Roy; **Leading Actor:** Victor Banerjee; **Leading Actress:** Debasree Roy; **Supporting Actor:** Soumitra Chatterjee; **Supporting Actress:** Ritu Parna Sengupta; **Child Artist:** Sayan Dey; **Cameraman:** Nandu Bhattacharya; **Audiographers:** Chinmoy, Sudipta, Siddartha; **Editor:** Swapan Guha; **Art Director:** Kartick Bose; **Costume Designer:** Sibu Das; **Music Director:** Bappi Lahiri; **Lyricist:** Pulak Banerjee; **Playback Singers:** Kumar Sanu, Kavita Krishnamurthy.

The School headmaster, Atindra Mohan Banerjee, retires at the age of 65. Among the many gifts he receives is a Latthi, an old man's walking-stick.

With sons, daughters-in-law and grandchildren around, Atindra Mohan believes he does not need a latthi. But circumstances reveal that the family has no concern for him. Even when Atindra Mohan takes a tough stand on chalking out duties, they remain shamelessly unbothered.

In disgust, Atindra Mohan walks away and settles down in a slum to teach and awaken the poor and the down-trodden.

लाठी

बंगला/रंगीन/160 मिनट

निर्माता : रोबिन अग्रवाल; **निर्देशक/पटकथा लेखक :** प्रभात रॉय; **मुख्य अभिनेता :** विक्टर बैनर्जी; **मुख्य अभिनेत्री :** देबश्री रॉय; **सह-अभिनेता :** सौमित्र चटर्जी; **सह-अभिनेत्री :** ऋतुपर्णा सेनगुप्ता; **बाल कलाकार :** सायन डे; **छायाकार :** नन्दु भट्टाचार्य; **ध्वनि आलेखक :** चिन्मय, सुदीप्ता, सिद्धार्थ; **संपादक :** स्वप्न गुहा; **कला निर्देशक :** कार्तिक बोस; **वेशभूषाकार :** सिबु दास; **संगीत निर्देशक :** बप्पी लाहिड़ी; **गीतकार :** पुलक बैनर्जी; **पार्श्वगायक :** कुमार सानु, कविता कृष्णमूर्ति;।

स्कूल हैडमास्टर अतिन्द्र मोहन बैनर्जी 65 वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त होते हैं। उन्हें मिले अनेक उपहारों में एक बूढ़े के चलने के लिए लाठी भी होती है।

बेटों, बहुओं और पोते-पोतियों से घिरे अतिन्द्र मोहन समझते हैं कि उन्हें लाठी की जरूरत नहीं है। परन्तु बदलते हालात उन्हें बताते हैं कि परिवार का उनसे कोई दारोमदार नहीं है। यहां तक कि जब वे कार्य करने का फैसला करते हैं तो लापरवाह और बेशर्म बने रहते हैं।

उस दुख में अतिन्द्र मोहन घर छोड़कर एक स्लम में चले जाते हैं। वहां वे गरीबों और शोषितों को जगाना और पढ़ाना शुरू कर देते हैं।

LITTLE SOLDIERS

Telugu/Colour/145 min

Producer/Director/Screenplay Writer: G. Ganga Raju; **Leading Actor:** Ramesh Arvind; **Leading Actress:** Heera Rajgopal; **Supporting Actor:** Kota Sreenivasarao; **Supporting Actress:** Rohini Hatangadi; **Child Artists:** Aditya, Kavya; **Cameraman:** Rasool; **Editor:** Mohan Ramarao; **Music Director:** Sree; **Lyricist:** Sitarama Sastry; **Playback Singer:** Deepika.

When Anita and Arvind marry, they are estranged from their parents. The grandchildren, Sunny and Bunny, have never met Anita's mother, Rajeshwari, or Arvind's father, Major Prasad.

During an illness, Rajeshwari has a change of heart about her daughter. Her brother, Giri, is not happy, because Anita will once again inherit what he had come to believe as his. He sets up murderous plans with the help of Masthan.

Masthan kills Anita and Arvind, but Sunny and Bunny escape. Masthan stalks them even when they are given into Major Prasad's care. Later, the children unknowingly land up at Rajeshwari's home. It is a while before they realise the kinship and have a reunion.

Rajeshwari meets the Major, while Giri and Masthan are still trying to kill the kids. Ultimately, Sunny, Bunny and the Major bring the killers' plans to an end.

लिटिल सोल्जर्स

तेलुगु/रंगीन/145 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक : जी. गंगा राजू; **मुख्य अभिनेता** : रमेश अरविन्द; **मुख्य अभिनेत्री** : हीरा राजगोपाल; **सह-अभिनेता** : कोटा श्रीनिवासराव; **सह-अभिनेत्री** : रोहिणी हट्टंगड़ी; **बाल कलाकार** : आदित्य, काव्या; **छायाकार** : रसूल; **संपादक** : मोहन रामाराव; **संगीत निर्देशक** : श्री; **गीतकार** : सीताराम शास्त्री; **पार्श्वगायक** : दीपिका।

अनिता और अरविन्द विवाह करने के बाद अपने माता-पिता से दूर हो जाते हैं। उनके बच्चे सन्नी और बन्नी अपने दादा मेजर प्रसाद और नानी राजेश्वरी से कभी नहीं मिले।

एक बीमारी के दौरान राजेश्वरी को अपनी बेटी की कमी का अहसास होता है, परन्तु अनिता का भाई गिरी उसकी वापसी से प्रसन्न नहीं होता क्योंकि उसे जायदाद अपने हाथों से निकलती दिखाई देती है। वह मस्तान की मदद से हत्या का षड्यंत्र रचता है।

मस्तान अनिता और अरविन्द को मार देता है परन्तु सन्नी और बन्नी बच जाते हैं। मेजर प्रसाद की देख-रेख में दिए जाने के बाद भी मस्तान उनका पीछा करता है। बाद में, बच्चे अनजाने ही राजेश्वरी के घर पहुंच जाते हैं। तभी उन्हें सारी सच्चाई का पता लगता है।

राजेश्वरी मेजर से मिलती है। इसी बीच गिरी और मस्तान बच्चों की हत्या की कोशिश करते हैं। अंततः सन्नी, बन्नी और मेजर हत्यारों के षड्यंत्र का पर्दाफाश कर देते हैं।

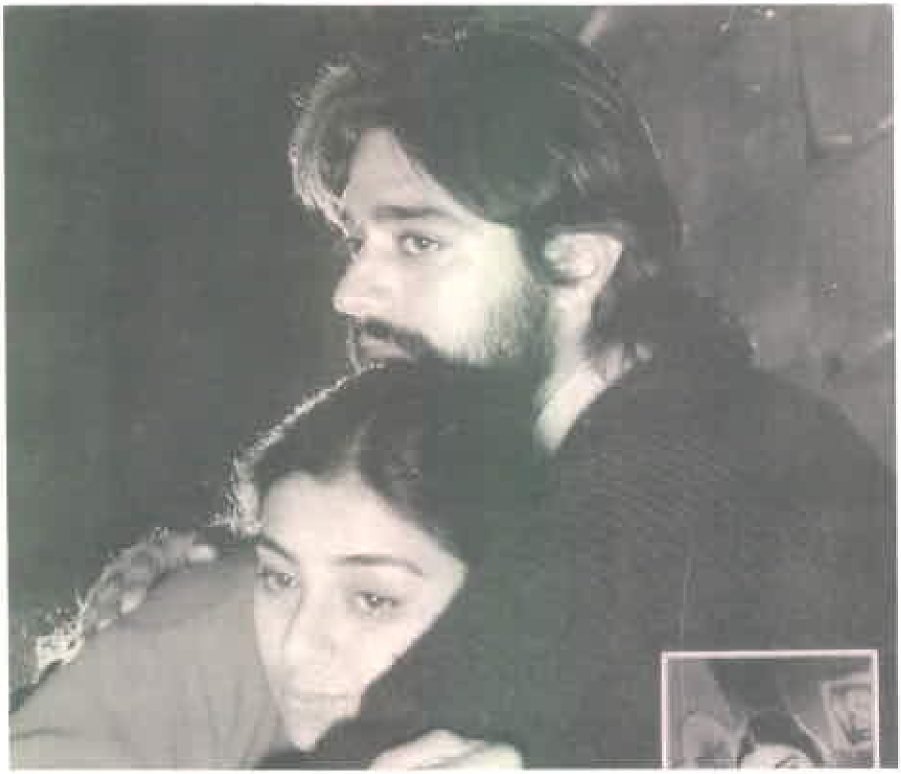

MAACHIS

Hindi/Colour/155 min

Producer: R.V. Pandit; **Director:** Gulzar; **Screenplay Writer/Lyricist:** Gulzar; **Leading Actor:** Chandrachur Singh; **Leading Actress:** Tabu; **Supporting Actor:** Om Puri; **Supporting Actress:** Navninder Behl; **Cameraman:** Manmohan Singh; **Audiographer:** Narinder Singh; **Editors:** M. Ravi, Sadanand Shetty; **Art Director:** Nitin Desai; **Costume Designer:** Salim Arif; **Music Director:** Vishal Bharadwaj; **Choreographer:** Madhav Kishen; **Playback Singers:** Suresh Wadkar, Hari Haran, Lata Mangeshkar.

Maachis is set in the Punjab against the backdrop of the growth of terrorism and its impact on the people of the State.

Jassi is arbitrarily picked up and tortured by the police for an alleged murder. Kripal, engaged to marry Jassi's sister is anguished over his friend's condition. He aimlessly wanders away from the village.

When he meets Sanatan, he hears many grievances about what is happening around them. Sanatan leads him to meet a group of youngsters affected by what happened in the Punjab. Soon, events unfold the tragedy which overtook the Punjab.

माचिस

हिन्दी/रंगीन/155 मिनट

निर्माता : आर.वी. पंडित; **निर्देशक :** गुलजार; **पटकथा लेखक/गीतकार :** गुलजार; **मुख्य अभिनेता :** चन्द्रचूड़ सिंह; **मुख्य अभिनेत्री :** तब्बू; **सह-अभिनेता :** ओमपुरी; **सह-अभिनेत्री :** नवनिन्दर बहल; **छायाकार :** मनमोहन सिंह; **ध्वनि आलेखक :** नरेन्द सिंह; **संपादक :** एम. रवि, सदानन्द शेट्टी; **कला निर्देशक :** नितिन देसाई; **वेशभूषाकार :** सलीम आरिफ; **संगीत निर्देशक :** विशाल भारद्वाज; **नृत्य संयोजक :** माधव किशन; **पार्श्वगायक :** सुरेश वाडकर, हरिहरन, लता मंगेशकर।

माचिस पंजाब में बढ़ते आतंकवाद के कारण और स्थानीय लोगों पर उसके प्रभाव की कथा है।

पुलिस जस्सी को एक कथित हत्या के सिलसिले में जबर्दस्ती उठा ले जाती है और बुरी तरह से मारपीट करती है। कृपाल जिसकी सगाई जस्सी की बहन से हुई है, वह अपने दोस्त की हालत देखकर रोष से भर जाता है। वह गांव से बाहर पगलाया सा घूमता है।

एक दिन उसकी मुलाकात सनातन से होती है और तब उसे ऐसे ही अनेक घटनाओं का पता चलता है। सनातन उसे युवाओं के एक गुट में शामिल होने के लिए उकसाता है। जल्द ही वह सब कुछ शुरू हो जाता है जिससे पंजाब आक्रांत है।

MINSARA KANAVU

Tamil/Colour/141 min

Producer: AVM Productions; **Director:** Rajiv Menon; **Screenplay Writer:** V.C. Kuganathan; **Leading Actors:** Arvind Swami, Prabhu Deva; **Leading Actress:** Kajol; **Supporting Actor:** Nasser; **Supporting Actress:** Arundhati Rao; **Cameraman:** Venu; **Audiographer:** K. Sampath; **Editor:** Suresh Urs; **Art Director:** Thotta Tharrani; **Costume Designer:** B. Lakshmi Priya; **Music Director:** A.R. Rahman; **Lyricist:** Kaviarasu Vairamuthu; **Choreographers:** Saroj Khan, Prabhu Deva, Farah Khan; **Playback Singers:** S.P. Balasubramaniam, M. Vasudevan, Unni Menon, K. Kay, Hari Haran, S. Mahadevan, S. Sreeni, Sujatha, Anuradha, Sadhna, Tebi.

Motherless Priya is in the care of the nuns in the school where she studies. Thomas has returned from America and visits his aunt at the school. He falls in love with Priya, but she is just friendly. Later Priya declares her decision to become a nun. The nuns advise her to experience life a little more. Meanwhile, a dumbstruck Thomas enlists the help of Deva and others to get Priya closer to himself in course of which Priya and Deva develop deep feelings for each other. In the triangular conflict, Priya leaves home and Deva has an accident. Priya promises a lifetime of service to God if Deva is saved. Thomas comes to terms with the reality and stops Priya's initiation ceremony. He makes way for Deva and Priya to come together.

मिन्सारा कणवु

तमिल/रंगीन/141 मिनट

निर्माता : ए.वी.एम. प्रॉडक्शंज; **निर्देशक** : राजीव मेनन; **पटकथा लेखक** : वी.सी. कुगानाथन; **मुख्य अभिनेता** : अरविन्द स्वामी, प्रभु देवा; **मुख्य अभिनेत्री** : काजोल; **सह-अभिनेता** : नसीर; **सह-अभिनेत्री** : अरुंधती राव; **छायाकार** : वेणु; **ध्वनि आलेखक** : के. सम्पत; **संपादक** : सुरेश अर्स; **कला निर्देशक** : थोटा थरणी; **वेशभूषाकार** : बी. लक्ष्मी प्रिया;; **संगीत निर्देशक** : ए.आर. रहमान; **गीतकार** : कविअरस् वैरामुथु; **नृत्य संयोजक** : सरोज खान, प्रभु देवा, फराह खान; **पार्श्वगायक** : एस.पी. बालसुब्रह्मणियम्, एम. वासुदेवन, एस. स्रीनी, सुजाता, अनुराधा, साधना, तबी।

प्रिया अपनी मां की मृत्यु के बाद ननों की देख-रेख में अध्ययन करती है। थॉमस अमेरिका से वापस आता है और अपनी आंटी से मिलने स्कूल पहुंचता है। वह प्रिया से प्रेम करने लगता है पर वह सिर्फ मित्रवत् रहती है।

बाद में प्रिया स्वयं भी नन बनने का निर्णय लेती है। दूसरी नन उसे जिन्दगी को पहले और समझने को कहती है। इसी बीच थॉमस, देवा और अन्य साथियों की मदद लेता है ताकि प्रिया उसे प्यार करने लगे। पर प्रिया और देवा के बीच एक मजबूत रिश्ता बन जाता है। प्रेम के इस त्रिकोण में प्रिया घर छोड़कर चली जाती है और देवा के साथ एक दुर्घटना घटती है।

प्रिया देवा की जीवन रक्षा के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह आजीवन ईश्वर सेवा करेगी। थॉमस को सारी सच्चाई का पता चलता है और वह प्रिया के नन बनने की तैयारियों को रोक देता है। वह देवा और प्रिया को एक-दूसरे से मिलाता है।

NINNE PELLADATHA

Telugu/Colour/140 min

Producer: Akkineni Nagarjuna; **Director/Screenplay Writer:** Krishna Vamsi; **Leading Actor:** Akkineni Nagarjuna; **Leading Actress:** Tabu; **Supporting Actor:** Giri Babu; **Supporting Actress:** Laxmi; **Cameraman:** K. Prasad; **Editor:** Shankar; **Art Director:** Ranga; **Costume Designer:** Sekhar; **Music Director:** Sandeep Chowtha; **Lyricist:** Seetharama Sastry; **Playback Singers:** Hari Haran, Chithra.

Bhavani and her husband Prasad have been victims of a family feud with Satyanarayana. Many years later, Satnarayana's son, Sreenu and Prasad's daughter, Mahalakshmi come into contact. A pilot training programme brings them close and they decide to marry.

Just before the engagement, family members learn about the old feuding connections of the parents. Both sides refuse to give permission for the wedding. In desperation, Mahalakshmi tries to commit suicide.

Now, both sides of the family want her to survive, and she does. After this the two feuding families agree to the marriage between Sreenu and Mahalakshmi.

निण्णे पेल्लाडुता

तेलुगु/रंगीन/140 मिनट

निर्माता : अक्किनेनी नागार्जुन; **निर्देशक/पटकथा लेखक :** कृष्ण वंशी; **मुख्य अभिनेता :** अक्किनेनी नागार्जुन; **मुख्य अभिनेत्री :** तब्बू; **सह-अभिनेता :** गिरि बाबू; **सह-अभिनेत्री :** लक्ष्मी; **छायाकार :** के. प्रसाद; **संपादक :** शंकर; **कला निर्देशक :** रंगा; **वेशभूषाकार :** शेखर; **संगीत निर्देशक :** संदीप चौथा; **गीतकार :** सीताराम शास्त्री; **पार्श्वगायक :** हरिहरन, चित्रा।

भवानी और उसके पति प्रसाद की सत्यनारायण से पुश्तैनी दुश्मनी है। कई वर्षों बाद सत्यनारायण का बेटा श्रीनू और प्रसाद की बेटी महालक्ष्मी पायलट प्रशिक्षण के एक कार्यक्रम के दौरान एक-दूसरे के नजदीक आते हैं और विवाह का फैसला करते हैं।

सगाई के कुछ वक्त पहले ही पारिवारिक सदस्यों को पुश्तैनी दुश्मनी का पता चलता है और दोनों पक्ष विवाह से इंकार कर देते हैं। दुखी महालक्ष्मी आत्महत्या की कोशिश करती है।

इस मौके पर दोनों पक्ष महालक्ष्मी की सलामती के लिए प्रार्थना करते हैं और वह बच जाती है। इसके बाद दोनों परिवार श्रीनू और महालक्ष्मी के विवाह के लिए तैयार हो जाते हैं।

राग-बिराग

असमिया/रंगीन/100 मिनट

निर्माता : भबेन बरुआ और खनीन बरुआ; **निर्देशक :** विद्युत चक्रवर्ती; **मुख्य अभिनेता :** प्रांजल साइकिया; **मुख्य अभिनेत्री :** सिमि; **सह-अभिनेता :** कौशिक नाथ; **छायाकार :** मृणाल कांति दास; **संपादक :** ए. श्रीकर प्रसाद; **कला निर्देशक :** दिगन्त मजुमदार; **संगीत निर्देशक :** शेर चौधरी; **वेशभूषाकार :** रानी दत्ता बरुआ।

यह कथा एक मध्यवर्गीय परिवार पर केन्द्रित है जिसमें दो पीढ़ियों के बीच त्रासद रूप से मत-विभिन्नता बढ़ रही है। 90 के शहर में वे सभी मध्यवर्गीय भ्रम से दुखी हैं।

परिवार के सभी सदस्य आजादी, बदलाव, खुशियों और जिन्दगी को अपने ढंग से व्याख्यायित कर रहे हैं। खुशियों को जीने और भ्रम में जीने के इस भयंकर दृष्टिकोण को एक संन्यासी और एक युवा स्त्री के प्रतीक द्वारा चित्रित किया गया है। इसमें युवा वृद्ध, स्त्री-पुरुष के विभिन्न रिश्तों से उपजी अनेक जटिल परेशानियां हैं। इसमें आधुनिक जगत में सांसारिकता और संन्यास के मध्य संघर्ष का चित्र है।

RAG-BIRAG

Assamese/Colour/100 min

Producers: Bhaben Baruah and Khanin Baruah; **Director:** Bidyut Chakravarty; **Screenplay Writer:** Ranjit Sarma; **Leading Actor:** Pranjal Saikia; **Leading Actress:** Simi; **Supporting Actor:** Kaushik Nath; **Cameraman:** Mrinal Kanti Das; **Editor:** A. Sreekar Prasad; **Art Director:** Diganta Majumdar; **Music Director:** Sher Choudhary; **Costume Designer:** Rani Dutta Barua.

A family, apparently comfortably off, has to come to terms with terrible aberrations stretching across two generations. They all suffer from middle-class confusion in the city of the 90s.

Different members of the family are seeking joy, freedom, revolution or just life in their own ways. The story of this confusion and seeking is depicted through the symbolism of a sanyasi and a young woman. There are intricate complications arising from various relationships of the young and old, man and woman. These depict the conflict of renunciation and worldliness in the modern world.

RAO SAHEB

Marathi/Colour/135 min

Producer: K.B. Joshi, Ravindra Surve; **Director:** Sanjay Surkar; **Screenplay Writer/Lyricist:** Vijay Kuvalekar; **Leading Actor:** Mohan Joshi; **Leading Actress:** Madhu Kambikar; **Supporting Actor:** Prashant Subhedar; **Supporting Actress:** Ashwini Bhave; **Cameraman:** Harish Joshi; **Audiographer:** B.N. Sharma; **Editors:** Vishwas, Anil; **Costume Designer:** Avadhut Sane, Asita Joshi; **Music Director:** Anand Modok; **Choreographer:** Madhu Kembikar; **Playback Singers:** Ravindra Sathe, Jayashri Shivaram.

Rao Saheb is a dynamic youth brought up with values by his mother. His best friend is Bhan Joshi, who upholds Rao Saheb's mother's thinking. Subhadra is the college girl with whom Rao Saheb falls in love and marries.

Rao Saheb gets drawn into the world of politics, which takes him to the upper echelons of state-level power. In the process, Rao Saheb pursues a path of corruption and immorality. Sincere advice from Bhan Joshi and Subhadra falls on deaf ears.

Other policicians endeavour to bring Rao Saheb down from the dizzy heights of popularity he has reached. Over a period of time, they succeed. One by one, Rao Saheb's hangers-on desert him, until only his wife, Subhadra is beside him. Then one day, she too deserts him.

राव साहेब

मराठी/रंगीन/135 मिनट

निर्माता : के.बी. जोशी, रविन्द्र सुर्वे; **निर्देशक :** संजय सूरकर; **पटकथा लेखक/गीतकार :** विजय कुवलेकर; **मुख्य अभिनेता :** मोहन जोशी; **मुख्य अभिनेत्री :** मधु कम्बीकर; **सह-अभिनेता :** प्रशान्त सूबेदार; **सह-अभिनेत्री :** अश्विनी भावे; **छायाकार :** हरीश जोशी; **ध्वनि-आलेखक :** बी.एन. शर्मा; **संपादक :** विश्वास, अनिल; **वेशभूषाकार :** अवधूत साने, असिता जोशी; **संगीत निर्देशक :** आनन्द मोदक; **नृत्य संयोजक :** मधु कम्बीकर; **पार्श्वगायक :** रवीन्द्र साठे, जयश्री शिवराम;।

राव साहेब एक शानदार युवक है। उसकी मां ने उसमें अच्छे मूल्यों का निर्माण किया है। उसका प्रिय मित्र भान जोशी उसकी माता की सोच का अक्षरश: अनुसरण करता है। राव साहेब कालेज छात्रा सुभद्रा से प्यार करने लगता है और विवाह कर लेता है।

राव साहेब को राजनीति में घसीट लिया जाता है और वह राज्य-स्तरीय सत्ता के उच्च शिखर पर पहुंचता है। इस क्रम में वह अनैतिकता और भ्रष्टाचार में लिप्त हो जाता है। सुभद्रा और भान जोशी की नसीहतों को भी वह अनसुना कर देता है।

दूसरे राजनीतिज्ञ उसकी प्रतिष्ठा को गिराने की पूरी कोशिश करते हैं। कालांतर में वे सफल भी हो जाते हैं। एक के बाद एक सभी लोग उसे छोड़ जाते हैं। अंतत: एक दिन उसकी पत्नी भी उसे छोड़ कर चली जाती है।

साज़

हिन्दी/रंगीन/154 मिनट

निर्माता : अमित खन्ना, महेश भट्ट; **निर्देशक/पटकथा लेखक :** सई परांजपे; **गीतकार :** जावेद अख़्तर; **मुख्य अभिनेता :** जाकिर हुसैन; **मुख्य अभिनेत्री :** शबाना आज़मी; **सह-अभिनेता :** परीक्षित साहनी, अमर तलवार; **सह-अभिनेत्री :** अरुणा ईरानी, आयशा धारकर; **बाल कलाकार :** वैरेशी वारेकर, योगिता देशमुख, श्रुति भिण्डे; **छायाकार :** जी.एस. भास्कर; **ध्वनि-आलेखक :** नरेन्द्र सिंह; **संपादक :** ओम प्रकाश मक्कड़; **कला निर्देशक :** नितिन देसाई; **वेशभूषाकार :** ऐन टण्डन विएरा; **संगीत निर्देशक :** जाकिर हुसैन, भूपेन हजारिका, यशवंत देव, राजकमल; **पार्श्वगायक :** सुरेश वाडकर, कविता कृष्णमूर्ति, देवकी पंडित, ज्योत्स्ना हार्डीकर, श्वेता पंडित, श्रद्धा पंडित।

प्रसिद्ध गायक वृंदावन की दो प्रतिभाशाली बेटियां मानसी और बंसी हैं। पत्नी की मौत के सदमे से उबरने में असफल वृंदावन शराब का शिकार हो मर जाता है। मानसी और बंसी को उनको चाचा मुंबई ले आता है।

बड़ी बेटी मानसी फ़िल्म जगत में अपनी जादुई आवाज के बल पर प्रसिद्ध हो जाती है। परन्तु वह बंसी को गृहस्थी में झोंक देती है, जबकि वह भी कम प्रतिभाशाली नहीं है।

बचपन की प्रतिद्वंद्विता बहनों को अलग कर देती है। दोनों लोकप्रियता की नई बुलंदियों पर पहुंचती हैं।

इस बीच, बंसी की हिमान से मुलाकात होती है। वह उसकी तरफ झुक जाती है। जिन्दगी तब तक ठीक-ठीक चलती रहती है, जब तक वह अपनी आवाज नहीं खो देती। डॉ. सामंत उन्हें क्या दिलासा देता है?

SAAZ

Hindi/Colour/154 min

Producer: Amit Khanna, Mahesh Bhatt; **Director/Screenplay Writer:** Sai Paranjpye; **Lyricists:** Javed Akhtar; **Leading Actor:** Zakir Hussain; **Leading Actress:** Shabana Azmi; **Supporting Actor:** Parikshit Sahani, Amar Talwar; **Supporting Actress:** Aruna Irani, Ayesha Dharkar; **Child Artist:** Vaireshi Warekar, Yogita Deshmukh, Shruti Bhinde; **Cameraman:** G.S. Bhaskar; **Audiographer:** Narendra Singh; **Editor:** Om Prakash Makkad; **Art Director:** Nitin Desai; **Costume Designer:** Ann Tandon Vierra; **Music Directors:** Zakir Hussain, Bhupen Hazarika, Yashwant Dev, Raj Kamal; **Playback Singers:** Suresh Wadkar, Kavita Krishnamurthy, Devki Pandit, Jyotsna Hardikar, Shweta Pandit, Shradhha Pandit.

Mansi and Bansi are gifted daughters of an illustrious singer father, Vrindavan. Unable to bear the death of his wife, Vrindavan dies of alcoholism. An uncle brings Mansi and Bansi to Mumbai.

Elder sister, Mansi, soon establishes her reputation as a singer in the film industry with her wonderful voice. She relagates Bansi into domesticity, equally gifted.

Their childhood rivalry climaxes when Bansi completely breaks away from her sister, scaling new heights of popularity.

After previous personal relationships go awry, Bansi sucumbs to Himan, her life moves on, till she loses her voice. What hope does the therapist, Dr. Samanth, hold for her?

SANGHAT

Bengali/Colour/110 min

Producer/Director: Pinaki Chaudhuri; **Screenplay Writer:** Joy Mukherji; **Leading Actress:** Dolon Roy; **Supporting Actors:** Biplab Chatterjee, Koushik Sen; **Supporting Actress:** Chitra Sen; **Cameraman:** Asim Bose; **Editor:** Jayanta Laha; **Audiographers:** Subha Haldar, Jyoti Chatterjee; **Art Director:** Suresh Chandra Chanda; **Music Director:** Chandan Roy Chowdhury; **Playback Singer:** Indrani Sen.

This film is based on the theme of perennial struggle that a human being faces from birth till death.

The film revolves around Rituparna, who is widowed within six months of her marriage. She returns to her parents' home, but it is not the same. Rituparna takes charge of the household, does a part-time job and takes up amateur acting.

As her career progresses, there are subtle resentments to her odd hours of work. When she is at the peak of her career, she has an accident. She loses all hope. A forlorn Rituparna is therefore overwhelmed when the playwright, Mirnalkanti, offers her a chance to direct a play.

संघात

बंगला/रंगीन/110 मिनट

निर्माता/निर्देशक : पिनाकी चौधरी; **पटकथा लेखक :** जॉय मुखर्जी; **मुख्य अभिनेत्री :** डोलोन रॉय; **सह-अभिनेता :** विप्लव चटर्जी, कौशिक सेन; **सह-अभिनेत्री :** चित्रा सेन; **छायाकार :** असीम बोस; **संपादक :** जयंत लाहा; **ध्वनि आलेखक :** शुभा हलधर, ज्योति चटर्जी; **कला निर्देशक :** सुरेश चन्द्र चन्दा; **संगीत निर्देशक :** चन्दन राय चौधरी; **पार्श्वगायक :** इन्दानी सेन।

यह फ़िल्म नित्य संघर्ष की कथा है जिसे मनुष्य जन्म से मृत्यु तक भोगता है।

यह फ़िल्म ऋतुपर्णा के चारों ओर घूमती है जो विवाह के छह महीने बाद ही विधवा हो जाती है। वह अपने मायके आ जाती है, पर स्थितियां वैसी नहीं रहतीं। घर के सारे कामों के साथ वह पार्ट-टाइम नौकरी करती है और शौकिया तौर पर अभिनय भी।

जैसे-जैसे वह उन्नति करती है उसे रात-बिरात काम करने के लिए नाराजगी भी सहनी पड़ती है। अपने कैरियर के चरमोत्कर्ष पर उसके साथ एक दुर्घटना घटती है और वह हताश हो जाती है। असहाय ऋतुपर्णा को नाटककार मृणालकांति द्वारा नाट्य-निर्देशन का मौका दिए जाने से बेहद खुशी मिलती है।

SARDARI BEGUM

Urdu/Colour/123 min

Producer: Amit Khanna, Mahesh Bhatt; **Director:** Shyam Benegal; **Screenplay Writers:** Khalid Mohammed, Shama Zaidi; **Leading Actor:** Rajit Kapoor; **Leading Actresses:** Smriti Mishra, Kiron Kher; **Supporting Actors:** Amrish Puri, Salim Ghouse; **Supporting Actress:** Rajeshwari Sachdev; **Child Artist:** Syed Khurshid; **Cameraman:** Sanjay Dharankar; **Audiographer:** Ashwyn Balsaver; **Editor:** Aseem Sinha; **Art Director:** Sameer Chanda; **Costume Designer:** Pia Benegal; **Music Director:** Vanraj Bhatia; **Lyricist:** Javed Akhtar; **Choreographer:** Roshan Kumari; **Playback Singers:** Asha Bhonsle, Shubha Joshi, Aarti Ankalikar, Poorva Joshi.

Tehzeeb Abbasi, journalist-daughter of Jabbar, has come to cover the funeral of Sardari Begum, which is a media event due to communal overtones. She is surprised to see her father among the mourners. She is shocked to learn that Sardari Begum was Jabbar's sister.

Sardari Begum, ostracised by the family because she had defied the family to learn music from a courtesan became the mistress of a landlord and had a daughter, Sakina. To pursue music, she left the landlord and ran away to Delhi with Sadiq, and separated from him as well.

Tehzeeb finds similarities with herself in Sardari Begum's story. She has relationship with the married man, Mark, her boss. Tehzeeb decides to join another newspaper.

Sakina, who had revolted against her mother, decides to honour Sardari Begum's wish, starts singing.

सरदारी बेगम

उर्दू/रंगीन/123 मिनट

निर्माता : अमित खन्ना, महेश भट्ट; **निर्देशक** : श्याम बेनेगल, **पटकथा लेखक** : खालिद मोहम्मद, शमा जैदी; **मुख्य अभिनेता** : रजित कपूर; **मुख्य अभिनेत्री** : स्मृति मिश्रा, किरण खेर; **सह-अभिनेता** : अमरीश पुरी, सलीम घोष; **सह-अभिनेत्री** : राजेश्वरी सचदेव; **बाल कलाकार** : सैयद खुर्शीद, **छायाकार** : संजय धारनकर; **ध्वनि आलेखक** : अश्विन बलसावर; **संपादक** : असीम सिन्हा; **कला निर्देशक** : समीर चन्दा; **वेशभूषाकार** : पिया बेनेगल; **संगीत निर्देशक** : वनराज भाटिया; **गीतकार** : जावेद अख्तर; **नृत्य संयोजक** : रोशन कुमारी; **पार्श्वगायक** : आशा भोंसले, शुभा जोशी, आरती आंकलीकर, पूर्वा जोशी।

तहजीब अब्बासी जब्बार की पत्रकार-पुत्री सरदारी बेगम के जनाजे को कवर करने के लिए आती है जिनकी मौत सांप्रदायिक झड़प के दौरान हुई है। गमगीनों के बीच अपने पिता को देखकर वह हैरान है। बाद में उसे पता चलता है कि सरदारी बेगम उनके पिता जब्बार की बहन थी।

सरदारी बेगम को परिवार त्याग देता है क्योंकि वे उसके एक मिरासिन से संगीत सीखने के खिलाफ हैं। वह एक जमींदार की रखैल बनती है। उन्हें एक बेटी सकीना होती है। संगीत के अपने जुनून में वह जमींदार को छोड़ सादिक के साथ दिल्ली चली आती है। आखिरकार, एक दिन उन्हें सादिक से भी अलग होना पड़ता है।

तहजीब को सरदारी बेगम की कहानी में खुद से अनेक समानताएं दिखाई देती हैं। उसके शादीशुदा मालिक मार्क से गहरे संबंध हैं। तहजीब दूसरे अखबार से जुड़ने का फैसला करती है।

सकीना सरदारी बेगम के मरने के कुछ वक्त पहले उनकी इच्छा का आदर करते हुए समझौता कर लेती है और गायकी से जुड़ जाती है।

SHUNYA SWAROOPA

Oriya/Colour/100 min

Producer: Alaya Kumar Mohanty; **Director:** Himansu Sekhar Khatua; **Screenplay Writer:** Pravat Kumar Parida; **Leading Actor:** Bikash Das; **Leading Actress:** Laxmi Devi; **Supporting Actor:** Surya Mohanty; **Supporting Actress:** Aparjita Mohanty; **Child Artist:** Linku; **Cameraman:** Sudheer Palsane; **Audiographer:** Manas Ranjan Choudhury; **Editor:** Prasanta Kumar Naik; **Art Director:** Amiya Moharana; **Music Director:** B.V. Karanth.

Bikas is a monk who has been living in a monastery for twelve years. His guru and he set out on a journey to the outisde world. When they reach his home village the Guru advises Bikas to take alms from his mother. Mother was never reconciled to the idea of a monk-son.

Malathi, who has always been in love with Bikas, is at home with mother, who refuses to give alms to him. The guru and Bikas proceed to the city. The rush of the city drives Bikas insane and he flees to his village. Malathi finds him unconscious on her doorstep. On waking up, Bikas and Malathi are seized with desire for each other.

Riddled with a sense of guilt, Bikas returns to the monastery. There he is refused the higher order and advised to return home. In the village, Bikas finds Malathi's and his own house deserted. Bikas has to proceed for another journey.

शून्य स्वरूप

उड़िया/रंगीन/100 मिनट

निर्माता : अलाय कुमार मोहन्ती; **निर्देशक :** हिमांशु शेखर खतुआ; **पटकथा लेखक :** प्रभात कुमार परिदा; **मुख्य अभिनेता :** विकास दास; **मुख्य अभिनेत्री :** लक्ष्मी देवी; **सह-अभिनेता :** सूर्य मोहन्ती; **सह-अभिनेत्री :** अपराजिता मोहन्ती; **बाल कलाकार :** लिन्कू; **छायाकार :** सुधीर पलसाने; **ध्वनि आलेखक :** मानस रंजन चौधरी; **संपादक :** प्रशान्त कुमार नायक; **कला निर्देशक :** अमिय मोहरना; **संगीत निर्देशक :** बी.वी. कारन्थ।

बिकास एक भिक्षु है जो पिछले बारह वर्षों से मठ में रह रहा है। वह और उसके गुरु बाहरी जगत को देखने यात्रा पर निकलते हैं। जब वह अपने गांव पहुंचता है तो उसके गुरु उसको अपनी माता से भिक्षा लाने को कहते हैं। मां ने अपने बेटे का यह रूप कभी स्वप्न में नहीं सोचा था।

मालती जो बिकास को हमेशा से प्यार करती थी, उसको मां के साथ रहती है। वह भिक्षा देने से इंकार कर देती है। गुरु और बिकास शहर में चले जाते हैं। शहर की चकाचौंध से बिकास भ्रमित हो जाता है और वापस अपने गांव भाग जाता है। वह दरवाजे पर बेहोश पड़ा होता है। जागने पर बिकास और मालती एक-दूसरे को तृप्तिदायक दृष्टि से देखते हैं।

अपराध-बोध से ग्रस्त बिकास वापस मठ पहुंचता है। किन्तु वहां से बहिष्कृत कर उसे वापस घर जाने का आदेश मिलता है। गांव में बिकास मालती और मां दोनों को नहीं पाता। बिकास अगली यात्रा के लिए निकल पड़ता है।

TAMANNA

Hindi/Colour/135 min

Producer: Pooja Bhatt; **Director:** Mahesh Bhatt; **Screenplay Writer:** Tanuja Chandra; **Leading Actor:** Paresh Rawal; **Leading Actress:** Pooja Bhatt; **Supporting Actor:** Manoj Bajpai; **Cameraman:** Bhooshan Patel; **Music Director:** Anu Malik; **Lyricist:** Nida Fazli; **Playback Singer:** Alka Yagnik.

Ranveen Chopra has left his child to die in a garbage can because he does not want a daughter. Tikku, a transvestite saves the child and brings her home. Facing many hardships, Tikku raises the child, whom he names Tamanna. After eighteen years, Tamanna is shocked to discover Tikku is a transvestite. And then becomes adamant to find her parents. Tikku with the help of Salim and Sajid tracks down Chopra. Tamanna systematically ruins Chopra's life till the truth is exposed. After Chopra is arrested, Tamanna returns to her real family—Tikku, Salim and Sajid.

तमन्ना

हिन्दी/रंगीन/135 मिनट

निर्माता : पूजा भट्ट; **निर्देशक** : महेश भट्ट; **पटकथा लेखक** : तनुजा चन्द्रा; **मुख्य अभिनेता** : परेश रावल; **मुख्य अभिनेत्री** : पूजा भट्ट; **सह-अभिनेता** : मनोज वाजपेयी; **छायाकार** : भूषण पटेल; **संगीत निर्देशक** : अन्नू मलिक; **गीतकार** : निदा फाजली; **पार्श्वगायक** : अलका।

रणवीर चोपड़ा अपने बच्चे को कूड़े के ढेर पर मरने के लिए फेंक देता है क्योंकि उसे बेटी का होना पसंद नहीं है। एक हिजड़ा टिक्कू उसको उठाकर अपने घर ले आता है। अनेक कठिनाइयों को झेलते हुए वह बच्चे की परवरिश करता है और उसका नाम तमन्ना रखता है।

अठारह वर्ष बाद तमन्ना को यह जानकर गहरा धक्का लगता है कि टिक्कू एक हिजड़ा है। तब वह अपने असली माता-पिता की खोज में लग जाती है। टिक्कू सलीम और साजिद की मदद से चोपड़ा का पीछा करता है।

तमन्ना सुनियोजित ढंग से चोपड़ा की जिन्दगी बर्बाद कर देती है। चोपड़ा के गिरफ्तार होने के बाद तमन्ना वापस अपने असली परिवार टिक्कू, सलीम और साजिद के बीच आ जाती है।

कथासार : Synopses
ग़ैर-कथाचित्र Non-Feature Films

आत्मीयम्

मलयालम/21 मिनट 30 सैकेण्ड

निर्देशक : नन्दकुमार कविल; **छायाकार** : साजन के. जोस; **ध्वनि आलेखक** : अजय कुमार पी.बी.; **संपादक** : ए.वी. नारायणन्; **कला निर्देशक** : मोहम्मद राजी।

जब एक औरत आत्महत्या का प्रयास करती है तब एक आदमी उसे रोकता है और अपना अतीत बतलाता है।

वह आदमी पवित्र वेशभूषा पहनने वाले एक परिवार से संबंध रखता है। उसके पिता की हत्या कर दी जाती है और जमींदार उसकी मां को उठा ले जाता है। वह आवारा बन जाता है और इसी दौरान एक दिन वो अपनी मां को एक वेश्यालय में पाता है।

अंततः वह शक्ति अर्जित करता है और आत्महत्या करने वालों को जान बचाना आरंभ कर देता है।

ATHMEEYAM

Malayalam/21.30 min

Director: Nandkumar Kavil; **Cameraman:** Sajan K. Jose; **Audiographer:** Ajaykumar P.B.; **Editor:** A.V. Narayanan; **Art Director:** Mohammed Razi.

When a woman tries to commit suicide, a man stops her. Then he narrates his past.

The man belongs to a family of performers who wear sacred costumes. When his father was murdered, the landlord took away his mother. He became a wanderer and on his way, one day found his mother in a brothel.

Ultimately, he acquires strength. And now helps people driven to the point of suicide.

भीत

बंगला/59 मिनट

निर्माता : फ़िल्म प्रभाग, परिवार कल्याण विभाग; **निर्देशक** : गुल बहार सिंह; **कहानी-पटकथा लेखक** : नेपाल नाग; **छायाकार** : स्वप्न नन्दी, अनिल घोष; **ध्वनि आलेखक** : रंजन पांडे; **संपादक** : उज्जल नंदी।

प्रतिमा पश्चिम बंगाल के गांव में समर्पित स्वास्थ्य विस्तार कार्यकर्ता है। वह प्रसूति में हुई अपनी बहन की मौत तथा स्वयं के बांझपन से त्रस्त है। उसके बांझपन का अहसास उसे उसकी सास व गांव के लोग हर पल दिलाते रहते हैं।

प्रतिमा बच्चों को प्यार और दुलार देती है। देवर और ननद भी गांव के लिए उसके कार्य में हाथ बंटाते हैं। वह ग्रामीणों को परिवार कल्याण की जरूरत पर राजी करने में सफल होती है।

अंत में, वह स्वयं भी मातृत्व-सुख पाती है।

BHIT

Bengali/59 min

Producer: Films Division, Family Welfare Cell; **Director:** Gul Bahar Singh; **Story-script Writer:** Nepal Nag; **Cameraman:** Swapan Nandy, Anil Ghosh; **Audiographer:** Ranjan Pandey; **Editor:** Ujjal Nandy.

Pratima is a dedicated health extension worker in a West Bengal village. She is haunted by the death of her sister in childbirth and her own barrenness which her mother-in-law and the villagers, never let her forget.

Pratima adores children and nurses them with affection. And her brother-in-law and sister-in-law, both support her in her missionary zeal in village work. She succeeds in convincing the village folk about the necessity of family welfare.

In the end, she herself tastes the sweet fruit of motherhood.

समाचार पत्रिका सं. 309— भिवण्डी ट्रेजडी

अंग्रेजी

निर्देशक : वी. पैकिरीसामी।

यह फ़िल्म भिवण्डी में हुए विषाक्त भोजन की दुर्घटना के तुरन्त बाद होने वाली प्रतिक्रियाओं और घटनाओं का चित्रण करती है। यह प्रवासी कामगारों की जिन्दगी को खतरे में डालने वाली विभिन्न स्वास्थ्य विपत्तियों तथा उनके आशय का भी विवेचन करती है।

N.M. No. 309— BHIWANDI TRAGEDY

English

Director: V. Packirisamy.

This film depicts the events that took place immediately after the food poisoning in Bhiwandi. It also analyses the various health hazards and its implications on the life of migrant labourers.

धातु झर 96

बंगला/40 मिनट

निर्देशक/छायाकार : नीलोत्पल मजूमदार; **पटकथा लेखक/सहयोगी निर्देशक** : बालक घोष; **सहायक निर्देशक** : तीर्थंकर दासगुप्ता; **ध्वनि आलेखक** : चिन्मय नाथ।

गोपाल की मां को एक अजीब विश्वास है कि अगर उसके बच्चों को पर्याप्त दूध मिलता रहे तो वे भयंकर महामारियों की चपेट में आने से बचे रहेंगे। इसके लिए वह पत्रों द्वारा अपने पति को बार-बार इस बात की याद दिलाती है।

लेकिन उसका एक बच्चा महामारी की भेंट चढ़ जाता है। उसे सदमा लग जाता है, पर वह जीवित रहती है।

गोपाल की मां जैसे साधारण मनुष्यों की एकमात्र यही कामना रहती है कि उन्हें भरपेट भोजन और पर्याप्त दूध मिलता रहे।

DHATU JHAR '96

Bengali/40 min

Director/Cinematographer: Nilotpal Majumdar; **Screenplay writer/Associate Director:** Balaka Ghosh; **Assistant Director:** Tirthankar Dasgupta; **Audiographer:** Chinmoy Nath.

Gopal's mother has a strange belief that reasonable supply of milk would protect her children from the violent outbreak of epidemics. Through letters, she makes repeated appeals to her husband to ensure a mouthful of milk for the children.

But she loses one of her children of the epidemic. Though she reels from shock, she survives.

For ordinary human beings like Gopal's mother, a continued good harvest and an ensured supply of milk are all they pray for.

हस्तिर कन्या

असमिया/53 मिनट

निर्देशक : प्रबीण हजारिका।

राज परिवार की प्रतिमा बरुआ पांडे की गोलपरिया गीतों की प्रस्तुति के लिए प्रसिद्ध हैं। बचपन में गोदाधर नदी के किनारे नाविकों के गीतों, उनके पिता के लिए काम करने वाले हाथी-प्रशिक्षक महंत के गीतों को वे कंठस्थ करती थीं।

पारिवार के विरोध के बावजूद, प्रतिमा बरुआ पांडे पिता और भबेन सिंह राय तथा डॉ. भूपेन हजारिका के प्रोत्साहन से आगे बढ़ती रहीं। उन्होंने फ़िल्मों तथा रेडियो के लिए अनेक गीत गाए। इसके लिए उन्हें अनेक पुरस्कार और 1991 में पद्मश्री दिए गए।

60 वर्षीय प्रतिमा बरुआ पांडे दो विवाहित पुत्रियों के साथ सुखद वैवाहिक जीवन जी रही हैं। वे आज भी उतनी ही शिद्दत से गोलपरिया गीतों के संसार से जुड़ी हुई हैं।

HASTIR KANYA

Assamese/53 min

Director: Prabin Hazarika.

Pratima Barua Pandey, well-known for her rendering of Goalpariya songs, comes from a royal family. In her childhood, she memorised the boatmen songs on the riverbanks of Godadhar and the celebratory songs of elephant trainers, working for her father.

In spite of disdain from the family, Pratima Barua Pandey was encouraged by her father, and family friends like Bhaben Singh Roy and Dr. Bhupen Hazarika. She sang songs for films, broadcast songs on radio and received many awards, including the Padmashree in 1991.

At sixty, Pratima Barua Pandey is happily married with two married daughters. She is still intensely involved in her world of Goalpariya songs.

नौका चरितरामू

तेलुगु-तमिल-अंग्रेजी/69 मिनट

लेखक/निर्देशक : सरोज सत्यनारायण; **छायाकार :** मधु अम्बट; **संगीत निर्देशक :** एल. वैद्यनाथन।

तेलुगु रचनाकार त्यागराज का गीति-नाट्य **नौका चरितरामू** बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में दक्षिण भारत की तीन महिला संगीतज्ञों के अन्तर्जीवन का बाह्य चित्रण है। एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी, डी.के. पट्टाम्मल तथा टी. वृन्दा के विषम जीवन को एक युवा यात्री की यात्रा द्वारा उकेरा गया है।

दक्षिण भारतीय संगीत के इतिहास में इन तीन संगीतज्ञों ने तत्कालीन संगीत-क्षेत्र में पुरुष द्वारा बराबरी की थी। यह फिल्म कालक्रम की प्रस्तुति नहीं उन तीन महिला संगीतज्ञों के व्यक्तित्व की प्रभावपूर्ण अन्तर्यात्रा करती है।

NAUKA CHARITRAMU

Telugu-Tamil/English/69 min

Writer/Director: Saroj Satyanarayan; **Cinematographer:** Madhu Ambat; **Music Director:** L. Vaidyanathan.

The Telugu composer, Tyagaraja's opera "Nauka Charitramu" forms the outer frame for an insight into three women musicians of early 20th Century South India. It is a journey of a young traveller who encounters the disparate worlds of M.S. Subbulakshi, D.K. Pattammal and T. Brinda.

In the history of South Indian music, these three musicians made a dramatic entry into the male-dominated arena of public performance. But the film is not a chronological presentation. Rather, it is an impressionistic journey into the personalities of the three women musicians.

राबिया चैलिकुन्नू

मलयालम/31 मिनट

निर्देशक : अली अकबर।

राबिया पोलियो-ग्रस्त मुस्लिम युवती है, जो सामान्य शिक्षा भी नहीं पा सकी। जीवन के एक मोड़ पर वह समाज के पुनरुत्थान के सपने से प्रेरित होती है।

साक्षरता अभियानों से प्रेरित हो वह अपनी व्हील-चेयर की मजबूरी के बावजूद प्रयासरत रहती है। उसकी कोशिश रंग लाती है और वह अपाहिजों के पुनर्वास तथा उनके लिए व्यावसायिक केन्द्रों के निर्माण के लिए संगठन बनाने में सफल होती है।

इस कार्य के लिए उसे लिटरेसी केम्पेन एंड सोशल एक्टीविटीज के वर्ष 1993 के राष्ट्रीय युवा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

RABIA CHALIKKUNNU

Malayalam/31 min

Director: Ali Akbar.

Rabia was a polio-stricken young Muslim girl and a drop-out from formal education. At one point in her life, she is inspired by the dream of a resurgent society.

Motivated by the literacy campaign, she moves from group to group, though bound in a wheel-chair. Her success led her to organise groups for rehabilitation of the disabled and setting-up of vocational centres.

In recognition of her work, Rabia received the National Youth Award for literacy campaign and Social Activities in 1993.

शैम्स विज़न

अंग्रेजी/27 मिनट

निर्माता : मनु ग्रोवर; **निर्देशक** : शाजी एन. करुण; **पटकथा लेखक** : कविता नागपाल; **छायाकार** : हरि नायर; **संपादक** : ए. श्रीकर प्रसाद; **संगीत निर्देशक** : विशाल भारद्वाज।

शैम्स विज़न एक जीवनी-संबंधी फ़िल्म है जिसमें शैम्स के नाम से जाने गए रेशमी कढ़ाई के उस्ताद शेख शम्सुद्दीन की प्रतिभा का चित्रण है। शैम्स 1917 में पैदा हुए। 1989 में उन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनकी बनाई कशीदाकारी की उत्कृष्ट कृतियों का विश्व भर में प्रदर्शन हुआ। उनकी एक कलाकृति **मोजेज** नाम की है।

SHAMS VISION

English/27 min

Producer: Manu Grover; **Director:** Shaji N. Karun; **Screenpaly Writer:** Kavita Nagpal; **Cameraman:** Hari Nair; **Editor:** A. Sreekar Prasad; **Music Director:** Vishal Bhardhwaj.

Shams Vision is a biographical film depicting the talent of Sheikh Shams Uddin, the master of silk embroidery. Born in 1917, Shams, as he is known, was awarded the Padmashree in 1989. He has created masterpieces of shade and movement in embroidery, which have been exhibited around the world. One of his master-pieces is entitled Moses.

साइलेन्ट स्क्रीम्स : ए विलेज क्रॉनिकल

अंग्रेजी/60 मिनट

निर्देशक : ओ.के. ज्हानी।

केरल के ब्रह्मगिरि पर्वतीय क्षेत्र में पापनाशिनी नामक नदी के पास एक छोटा सा गांव तिरुनेल्ली है। यह गांव अनब्याही माताओं की कारुणिक दशा से विकृत हो चुका है।

इस गांव में रह रही आदिया जनजाति गुलामों की तरह काम करती है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी पूरा परिवार बंधुआ मजदूर रहता है। इसके अतिरिक्त, इन अमानवीय परंपराओं और जबर्दस्ती गर्भपात के कारण असामयिक मृत्यु एक सामान्य-सी बात है।

लेकिन इन अनब्याही माताओं की आत्मा आज भी जिन्दा है। उनकी खामोश चीखें पापनाशिनी नदी के इर्द-गिर्द आज भी मंडराती हैं।

SILENT SCREAMS: A VILLAGE CHRONICLE

English/60 min

Director: O.K. Johnny.

Thirunelly is a small village in Kerala, with the river 'Papanasini' (Destroyer of sins) flowing down from the Brahmagiri hill range. The village was tainted with the human tragedy of unwed mothers.

The village is inhabited by Adiya tribals who have worked as slaves. Generation after generation entire families become bonded labourers. Amidst this hoary tradition are tales of forced abortions leading to premature death.

But the souls of many unwed mothers are not yet dead. Their silent screams haunt the holy shores of the river Papanasini.

तत् त्वम् असि

हिन्दी/अंग्रेजी/रंगीन/22.30 मिनट

निर्देशक : संषित् मोहन्ती; **छायाकार :** गुरुराज आर.जे.; **ध्वनि :** निहार आर सामल; **संगीत:** वंदना कोहली; **कला निर्देशन :** डोरोथी गुप्ता, विक्रम वर्मा।

अर्पण, जो कॉलेज में दाखिला लेने शहर गया है, लापता है। बड़े भाई आर्य को इस संबंध में तार मिलता है। वह अर्पण को ढूंढने शहर जाता है। शहर में उसे अपने पढ़ाई के दिनों की याद आती है। अपने भाई को ढूंढते हुए साथ ही उसकी अपने स्वयं को ढूंढने की मानसिक खोज भी चलती है।

TAT TVAM ASI

Hindi-English/colour/22.30 min

Direction: Sambit Mohanty; **Camera:** Gururaj R.J.; **Sound:** Nihar R. Samal; **Editing-Music:** Vandana Kohli; **Art Direction:** Dorothy Gupta, Vikram Verma.

Arpan, who had gone for admission in a college, is missing. Elder brother Arya receives a telegram about it. He goes to the city in search of Arpan. The city brings back memories of his student days. His physical search runs parallel with Arya's own psychological search of the self.

द लॉस्ट हॉरिजन

केवल संगीत/3 मिनट 30 सैकेण्ड

निर्देशक : अरुण गोंगडे।

यह कार्टून फ़िल्म गांवों को राष्ट्रीय धरोहर के रूप में चित्रित करती है और इस बात पर जोर देती है कि पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने के लिए अपनी परंपराओं और वातावरण को बचाना होगा।

THE LOST HORIZON

Only Music/31.2 min

Director: Arun Gongade.

An animation film expreses the theme of villages as a national heritage. It stresses the need to allow their tradition and atmosphere to live for ecological balance.

विडियलै नौक्की

यह जन्मांध सत्यनारायण की कहानी है। वह संसार को तीन मिनिट देखने की संभावना में जीता है। इन कुछ क्षणों में उभरे उसके भाव हमें बतलाते हैं कि हमें क्यों इन लोगों को अपने जीवन में स्वीकार करना चाहिए।

VIDIYALAI NOKKI

This is the story of Suryanarayan, a man blind from birth. Faced with the possibility of seeing the world for three minutes. His emotions in those few minutes show us why we should accept the blind in our lives.

यह वो शहर तो नहीं

हिन्दी/18 मिनट

निर्देशक : वी. सुधाकर राव; **छायाकार** : प्रदीप के. सरकार; **ध्वनि आलेखक** : एस.एम. करामात अली; **संपादक** : जुनैद अहमद हलीम; **संगीत निर्देशक** : आनन्द मोदक; **कला निर्देशक** : आशुतोष कवीश्वर।

शहर में हिन्दू और मुस्लिम के बीच सांप्रदायिक दंगे हो रहे हैं। एक हिन्दू और एक मुस्लिम वृद्ध कुछ ढूंढ रहे हैं। एक दूसरे से अलग वे अपने खोए हुए बेटों की तलाश कर रहे हैं।
आखिरकार देर रात तक बेकार में ही खोजने के बाद वे घर की ओर जाने वाले पुल पर पहुंचते हैं। वहां बहुत खून बिखरा हुआ है। दोनों वहीं बैठकर चिंता में डूब जाते हैं।

YEH WOH SHAHAR TO NAHIN

Hindi/19 min

Director: V. Sudhakar Rao; **Cameraman:** Pradeep K. Sarkar; **Audiographer:** S.M. Keramat Ali; **Editor:** Junaid Ahmed Halim; **Music Director:** Anand Modak; **Art Director:** Ashutosh Kavishwar.

The city is in the grip of communal clashes between Hindus and Muslims. Two old men, one Hindu and one Muslim, are on a search. Independent of each other, they are looking for their lost sons.
After a night-futile search, they reach the bridge on the way home. There is a pool of blood. Both the old men sit down beside it, brooding.